

ਮੁਖਦੀ ਜੈਨ ਯੁਵਕ ਸੰਘ ਪਤਰਿਕਾ।

तंत्रीः जगनादास अमरव्युद गांधी,

१५८ इ. ट्रॉफी
मध्ये १० मी.

સંપત્ત રેન્ડિન ના ફરજાણુ સુવી ૩.
તાંત્ર ૩-૩-૩૦

ପ୍ରକାଶକ

जैत मुनियोतुं संभेदन.

યુવકેની જગ્યાતિ.

ଦେଲାକ ପାଖତଥି ଜୁଡ଼ା ଜୁଡ଼ା ର୍ଥକୋଣେଥି ବାଟେ କୁଞ୍ଜୁଗାତୀ
ହତି ହେ କେଇକ୍ଷ ମୁନିଙ୍ଗେ 'ଆଧୁ କେମେଳନ' ମାଟେ ନିଚ୍ଯାର ଯଥା-
ବ୍ୟା କରେ ଛେ, ପୁଣ୍ୟ କେଇକ୍ଷ କୁଣ୍ଡିତ 'ତେ ସଂଖ୍ୟୀ ଜାହେରମା ଆବତି
ନାହେଲି, ହାତମା 'ମୁଖ୍ୟ କୁମାରାର' ତା. ୨୨-୨-୩୦ ନା ଅକ୍ଷମ୍ଭା
ମୁନିରାଜଥି ନିଜାପିଲକୁଣ୍ଠେ ଅକିମ୍ବାପ ପ୍ରଗହ ଥେବେ ଛେ ତେ
ଉପରଥି ଦେଲାକ ନିଜାରେ କୁଣ୍ଠିତ ଯଥ ଛେ, ମୁଖ୍ୟ କୁମାରାରା
କେବମାଂ କାହୁବିବାମା ଆବେ ଛେ ତେ କେମେଳନ ଭରବାନୀ ଯେବନା
ଦେଲାକ କାହିଁଯାଇ ଉପାରୀ ଲିଧି ଛେ, ତେ ତେ ଆଧୁଙ୍କେ କେଇକ୍ଷ ?
ଏବେ କାହିଁଯାଇ ଦୀର୍ଘବାହୀ କରେ ଛେ ତେ କେ କେଇନା କହେନାଥି
କରେ ଛେ ତେ ପେତେ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର କରେ ଛେ ? ତେବେ କେ ଆଏ
କରନା ହେବ ତେ କରେଗେ ଆ ପାଖତନୀ ଦୀର୍ଘବାହୀ
କରନାନୀ ତେମେ ପରକାନୀ ଆପି ଛେ କେ ? କେ ତେବେ
କେଇ ମୁନିଶ କହେନାଥି ଆ ଦୀର୍ଘବାହୀ କରେ ଛେ ? ଆ ଅଧି
କ୍ଷିକିତ୍ ର୍ଥକୁ ଥବାନୀ କରୁଥିଲେ କେ କେମେଳନ ଭରବାନେ ହେବ ପରୁ
ନକ୍ଷି ଥବାନୀ କରୁଥିଲେ, ଶାଖୀ କୁମାରମା ଭଲକେଇ ଛେ ଏବେଳେ
କେମେଲନ ଭରବାଥି ତେ ହୁର ଥାବ ତେ ଖୁବ ଛେ. ଆଧୁ କୁମାରମା
ଅର୍ଦ୍ଦସପରକାନ ବାହନାରେ-ଆରାରା ସଂଖ୍ୟୀ ଯଚ୍ଚୀ କରନାନୀ ହୋଇ
ତେ ତେ କୁମାର କରନା ପେଣ ପାତ ଛେ ଖୁବ କେଣାଳ ଦିତ-
କୁଣ୍ଡିତ ସଂଖ୍ୟୀ ଯଚ୍ଚୀ କରନା ଅଭିର ହାତ କ୍ଷୟ ଉପାରୀ କରନା
ଭାରେ କେବନାନୀ କରୁଥିଲେ ତେ ନିଜାରେ କରନା କେବା ଥବାନୀ
କରୁଥିଲେ ତେ ତେ ଖଲେଥିଲେ ର୍ଥକୁ କରନାନୀ କରୁଥିଲେ, କାରାଜ
କେ ଯୋଜନ ମୁନିଙ୍ଗେ ନବେ ନିଜାରେ କରନାନୀ କରୁଥିଲେ ହୋଇ ତେବେ
ମାନନାଥିଲା ନାହିଁ. ଯାକାନିତି-କର୍ମହିତ ଶୈମା 'ରେହୁତ' ଛେ ତେ
ସଂଖ୍ୟୀ ତେମାନେ ଭାବେଶେନ କର୍ମହିତ ଲାଗୀ ହୋଇ ଦେବୁ
ମାନେ ଛେ ତେ ଅକ୍ଷେତ୍ର ପାରେ ମାନନା ପ୍ରୟାସ କରେ ଛେ, ଅଟେଇ ହେବୁ
ର୍ଥକୁ ଥବାନୀ କରୁଥିଲେ କେ ମୁନିଙ୍ଗେ କେମେଲନ ଭରବାନା କେ
ହେବୁଣ୍ଟା ନକ୍ଷି ଥାବ ତେବେ କରନା ଥାବ ହୋଇ ତେଲାକାନ ମୁନିଙ୍ଗେ
ଆମା ଆବ ଦେବେ ଲୋକେଇ, ଧଣୀ କେ କେଇ କରେ ତରଥି
ଅର୍ଥାତ୍ ତରିକେ ଅହେର ଥେବାକେନେ କେମେଲନମା ଆବ ଦେବେ କରେ
ଲୋକେ ଏବେଳେ କେ ନିହିନ ତେ ଯଥ ନାହିଁ କରନାନୀ କରୁଥିଲେ

આડાની મુનિરાજકી વિદ્યાવિજયલાલની સુચનાઓને આગે પથપાત્રી લઈએ છીએ. પ્રથમ આચારો જોકાર થાય તે સંભૂતધાની તેમની ખાલામાલનો અમૃત થાયાની ગાય ક્ષેત્ર હે.

ભાવનગરમાં કોન્કરન્સ સંખ્યી વિહેર ભાવણ.

આવનેરમાં શ્રી વિલલ્ય ખર્મ પ્રકાશક સભા તરફથી
તા. ૧૬-૨-૩૦ ના રોજ શ્રી જૈન ખર્મ પ્રકાશક સભાના
હોલમાં રાજના સાગરાંક વાજે ક્રીસ્ટુલ કલ્પશલાકામ મેધિકલ
દેશથી, એ. એ. એલ. એલ. એ. ના પ્રસ્તુતપણે હેઠળ શ્રી
પરમાનંદ કુંવરશ્રી કાશીવીરા. એ. એ. એલ. એલ. એ. એ.
‘લુનેર જેન ડો-ઇન્ડસ્ટ્રીસ’ એ વિષય ઉપર લાખથી છત્થે હતું.

क्षुन्तर डॉन्हैरेस संघर्षी खोजता थे, परमाणुकासे क्षणात्मक हस्त के वा डॉन्हैरेसने दीक्षिणे द्वारा प्रभुता अने महादेवने थे; ते संघर्षे जैन भूमान लीव यथा याती रहेकी थे अने जैवा-गौला विषय उपर डॉन्हैरेसी प्रेताने द्वारा प्रभुत द्वारा गोतानी कर्तव्यता स्थिष्ठ करी थे, ले के मुख द्वारा वधारे सकृद द्वारा तेप्रथा दिशेवीच्छा आशहने वस्तु अनेस समाधानी थीपर द्वारा प्रभुत द्वारा मालये थे, जैन ने द्वारा वृष्टि ले पालन था तो हीक्षणी अभ्यासी के क्षेत्राना गीर्वां वाला थे तेनो नारा थाए रहे।

ଲୋକ ଯାଏ ରେଣ୍ଡି ବ୍ୟକ୍ତାର ତୀରେ ଦେଖି ବ୍ୟକ୍ତାରଙ୍କ ଫଳକଟା
ଫଳ-କ୍ଷେତ୍ରମାଁ ପ୍ରସାର ହେଲା ହରାନ୍ତେ ଆଜିର ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ନଳି
ତେ ଶୁଭ୍ୟଧି, ଶୁଦ୍ଧି ଅନେ ସାହୁନାନା ହରାନ ଶୁଭ୍ୟଧି, ଅଧ୍ୟାତ୍ମିକ
ଅତେ ଆମକେବଳ ଉଚିତିତ୍ତା ଓ ଏ ନେ ବଦଳେ କାହାର ଅଭିମତିତ୍ତା କାମ
ଦେବନା ହରାନ ଶୁଭ୍ୟଧି, ଶୁଦ୍ଧିରେ ସମାପନ କାହାର ଶୁଭ୍ୟଧି,
କ୍ଷେତ୍ରନା ଵିଶେଷତା ଏ ନେ ବଦଳେ ଏ ପରୀନୀ ହର ରିକାର୍ଡ
ମାଠେ ରାଯା ଶୁଭ୍ୟଧି କିମେରେ ଥଣ୍ଡା ଅଗଳନା ମୁଦ୍ରାମେ ସମ୍ବନ୍ଧ
ବ୍ୟାପି ଥିଲା।

କେତେ ହୋଇଥିଲୁ ଆଏ ଚାଗିନ ଲାଖ ଶହୀ ଜନାବା
ମାଟେଣେ ବ୍ୟା ପୋଳେ ଆପଣେ ଶର କେ ଘରେ କେତେ ପ୍ରମାଣ୍ୟମାତ୍ର
ଆପଣେ ତେ କହନ କରିଥିଲୁ ତେବେ ପ୍ରମାଣ୍ୟମାତ୍ର ଡାକ୍ଟରଙ୍କ ଶହୀ
ଥିଲେ ତେବେ ଆପଣଙ୍କର କୁଳା କରି ଦିଲି

ਉਨ੍ਹਾਂ ਪ੍ਰਮੁਖਵਿਨਾ ਦੁਕਾਨਾਂ ਵਿਖੇ ਆਪਣੀ ਪਈ ਸਭਾ ਵਿਖੇਲੀ ਨੂੰ ਹੋਵੇ।

ਮੁਖਘਮਾਂ ਕਿਥੀ ਆਉਣੀ ਸਭਾ।

મુશ્વારમાં થી કેને હત્યા એસાધારણ (-થાન) ની ઓક્ટોબરાને અને અન્યાન્ય તાત્ત્વિક વિષયોની રાચને દ્વારા કલાકારી ને નિરાશાધારણ પ્રાપ્ત થાયા હત્યા એસાધારણ ("કેને હત્યા એસાધારણના ફરજને પરિષ્ઠેને ધ્યાનદાદ આપું જોકામ મળી હતી).

गुरुभास्तवम् मालन् दुर्वलता भाष्योऽपि अस्त्राण्युक्तं हृषीकेशं ज्ञानेर आत्मीयापाथी परिवहं भारे सप्तशतावधी चैतात्मां क्रमाकालं पूर्णं कर्म् उ. आ परिध्यपूर्व फेटलाङ्ग तोहानीकोनो उपसम्मी अवैक्षी पूर्ण ते दक्षायी-परिवहं वृद्धं महजं अनीकी की. पूर्वावधि नीतिएनो दक्षिण सम्बन्धामां अन्तर्यो एवं.

मुंबई जैन युवक संघ पत्रिका।

पश्चातो नमे वीरे न होयः कपिलादितु ।

मुहिमद् यथं यस्य तस्य कार्यः परिष्ठः ॥

अभिधृत लिखकर्त्ता,

जूनेर कॉन्फरन्स।

शासनप्रेमीजों कडे के युनेरेमा डॉन्स्ट्रेशनी इन्हर अनावी छे, एट्टेवे ते कहेगता शासनप्रेमीजों शृंगारी जगती “डॉन्स्ट्रेशने लेपा अच्छी न उधाडे तो समाज तेमना नालेही भुक्त थाप अने कार्पूं करवा धारणार शान्तिया कार्पूं करी लो, जे पश्चातीनी केवर थाप होय ते जे जल्द होय ते तेमे आदे खुदा खुद लेपो लालाती डॉमने चेतन-कानी शी जहर के १ परंतु शासनप्रेमीनु वज्रंत्र जाणे के के डॉन्स्ट्रेशन अच्छी जगती छे, तेना कार्पूंताज्जों चमाजनो लालात भेजवानो अपास जूनेरेमा कर्पूं, तेथी तेमां नापूं लेही अपेक्ष खुल्ले, तेथील आपा धूपचाला करवानी शासनप्रेमीजों जहर पडे छे; नहिं तो कर्मरी डॉठ आजे अवृ॑? कर्मरी डॉन्स्ट्रेशन चेतनवा भाडे लाला लेपो लालापा पडे १ साची लालाकृतते जोटी कहेवा—जोटी इरपां छेवी, ते तेमनो धर्म थाप अपेक्ष छे, ते लालाकृतते तेमा अपरपनीना रीपेट॒ डॉत्ता असल छे, लेना नक्काह दूर वधते अपेक्ष आपेक्ष छिक्की, तेथी खुल्ले खुल्लाच आपे छे.

“वारकासन” ता, २१-२-३० ना अंडमां पाने उद्दमां तेना अपरपनीना रीपेट॒ ना आपेक्ष लेपो के दीक्षाना सामाजने अंगे “निवासनी वाचेरे उडी माह अने आपेक्ष सपारे आपापांच व्याजे समजेकृत कमिटि उडी तांसुधी निर्याच बर्दू लालो नहिं!” चर्वे लालर २०६नास जाणे के दीक्षानो दिवाप शजेवा पास थेपा होय, जाता तेना अपरपनीना चमाज उप॒ जेहु ते चाप लेप॒ शेज नहिं, वणी लेपो के उल्लारे पेपरो लाल इरीने गेपे तेना लाला रीपेट॒ अपावाप॒; अंगा लालर पेपरो उप॒ आवो आमान्य आपेक्ष करीने जाणे के हुनीआमा पन, ले डॉठ साक्षु लेप तो ते गेड्डन “वार कासन” अंगे कहेवा भाडे के, पछु हुनीआ आपेक्ष नाथी के आपा वाप॑कर असपो शिकारे। आपाचो भाडे प्रमुखश्रीजो पेताना लालव्यामां कहुल्ले के “थिंडो” के लेजेने भाज पेताना लाल अपावानीकृत चिंता के तेवा लेपाचो, लालाना जेणपथ्यानो लाल लाल पुराला के नया निवासोनी राहानी अंडमां रवांनी रीकार लेलावो लेप छे, दैव चमाज अने दैव कहेने अरे अप॑ आ दिवानोज लेप, येतवातु तांच लेप; आरणु के आ वर्चे डॉठ पछु जातना सिद्धान्ते भाडे अपावावा भांगते होतो नाथी पछु पेताना रवांनी रिकार जेणपथ्यां सिद्धान्त भाजते लालोजा तरीड वापरतो लेप छे, “प्रमुखश्रीनी अग्रमचेती आपां पडी छे, शासन प्रेमीजोंनो शासन प्रेम के सिद्धान्त प्रेम डेवो छे, ते जूनेरेमा खुल्लो पडी गेपो छे.

जैन तरीड राझ॑—हितमां इरपा आपावा संभंधीना प्रमुखश्रीना विचारो दैव कहुल्ले करवा लालह छे, दीक्षाना संभाव उप॒ तेमतुं विचेन ले के जेहुओ तेट्टुं विचतास-

वाण॑ नाथी परंतु लेट्टुं कहेवालुं के तेट्टुं तो भुर्दे छे, तेनी डॉठ ना पावी शेड तेम नाथी, “अत्येक आमना संधी जे देवदत्त जहर खुल्ले होय तो हो भाषीधी यती दीनी जेवामा आपारखुने आप सामाजने देश डॉवा व्याजपीज नसुरी,” शालेना आपारेवाणी प्रमुख-श्रीनी आ शुचनामे पछु कहेगता शासन श्रीगोविन्दमा दैविकात करी देश तेना प्रवाप करी जमाजने उंधा पाठा अंधावाचा प्रयास इयो छे, डॉउपलु रीते लेनो इधपलु उपयोग नाथी अने लेना इस्तं भीज अग्रमना डॉमे इव वगरे प्राप्तमाव थर ज्ञाता होय तेवे वधते देवदत्तवांज फेसो, एट्टेवे इस्तानुं कहेवामा आवे, ते चमाज दूषे डॉठ रीते शक्तावी शेड तेम नाथी, ते सभापे दृव्यानी आतर लेनो अपामावात करे छे, शुभभरावी रीजाव छे, तेवे वधते आवा धामधुमवाणी श्रीपेमो इपयोग इस्तानुं शुचनारामो डॉमना हित-शरुमो छे, शालेना अमालु छे, शालेना खुल्ले चेकारे छे के सीहाता श्रीगोविन्द द्वावे व्यप डॉवो, अमुक देशामां जेवामा दृव्यानी आपेक्ष वांगम वापत श्रेष्ठ छे बाल देवो, तरहाथी जेताना हेतमां जेवामेवाज्ज्ञ प्रवेशा न पामे ते भाडे सापेक्षीमो, लेवाप छे परंतु जैन शालाकारीमे पहेदेही अग्रमचेती लापरी कहेलु छे के दैवकृत लेहेने पुष्ट लेपो, गुडकृतीधी एक लेहू वधारे पुष्ट थर जाण॑ होय तो तेलेवो समल अन्य दृपतां लेहेने फेसो, अमाज कवे आ साही वात सारी रीते समने अने अमल डॉ तेला भाडे प्रमुखश्रीनी, ते शुचना करी ते अरोनर समयेवाताव छे अने ते भाडे ज्ञातोवाली दिभत भाडे तेमा धूप-पादाने पात्र छे.

हो इरो तपसी जेहुओ इरोनो विचार करवा प्रमुख एट्ट भुवो आप आपामा शापवे आपावाप छे, इरोनो तेना दीर्घी करवा अधवा तेनु पिष्ट पेपरु इरुलु, तेनाची डॉठ आप साक लाल थवा संभव नाथी, (१) इक्क आजली जेहुओ ते इराव आपा लेप, तेना रसृपभां सजेनोने आपावरे हैन्दार करवे उचित शाजतो लेप तो? (२) अमल करवाना के भार्म सुचवामा आप्या होय, ते मुख्य अमल करवामा सुचवाना न भाजती लेप तो, अमल करवाना आ-प उपयोगो विचार करवाना इरुल दैव तो; (३) जेहुओ सजेनोने भाजते लेप, तेवा हातवने दीर्घी संभलि हातवानी अरु उर्मी धर्द लेप तोज आजला इराव सजेकृत कमिटिमां अडवा लेहेहो आ हैंडीकृत अपामां न रापवाधी लेहो, समय नक्को लाप छे, जूनेरे डॉन्स्ट्रेशनां तेमन शुचेलावी आपमिक समार्थ पापु आ हैंडीकृतो अपाव सापव मां आपो नहो तो जेहुओ तापा इरोनो अग्रम नेहेत अपाव भाजती लालो, नहोतो, बालु एक जेहेसमाजतुनी जूनेरेती कमिटिमां शती करी, इरोनो प्रमुखश्रीनी पवी हैंडी लापवातुं कार्पूं दिव लुकानार डॉ, एट्टेवे अवेलु प्रमुखो आरे के पांचानी संभ्या लेट्टा जूनेरेमा होयानो आप संधो लेहो, ते हैंडीकृत डॉन्स्ट्रेशनो शोकावाप हुनी नहिं, आरे आप संवाहकारी लेपा जाता पापु लेहु शेक्षण प्रवाप एवो पछु होतो के ते वधतेनु प्रमुख श्रीनी अग्रम लापवामा दैवकृत अपावा कर्पूं होता, शालो उपयोग विचतार अवां होवे पधी.

શ્રી જૈન શ્વેતાંખર કોન્કનરસ
તેરમું અધિવેશન, ગુન્નેર.

(અમારા ખાંસ પ્રતિનિધિ તરફથી.)
(ગતાંક & શ્રી ચાલુ.)

ता. ८-२-३० ना रोज सल्लोकेत्यस कमिटिना ऐक्य
पर्याप्ती भोजी शब्द बहु लक्षी होइट रेलोल्सुन अध्यग प्रया व्य
पर्याप्ती भीजल हराये लेका प्रभुभाषीमे निर्जन आप्ये द्वये
हराये पर रक्षाक्षी लारी धती लक्षी, जांता हुयम्भु देणातो न
होतो, राज्यात्मकीकु लुक्ष वर्मना विचारेणामा अमुभित्यम्
हाता, जांता ३/४ मत न जाणे एटेने सुवाये २८ जातो होतो,
आवी शिक्षेतो जांता प्रथ, लुक्ष वर्षे तेत्योज अम्भज अने
आशावादी हेखाये होतो डेट्लीमेह वार छुला छुला भाष्यामो
तरक्षी प्रभुष तरीडे निरुद्यो अपहाता हुता, त्रोप्त त्रोप्त, पर
परस्पर विरोधी निरुद्यो निवाया, जांता ते प्रभुभाषी तरक्षना
होताथी, हुक्म भाषी अदायी लेवानी तालीम हेजाह आदती
होती; एट्सु जांता अडेखान्नो तरक्षी अतां अपमान भाटे
अपैरस्त्रपृष्ठक योग्य रैय वतावयानी द्विमत प्रवृ तरी
अपावती होती, लुक्ष वर्षे नी होइ रीतीनी तालीम, उद्दर रुचि,
पोताना विचारे भीजपर द्वाक्षी असाक्षयानी रुतिनो अभ्याप,
रायेना निरुद्यो घरत्वे अमेश अने अक्षय आशावाद,
एवर लाजतो डैन्सरस्सा प्रभुभाषी—जेगनी आजेवानी द्वाक्षरी
कै-ठेमोखीना। भातने नम्हु अपावतु लुद्यग्या लोई प्रभु,
अन्यी लाष्यावार, अथ गुणेनी तारीडे कैरी जाता हुता;

તા. ૬-૨-૩૦ ના રોજ પુરુષી બેઠકમાં સમગ્રેકૃત કમિટીના ફરાયે પ્રમુખસ્થાનેથી અધ્યવા તો સુંદર વિશેષજ્ઞાનની આપે; સર્વતુંમતે પસાર થયા હતા. તેમાં પણ ખાસ ખ્યાળે થયા એવ્યક્તિ ભાગન, જીની વર્જિના પણ લગ્નાની આપાની વિશેષજ્ઞાનની તૈયારી કરીને કંઈકા કેવી કંન્યા ડેલાલ્ફીમાં પછાત ઝેમાંથી પણ ખી વાં વર્ગી તરફથી હારાવતા અનુભોહનમાં સુંદર વિશેષજ્ઞ થયા હતાં તે આખરોમાં પણ રાતિ, શભાજ અને હેઠાના ઉદારનથીમાં આનન્દભોગ અધ્યવાની તરપત્રા દેખાયે. આપણી હતી, કે સમગ્રેના ઉદ્ઘાસની અન્યુન નિરાનિનીઓ હો.

ખાસ કરીને કશવાળાનાં ઈ ગુર્હિ અને સંગ્રહન પણ
શી. કુંડલમથ દ્વિપોતીઓનું ભાવષ્ય વધારે આફોર્ક લાગુ, એટા
કુંડે ચાર નીચે સુખાખ લગે, ૨૫૦૦ વર્ષ પહેલાં જેણે હોમન
સિદ્ધિતિ લખારીએ, તે વખતે જેણે શાલાંએ હતા, જેણે હીથાન
અને જેણોણી સુખાખ પણ કરીડામાં ગમણાતી હતી. અત્યારે
કૃતાં બારે લાખ જેણો છે, તે પણ સુખાખત્વે જેપારી વર્ગ
તેમાં પણ સુખાખ જાળ દ્વિકારમાં વહે અચ્છ અથ છીએ. આપણે
હોઈની પાર્શ્વિક માન્યતા તોડતા ભાગતા નથી. પીતાની માન્યતા
સુખાખ વર્ગ પાળવાની સ્વતંત્રતા આપણા મારગ્રામે છીએ,
પરંતુ બીજી દેરેક વ્યાખ્યામાં અને ખાસ કરીને બદારાના
આફોર્ક પ્રસ્તુતે જોકાતા આપણક છે. જીવાં સમાજની
નિદ્રાવસા સિદ્ધિતિની જોકાતા ઘેરેપણે છાપુતા નથી, પરંતુ
અન્યત સમાજની જોકાતા ગમણી છીએ. નિદ્રાવસા ઘેરેપણે
સાથીની છે, કેમ હોઈ ઉપરોક્ત ભાષ્યસ નિદ્રાવસામાં પાપક મારી
લે છે, પરંતુ આસ્થાદ પુરાણ લાભુત અનરથા બંધે છે અને

तेन भावे कठीने थीं, ते मुख्य धीरा लगूत न होय
अने वाही जला ते भावे कठीने थीं, कारण के तेको पूरा
लगूत बहा नथी, संभवत ऐज समय धम् छे, ते पर
विवेचन करता जैनोमां जातिमें नथी, थी उपासक द्वारा
जूतमां अध्यक्षत महावीरना इस अप्पामां ऐक महावीरकनी
गुह्यतानी मंसाकार करती हुती, उतां तेको पैतानी शुद्ध-
पतनी उत्तरवा न कला, ऐटी हह चृधीनी सुदिष्टता
अने उधारता हुती, अध्यक्षत महावीरने भूतनारा
साधिं आधिकानी साथे जमदा ऐसवामां गो, कष्य छे,
ते अमर्त्य रक्षात् नथी, था शुद्धत तीव्री लगत वधते
जषे दिक्षामें आध आप्तो कला, विजेते अंगूहन लक्ष्य छे
ते मधे द्वाष्पालाये रेखु कर्त्ता कला, जे ऐम वृक्षि माटे
नेताये ऐकन भाला विचार करे तो अविचास उड़ी अप
अने शूतपूर्ण लक्षणशाली जलवीथी जापडे जेवा लगत
आपी आप्तो छे के बछु दिक्षानी राजिने टेप्पा औन्हेक
जराय अने महावीरना अंग गोपी गोपी देवी देवी

ता. ६-२-३० ना रोज सम्मेलन कियिएगी ऐसे
लघुत्तम दाइरेसर शह अधि अध्यक्ष सम्प्रयोगे २४ अप्रैल
जपा आगे होता के वार्षिक चारों सालों की अधिकारी अध्यक्षाना
दाइरे अधि अपा होता अध्यक्षगे अडूँ अधिकारी अध्यक्ष
अधिक्ष एटो ते प्रभाष्यमा योग्य सम्प्रयमां प्रशासन अधि करको।
विषयादारपूर्व विषयो लाल धरवामां आगे ते पहेला, सालाहां
ग्रन्थ प्राप्तावस्था उपर आगे ते डोप्प धारणा न हो, परंतु
अध्यक्षार्थी 'हानिकारक ग्रन्थो'पर अधि रासाकरी जगी, आस
करीने क्लबकानी डेन्हर-सम्भां प्रशासन अधिक दर्शन-।' जोमां
करी व्यवहार लां ऐरी व्यवहार होगो लेधारे" तेप्रय
अधि अध्यक्ष अध्यक्षी आगे, भत्तारी अध्यक्षी अधि, सम्भाति ए
विषयात्मा वहेजाय तेवा अध्यक्षी अधि, लक्ष्यमतिवाला अधि-
ग्रन्थों आस करीने पौत्रानी विषय मतवालाना नामो
प्रोफेशनली-टेमानी अडी लेवानी भागण्यी हरी, अध्यक्षाति
माटे तेप्रय हो, जां विषयादार अध्यक्षी अधिक ३/४
पर्याप्त अध्यक्षाति, उपराना द्वारानी तरीक्ष्यामां नीठी, अधि-
अधि श्वीक अधिके ते पहेला लक्ष्यमतिवा अधिवालोमां
प्रोफेशनल वधी ग्रन्थ, अधि अध्यक्षाति उपर्याप्त इवाले गजना-
ही के आ दरवर प्रशासन हरी तमो अग्ने अध्यारी नामाधी
अधि प्राप्तवा भागो। छो १ तमारे अध्यारो लालो क्लबवालो
१ तेजेश्वर तथा अधि, देवेश धमण्य (जेन) प्रशासन अधिकारी
प्रोफेशनल विजेश्वर उपरोक्त देवेश प्रशासन आगे त्यासुधी
मा छोडी लाल अधिकी अध्यक्षी-अध्यक्ष राख्यो, आगी दीरे
ते सम्भ डेक जेक व्याप्ते लक्ष्यमति ५/४ उपर्याप्त अध्यक्षाति
नने आगी शीते शुभेणानी नामो, जेनी अधिवालोक्त अधारी
प्राप्त दूर राता सिराय लक्ष्यमति नामी, डोप्प अधि विषयाग
जोडी अध्यक्षी अध्यक्षी-जेक आडिटन-अप्रोग अध्यक्ष तेवा
प्राप्तवालो-अग्ने तेवा दर्शी क्लब अधिका लाल ते क्लापि
वाली लेवाय तेम नामी; जां अधिकारी अध्यक्षाति लक्ष्यमतिने
प्रेष्य आपार, उपरोक्त देवेश छोडी होए लक्ष्यमतिवालोने
तरक्षीय विनांति डरी अग्ने अधिकारी अधिकारी भान आपार
लक्ष्यमतिक्षु प्रशासन क्लब अधिका, तेवाना दीते लक्ष्यमति अधि
प्रशासन दुखाये लक्ष्यमति के '४२ वर्ष' प्रका अधि लाल तेवा
प्रेष्य विद्युते उंचारी क्लब आगे लाल क्लबु नहि।' लाल
अधि अध्यक्षाति लेवेन्ह देश के लक्ष्यमति अधिकारीपूर्वक

આ અમારું વત્તના તેવાર હે ? વિગેરે એલાતો ગરવ આઈ યાથ ;
પરંતુ તેમની વ્યાલાયથી વગે ખુલક વન્દે તરફથી થા. અમારો દ
ખેમયાડે તે ચેવિના ડાપાડી લીધા અને મેળે મેળે મટ્યુરારે આપેલ.
લારજાહ મનોની ગણની પલુ થઢ કુટી, પરંતુ વે પડતી ખૂલામાં
ઝાલી અને સુખારો રણ થયો. કંઈક જેસસમાલમાં ભત લેવાયા
અને ૫૦ વર્ષ પછી વિસુરે દૂરીથી લગ્ન ન કરેલાનો હેઠલ
વિભૂતે પસર થાયો. નહેર થયો. આ હરાલેને ખુરક વર્ણનો
બાલદાર ટોન હતો, તે તો રૂપક હેમાછ આચરૂ હતુ.

卷之二

લારેના દીક્ષાનો ક્ષાળ થી. મહાસુપ્તુખાએ રણ્ણ હેઠે, પાસું કરીને બીજી ક્ષાળ કર્યો. પર અનુ વિવેચન થતો ન હતો. આ વખતે તો સંગ્રહીત દ્વારાંપૂર્વક ક્ષાળ રણ્ણ થતો, અનુ-ગોદાન અધ્યાત્મુ. ક્ષાળની વિદ્યામાં ઓક્ટે નાની વધન ભાઈ કંશકાળ ઓક્ટે છ્લાક સુધી ખેલાય. ગેરકસમજાથું ઉછી થાક તેવી જાતનું કાલાયું અધ્યાત્મ તેવી અધ્યાત્મિક ત્યારી હેઠાં તેમ તરી અધ્યાત્મ હતું; જ્ઞાત વિરાધ્ય પદ્ધતી દીક્ષાને સાનિતિ સંભગવામાં આવી અને અત્યુત્તરમાં કંઈ દ્વારીના સંગ્રહીત રહીયા પણ જ્ઞાપનામાં આવ્યા હતા. આ વખતે પણ અસુઃ કાઢ્યો. રીસાઈ નથી. ક્રીરાની તરહેખુંના કંશકાળ ૬૦ ટકા ઉપરાંતની ખડુભતિ હુતી જ્ઞાત લગભગ એ ક્ષાળની મહેનત પછી, સમનવિષ થઈ. ક્રીરાન નરમ-ક્રીરામાં આવ્યો. પ્રમુખભાની અંગ્રે વિનિતિથી વધના નિપાતનના સુધી પર દ્વારાય ન હરયા આગેનાનો પ્રણ હુદું અને આ રીતને દીક્ષાનો ક્ષાળ સર્વાનુમને પસાર કર્યો. જાગરૂક ક્રીરામાં આવ્યો.

સુધ્રાંકાર કથિતિના સખાસહેદાંના જીત વાગ્યાથી
સખારના પોત્થા છ વાગ્યા લાંબાથી ભોગવાના અવિજ્ઞાન હિન્ગા
જરાઓ બેઠી, મેટેલા હતા; તેમાં પણ કેચ/કેચ બજુભતિ જોગ
નિષ્ઠાં બનદી કરે, તેને અભુક્ત રિચિત્રજીર્ણ વર્ગ અનોઝ
શીતે આઠકાંને તેની રિચિત્ર જોતાં, ખુલુક વર્ગ તરેફીની એજા
દૂરાને પાણ જોયી દેવામાં આવ્યા, જાતી દીલ ઉદ્ઘાર હતું
કડુગાય ગીલાંકલ ન હતી. ખુલુક વર્ગ બારેવાર કસોડી માથી
પદ્ધતાર થયે હતો અને તાલીમ જાતીની અધીપી હતી, તેટા
માટે મુગુખાંને ઝૂટીની અંતઃક્રેચ્યુપન્ડ ઉપકાર માયો હતો
અને એનુંની વીજી પદ્ધતિ નાનાની અંગત ચિંતાં.

भुवरेश्वर अकड़मा लो। वारा तरहवाच संस्कृत उपरका
ता, १०-२-३० ना रेखनी पुस्तकी ऐड वर्षते भय
इस अपेक्षा, आगे तो संभाग अन्यतो उल्लिखना पायाएप,
जो वर्ष तरहवाच सुन्दर विशेष प्रभावी नीकड़यो। हाव नं.
१७ मां “५० वर्ष पुरां चाचो हेप चेवा डोई चपु चुहरवे
बग्न कड़ु नहि” ते हावपर श्रीभट्टी गुरुभास्मानें महेन्द्र
भहेताज्जे, कठाकामां सुन्दर छाप पटे तेवा विशेष रचना करेता
ज्ञानपुरुष के छु चपु वर्ष योर्हा लागां होप तो ५० ने
भद्री ६० के ८० वर्षनी हाव पुराप वर्ष करे आगे तेथी चपु
संतोष न आय तो भरतो भरतो चपु परहवी ले, आगे अंगना
नेवे अजन्मनीथी चपु परखुपवा जाहर चक्को, आवा
उपकारै झी काँ भास्ती नथी, अभायो तेने २३। नथी,
झुली घेने चपु संभत विशेष इस्याज्जे, लग्न ग्राटे वपनो,
घोडेमां वधारे डेलो। तशनत होयो नोहुओ ते संभंडी
हीडा करी हाती, शुरु लक्ष्मीन्देन्ता चरणेष्ठ संभंडी संभाप
आटधी आदी हाती, (“युवक आ हावपामां प्रथमधीन
विशेष लक्ष्मी” ना योकरो) आह राज्याभास्मी, आ हावपर
ऐस्वर्याना जाहे विशेष विवाहा प्रमाण संभंडी विवाहानात
विवेकन कर्तु लाती.

लारभान थी. महाशुभ्रात्मके दूरीयी विवेकन करतां
जग्याप्तुं के समर्पितस इमिटिअं मुखोना उत्साहने दायी
हेवामां आवेदो होते, ते दूरीयी लाहोन ऐक्षमां हेवाध आवे-
दे, अने ५० ने जड्हे ४५ वर्ष राखवा सुखावो भुक्तो होते,
की वर्ष तरज्यो चधु साधावानी स्तीकारवामो आवा अने
इत्युप चारद थेदो होते.

લાર પછી ડેન્કર-સના બાધારથના હિસ્પર આવતું
૩/૪ બજુપરિની જાતે તે દ્વારા હોન્-હેન્-સામણે રજુ થઈ રહે ગેને
ખાલે ચાંદાંગું બજુમતિ ગ્રામના સુધ્યારપર એટેકન કુઝ મના
એ માટેનીયોજે વિચાર કિનનતા માટે સામચામા ઉલા કથા,
અંથાં જને ગુરુદરો સ્ટ્રેમ સંદર વિશેબનો કઢતા હાતા શી.
મેટીચિંડ જીરખલાલે જલ્લાંગું કે આ દ્વારા, પુષ્પત વિચાર
કર્યો પછી કથો છે. હોઈ પછું જાતના નિર્ભયપર
આવતું પેલાં બૃ/૪ બજુમતિ બજુ જરૂરી છે. શી.
પરમાનહે ચેતાનો સુધ્યારો રજુ કરતો જલ્લાંગું કે
આ બાળને અતિ અગ્રણી ન હોત તે હોલ્યા અસ્થાનનિ
કિયના થાક તેવું વાતાવરણું ઉત્પન્ત થયતું બેઘેમ હું
ફોરી કેત નાંદ, માટેસા-કાડી સંસ્કરણ કે ડેન્કર-સના-
રખેન કાગી જરો-તેવાં પૂર્ણથી હું એનું લોખોણે
કાગીની રીતને અર્થ તે કથું થાપ કે બજુ મહાના હેરોરાની કથાને પછી
નજી થઈ રહે, અને પ્રાતિનિધિ. દ્વારા બંધ થાપ, કાર્પાય હેરોરાને
નાની બજુમતિ અટકાવત કરે તે બીજુકું પ્રયત્ના થોડું નથી,
તે માટે બૃ/૪ નેરથી આપખુણી જરૂર નથી. આ દ્વારને
લીધેન કે કાર્ય નીપણતું લોક્ષણો તે નીપણતું નથી અને
વિશ્વાસિયુદ્ધના નજીરે પડે છે, અને તેણે કેને અન્યત્રું હાથ કર્યાં
નથી. સમાજના મનોરથને પહોંચ્યે વળાં આ સુધ્યારો
સ્વીકારણ વિનાતિ કર્યું હું. શીલ બાધારોએ આ સુધ્યારાને
અનુભોદન આપેનું હું. શી. ચીમનદાલ ચંદ્રિકે વિશ્વ
અનુભોદન આપતો જલ્લાંગું કે અમાલામા પરિવર્તન નેઓતું
હોય. ડેન્કર-સના પોછેઠનાણી બુનુબાણી સંસ્કરણ રહેતી હોય
ન હોય, તો આ સુધ્યારો પસર કરતો નોખને. સુધ્યારક જોયો
સહભાલમાં બજુમતિસંક્રાન્ત હોય છે. જાતો પણીસ દક્ષાની
બજુમતિ, આપા બંધુરાણું હીપી પોરટોલ આપણ વરી, ઉં
ટકાની બજુમતિ હત્યા સુધ્યારો થયે અટકાયે, તે ડેન્કર-સના માટે
ફરમાવું નથી. સુધ્યારો આત્મ ડેન્કર-સના દૂરી જાય તે અધિ
કાડી. નાંખો નોખને, અખેને પછું ડેન્કર-સના માટે અધિય
માન છે. અમારી માગાણી ફક્ત બાધારણુંપર્યા કરો રહ્યો
છો. જાતની છે.

આ સુધ્રારો જાહેર બેદામાં ઘણી મોટી બહુમતિથી
અને-અને હતો.

પદ્માર થયો હતો+ હિન્દુ સંખ્યી હરાવ ખુલ્લી બેઠકમાં પણ ચર્ચાદુમટે
પદ્માર થયો હતો.

અને એની હરાયો પણ ઓંધુ વિવિધાની આદ પણ કા
કાં હતી.

କାହାର ପ୍ରମୁଖତାକୁ ଉପରେ ଦାର କରେ କରିବା, କବଳ କେବଳକାରୀ
ଶକ୍ତି ଅନେ ଦୀର୍ଘ ବିଲାଗରୀ ବେଳା, ତମେବେଳ ଜାହେମତେ ଉଛିବା ହାତି
ତେମନୀ ମେତାରୀ କରେ ଯୁଦ୍ଧକାରୀ ଆବା ହାତି ଅନେ ଯାତ୍ରାର
ମାନବମାତ୍ର ଆବଶ୍ୟକ ହେଲା, ପ୍ରମୁଖତାରୀ ଯାତ୍ରାଯି ଶ୍ରୀ
ନାଥଙ୍କ ଦୁର୍ଗାରୀ ଆବଶ୍ୟକ ଉପର ଆବା ଅନେ କୁକୁଳ ପର୍ବତୀ ତାରିକ
ଦୂର୍ଗା ଯେଉଁ ମେତାକା ଅନେ ତାଲିମ ସଂଖ୍ୟା ଲାହୁର କରୁଥିଲା
ଯତ୍ଥୁ ଦୂର୍ଗା ତେ ମାତ୍ର ଦୀର୍ଘବୀରୀ ଦୀର୍ଘବୀରୀ ଅନେ ଉଦ୍‌ଦେଶ ଆବା, ପର-
ମତ କାହାର କାହାର କିମ୍ବରେ ଯୁଦ୍ଧକାରୀ ଯେଉଁ ପ୍ରଥାଂଶୁ ଦୂର୍ଗା, ତେବେଳା
କାହାର ଆବଶ୍ୟକ ହେଲା.

କୁଟେ ରାତ ଶାହେବ ମେଡ ରଖିଥାଏ ସେବପାଣେ ଯାଦା
ଆଗାମ ଧ୍ୟାନ କରିବାରେ ନିର୍ଦ୍ଦାତୀୟ ନେତୃତ୍ବ ସ୍ଥିତାରେ,
ଧିରନ, ଉତ୍ସାହପ୍ରୟୁକ୍ତ କରେ କୋଠିନିମା ଚମରେ ପକୁ ଶାନ୍ତି
ଲାଗି, କାହିଁ ପକୁନେ ଶୋଇ ଚକାଇ ଆପି, ଆ କିମ୍ବା ଫ୍ରେସ୍
କିମ୍ବା ପାର କିମ୍ବା ଛେ, ପେତେ ପ୍ରସମ୍ଭାବ ବଳେ ଆପା ମୁହଁ
ପୋତାର ନିଯାରେ ଧିନ ପର ହୋଇ ଘେରାପାନ୍ତୁ ବଳକୁ ଚାର
ବାରାହୁ ନଥି, ଅମାବାସ୍ୟ ଘରେ ଯତେହୁ ନାମ, ଆ ରୀତେ ଯେବୁ
କ୍ରୂପାନେ ସେବପିତ୍ର ହେଉଥି, କୋ-ଇନ୍‌ସଟ୍ କାମ୍ କାହିଁ ରୀତେ ପୁଣ୍ୟ
କିମ୍ବା ନିର୍ମିତ ଛେ.

श्री कैन श्वेतांबर कानूनस.

(१३. मुख्य अधिकारीन.)

—(०)—

प्रसार करेता करवेता।

[गतों ८ थी बाल]

११ शुद्ध अने संग्रहन।

समस्त कैन कैमनी उन्हीने माटे कैन कैमना तथा हिरकालोंमा श्रेष्ठ शुद्ध करी संभवता करी जारी छ., एवं हेतुथी नहीं हिरकाला आगेगानी समाज आदि तो तेमा सहयोग आपवा आ डॉन्सन्स तैयार हो. कैनोना जुदा जुदा हिरकाला मामिंक जुटी जुटी मानवामां जणाकोरे कृष्णजी न कर्त्ता घटे, जो आ डॉन्सन्सनी महामध्य छ अने स्वेच्छापूर्वक कैन पर्व नीकासनारोने कैन तरीक अद्यु करवा तेमार रवाभीवच्छ नवकारसी क्वेवा जमध्यमा तेमने आग लेवानी झुट आपवा आ डॉन्सन्स महामध्य करे छ., जावे आ डॉन्सन्सनो आ अक्षिप्राप छे डृम्याकी कैन धर्म पाणी तातिथीने पालीतालानी ओ आप्लांद्य कृत्यालालानी पेही तरही तथा जीने स्थगेवे यती नवकारसीमा आकात राखनामा आवे छ ते मेवा नथी, तो तेवा शीते तेन आकात हो एकी न राखा, शेष आप्लांद्य कृत्यालालानी पेही तथा सर्व रवाना संयोगे आअक्षिपूर्वक आर इहाने आगमध्य करे छ., १२ कैन गङ्गुनी।

कैन कैम मो हिंदु कैमनो एक आगवनो आग होवाथी, तेमार हैतानी अवग्रहण आपारी कैम होवाथी आरकारी अने भुनियिक आगेवो तरेथी के अक्षिप्राप वर्षतो वजात आहार पाकामां आवे छ तेमा नायेनी पद्धति अप्लांद्य, पटतो देवाक अमध्यमा भुज्वे जुटी छ., एवेह ६८ अक्षिप्राप आ डॉन्सन्स धरावे छे अने तेला माटे सुख्ये छे डृ,

(१) वस्ती गङ्गुनी वर्षते तैयार करवामा आपवा वस्ती पत्रमाना जैनोनो वस्तीनी संभवाना अंक्षा जुदा पाका,

(२) भुनियिपालिनी रक्षारोमां कैनोना जन्म अने भर्य, वेतेनी संभ्या अने प्रभाष्टु वगता आंक्षा जुदा दराविवा,

(३) आरकारी कैमरक्षालानी तरही कैमरपुरी वगता आंक्षामां, कैमरक्षी वेता कैन विद्वां थीमी अने कंप्यानो आंक्षानी नेप्ख जुटी राखनी,

(४) कुर्मपुरी वगता गतदारेना लीक्टमां कैन भत्ताशेना नामो, हिंदु भत्ताशे 'आवेह एक विकासामा धार्य दरवा.

१३ आधिक परिस्थितिनी तपास:-

कैन कैममा ऐकारी वयानी लय छ., धूळा गैकार अने व्यापार उघोगमां आपाथी डेग्नु रवान कमती थाउँ लय छ., समाजमां अनेक अपुग्यो अने कैमने नियमित अने अलहार्य इशा कोगवा रवा छ., वर्षेर आमलोमां अने अमध्य दीते आपणे समाजनी आधिक परिस्थितिनी तपास कैनाली जरूरीकात जुझे छ अने ते माटे एक तपास कैगीशननी

निमधुक कैना माटे येअ अभिध करवा तथा कैगीशनो रिपोर्ट तेवार आगाथी समाजनी लघु माटे प्रसिद्ध कैना अने ते आगे अहता उपाय येक्वना आ डॉन्सन्सनी आप्लांद्य धन्तीया रेन्नीग डिगिने सत्ता आपवामां आवे छ.

१४ शारिरीक विकास।

आगमा अन्य कैमे तरही कैनोना धमिंक उत्सव प्रसारे रथ आगेवो अने धमिंक रथाने उपर अनेक जुम्लाओ आप छे, ते जेता, तेमार कैनोना मरकु ग्रामालु असाधेरु वाहु नय छे अने शारिरीक नमालाप वयाली लय छे ते जेता, शारिरीक डेलवल्ली गेगवाना सावनो एट्टेवे आगामतागामो अने अभाक्षामो, शारिरीक विधति सुखरे ते माटे सुखाकारी रथगेवे आगेप शुद्ध अने रथवे रथगे द्वापानाली अने मेटा राहेरामा असता आगामी गवावेमो उली करवाना जरूरीकात आ डॉन्सन्स स्वीकारे छ.

१५ अनारक्ष विवेदिवालय अने कैन विवर.

अनारक्ष हिंदु कुनियसिनीमां कैन येअर रथापवा माटे कैवरानी एक धर्म वयेव इताव तथा रेन्नीग अभिधो निमेली पेटा अभिधिना रिपोर्ट अने लहारु भुनियसिनीपी आवे थेव वर्तव्यदार, विग्रे धानमां वर्ष आ डॉन्सन्स धर्वे छ डृ नियमित येवेवे शरतो अभाजु शरतो अभाजु लहारु भुनियसिनीमां कैन येअर रथापवा भाटे गेवन्व दरवा अने एक्षित येवेलु कृमांगी हा ४०००० लहारु भुनियसिनीना सतावागामोने संपाद.

१६ सुहृद भागद दृढ़।

आ डॉन्सन्स एवेह दृ अभिध परावे छे डृ शुहृद भागद दृ उपर समाजनी हैरे जातनी डैवल्ली अने अन्य आगेवो आपवा तेथी दृढ़ कैन वर्षु अने बहेनो आअक्षिपूर्वक आगमध्य दृढ़ छे डृ एक आगमां ज्ञाज वाहिंक येअर आगेवो द्वाजे प्रतिवर्ष संस्थानी आशीर्वामी गेवली आपवो.

अलारे सुधी के ने आग अने सहेरना श्री-संघिये पेतानो श्वेता आपेहे छे तेमने धन्वाद आपेहे छे अने समाजने प्रतिवर्ष पेतानो श्वेता आपामा आगद हो छे.

१७ प्रत्यार कार्यी।

डॉन्सन्सना कैनेवो अमध्यमां भुज्वा तथा तेनु स्वर्व लातु अप्यार डार्चे कैना माटे आ डॉन्सन्स नीयेना सम्पेनो संभ्या वयावानी कैता आवे एक अभारक्षां समिति नियमित छे; आ समिति रेतीउन्न अनारक्ष सेक्टरियोमानी सलाही द्वाजे कैन, अने एक येतानो कार्यनी मुरुदेली अने तेना उपायो रिपोर्ट दर वर्षे दरवे.

आप्ल आतिप्रसाद्य कैन, गुरजानवाला (पंचेम), शेष प्रैट्काला रामवर्द शाळ, पूना (महाराष्ट्र) आवेह, शेष वीरावाह कुमेश्वर, (इ. महाराष्ट्र), शेष अंदनमस नाशीरी, शेषी लाली (मालवा-भेवा), शेष भूग्रां आशाराम वैशारी, अमरावत (गुजरात), शेष नवसुक्षमरिंद्र नवसप्त, अलीम-गज (अंगाण), शेष भृशीवाल डेक्षारी, अभावाह, (कर्नाटका) शेष भृशीवाल भुज्वालवर्द, आवज्जुपुर, पाठित आप्लांद्य (कृष्ण), शेष डेसीरीम्ब जुदारभल, डेसेलाव (मारवाड़).

१८ देश अने समाजेदारः—

आरत डेशना उप्पारमांज कैन समाजनो उधार एतत्प्रेत समाजेहो छे तेथी आरतना उधारना डार्चे माटे

એ. એ શુભ પ્રભાગીય ચળવણે અને પ્રશ્નિમેળ છે તેમાં સહિત વાગ્યેની કેનો મારે આપસ્ક છે, જેમ આ ડેન્ડન્સ માને છે અને આપણા દેશની ઉત્તીતિનો એક સુખ્ય મારી સ્વહેલી વસ્તુનો કિયેલા છે, તો - આપણે લાં તેમજ આપણા દેશ નહેર સ્વસ્તોમાં જે તેત્થી સ્વહેલી વસ્તુઓ વાપરેની, તેમાં સ્વહેલી કાય અને વિનો કરી કાય સુલારી અને કાય વસ્તુટીની આદી વાપરણ આ ડેન્ડન્સ આપણે પૂર્વે ભલામણ કરે છે.

૧૯ હુનિકારક પ્રથાઓ :-

એક હુનિકારક પ્રથાઓ ડેન્ડન્સ કરવાન સુસી રહી છે તે દેશાં તે દૂર કરવા તેમજ દેશના મારે વેશયોનું કાગ કરવાની જરૂર છે અને તેમાં આચ કરી નિબન્ધિની આપણે પર ડેન્ડન્સ આસ લક્ષ એચ્યામાં આવે છે કે, દેશ ન્યાત તેથી સાચ પોતાની તેનો અમલ કરવા ગેઝ પ્રથાની આપણે.

(૧) પુત્રોને બંદાર વર્ષની ઉત્તર નીચે અને પુત્રને ક્રાંત વર્ષની ઉત્તર નીચે પરણાવવાં નહિ. આથી એક ઉત્તરના લાંબોમાં લાગ દેખો નહિ.

(૨) રૂપ વર્ષ પુરું કાંચાં હોય એવા ડેશ પણ શરૂઆત કરું નહિ.

(૩) એક ઉત્પર વિશ્વ રીતી કરવા આને પ્રતિશેષ હોવા લોઘાં.

(૪) મરણ તેમજ શીર્ષાંત પાણી અંતાં જગત્તે બંધ કરવાની જગ્યાની નાતાવણ લક્ષ ફરજાંભાત તેમજ નક્કામાં આચી બંધ અગર કોણ કરવા.

(૫) ફન્યાલિંગ કે વર્ષિલયની પ્રથા વિષ કરવાની અને જગ્યાની પ્રક્રષ્ટે વેશનાના નાચ ન કરવણા.

૨૦ બંધારણ.

શી કેન ક્રેતાભાર ડેન્ડન્સનું બંધારણ - જેની નક્કો આ આચે વહેચ્યામાં આચી છે તે - મુક્કર કરવામાં આવે છે, કરું રીકાસ્ત.

દીક્ષા સંખ્યાં આ ડેન્ડન્સનો એવો અભિજ્ઞાન છે કે દીક્ષા દેન્ડન્સને કેનાં માતા, પિતા આચિ અંગત સંખ્યાં તાફા ને રખેલી દીક્ષા આપણાની હોય ત્વાના શી સંખ્યાં સૌભાગ્યી ગેઝ નહેરાત પરી દીક્ષા આપી.

પરિષદ્ધના પ્રમુખ શ્રીનું છેલું ભાપણ.

(આ ભાપણ પ્રમુખ શ્રીનું વતી શીક્ષાનંદાંદ્રાં કેલું હતું.)

—(૦)—

મહાતુભાયો !

આરે કોઈકાના સમયમાં મળેલ આપણી પરિષદ્ધની આને પૂર્વે દેશે કાંચ એંકદાના સાચ પણ્ઠોકૃત શાય છે એ વરતુ જહેર કરતો મન ધર્યોજ હંતું કાંચ છે.

આને આપણી પૂર્વીની લોહિનલાલી જેને કન્દાંત મેખા નથી રહી, આપણી જામાનિક રિચિત દિન પ્રતિકિન વધેરે ને વખારે જગ્યાની જાંસ છે, આચા દેશને લાંબ પદેલ જોકરીના હંતું કેન સમાજને પણ પોતાનો માંડક અનાચ્યા છે. આ દુઃખ કન્દાંત આપણું જાંચી ભીચી બેદરાર બની મેસી રહીએ જે હંતું રીતે પણ પાલવે તેમ નથી, એ દીક્ષા નિધાન મારે આપણે ફન્યાલાંડી ફન્યાલાં અનુભાવ અને કેન મેંક રાખાંના હાચો કરી આપુણ પગણી માંડાં છે. પણ દીક્ષા માત્ર કરી જાયા જાયાં સુખાંના હિ ઉચ્ચવાના નથી, જેના અમલ મારે આપણું જવાબદીયો નિયમી કાંચ પરાપણ અનતું પડેશે.

પરિષદ્ધ આપણી સમજ આપું વર્ષ આવે એટલું રચનામક કાર્ય સુક્કાં છે. એ કાર્યને પાર ઉતારવા પછીન આપણે બાગાં મંદી કરું પડે, શુદ્ધ અને સંબુનનો દેશ કરી પરિષદ્ધ નથે દ્વિક્ષાના જેનોમાં એકદ્વિતીય દ્વિક્ષા કર્માંબું છે. જુંબ મત અને સંપ્રદાયના જગતાંનો હુદે આપણું જરાવાર પણ નિષ્ઠાની શક્તિ તેમ નથી, એ કથેરો પછણ જીવણ સમજાને જુલાજ જીનું છે. વિચારને હેઠળ પણ હુદે નજીબ નથે, કિંતુ વિચાર પશ્ચાનાંનોનાં-પર સંપ્રદાયનોનાં-હુદે તે પ્રેમ પિયું પૂર્બજ હોવા છે. મહાત્મા ગાંધીજ અને ભારત જીવણ પણ જિત ભાગીયાણના વિચારનો મેળ હોવા જતાં વિશુદ્ધ પ્રેમથી રેણો એક બીજાને જેણી રાહ છે. દેશહિતના પ્રશ્નોમાં નિયમાં લાંદું મંત્રાંદ્રાંયો ચલાની શકે છે, એ વસ્તુ આપણે પડી લર વિસરાની ન હે.

ધર્મના નામે જીવણનો કરાવવાને-માન્યતાનોના નામે લાંદી ભારતાનો આ જમાનો નથી. એવી ચાતક નીતિ, સમાજ હુદે વધુ વણત નહિ સંમાની રહેશે, સમયને દરેક પિલાલુણ પડેશે.

બાપુનો ! વેદાક આપણા સિવાય આપણું પરિષદ્ધ દેશે કથોવા સર્વતુમનિને પશાર કર્યા છે એને જોજ આપણી હુદે અને એકદ્વિતીની નિધાન છે, પરિષદ્ધ કર્માંના જાહેરીના પાણી આપણે મંડા રેશેસું તો આર મહીનમાં આપણે જુલાજ આગળ જાણી શક્યાંનું.

તમારી અને મારી દુરજ રૂપણ છે, પરિષદ્ધને સંદેશ રેશના જુલાજાં પહોંચી જાવે પરે, એને સર્વં અમલી પગણાં મંડાવાં હોય.

શુદ્ધદોણો ! આપણા સમાજમાં જવારે પરદ્યાર અધિકાંસ ફન્યાલાંના લિયાંતક લાંદાં જવાની હતા, તેથા કટે-કરીના સમયમાં મહારાદેશ આપણને ફેતાને આંગણે નેતરીને લે તરફી ઉપાયી છે, રાણ દ્વિક્ષાનાં અધિકાંત પરિષદ્ધે જેન જમાજની લે સેલે જાણી છે તેનું, રૂપ શબ્દોમાં વધું ન હશું અસ્તાન્યાં છે.

આચા મહારાદીના આગેનોનો એકદ્વિતી શક્ત ભાનનીં શેખી સુનિધાસ સર્વચંદ્રની આગેનાં તળે ને આજાન હિમત, ધીરજ અને શક્તિથી પરિષદ્ધને પાર ઉતારવા રેખ જેણી છુટે તે મારે એમને જેટલા કન્યાદ આપીએ તેટલા બેદાણો.

આજારાદીના હુદે મારે જુલાજાં લેખ્યાં હે તમે એને અનુભૂતિ પરિષદ્ધ હોય પરિષદ્ધ અને મારા તરફ સહાય રાખેશે એ સહાય તેવી વસ્તુ છે પણ જુનોની સુનિધિપાદ્ધિયો ને જીવિનદ્યપણ આપી કે જૈન્સન વધાયું છે તે આતે દુનુનોને જાણું હું.

પ્રતિનિધિ બંધુઓ ! આ પરિષદ્ધને ઇસેદમંદ જાનાવા આપે ને હાંડિંગ સહાય આપ્યો છે, સુવા વર્જે જોજ પ્રેમથી સહાયોક કંસિટિમાં લે આગેય, ધીરજ અને શક્તિ અનુભાવ નેતરીને લે તે મારે આપને તથા કુલ, અંગેરેને જીવાની પ્રથમ વધાયું છે તે આતે દુનુનોને જાણું હું.

પ્રતિનિધિ બંધુઓ ! આ પરિષદ્ધને ઇસેદમંદ જાનાવા આપે ને હાંડિંગ સહાય આપ્યો છે, સુવા વર્જે જોજ પ્રેમથી સહાયોક કંસિટિમાં લે આગેય, ધીરજ અને શક્તિ અનુભાવ નેતરીને લે તે મારે આપને તથા કુલ, અંગેરેને જીવાની પ્રથમ વધાયું છે તે આતે દુનુનોને જાણું હું.

પ્રતિનિધિ બંધુઓ ! આ પરિષદ્ધને ઇસેદમંદ જાનાવા આપે ને હાંડિંગ સહાય આપ્યો છે, સુવા વર્જે જોજ પ્રેમથી સહાયોક કંસિટિમાં લે આગેય, ધીરજ અને શક્તિ અનુભાવ નેતરીને લે તે મારે આપને તથા કુલ, અંગેરેને જીવાની પ્રથમ વધાયું છે તે આતે દુનુનોને જાણું હું.

जुहर कैन कॉन्फरन्स सामे भावीश अध्याधी।

अमृतलाल मोहीनो पामर भवाप.

सासनप्रेमीयोनी भवीन मनोवृत्ति।

मुख्याहीनो होइ छ ? मुख्यरक्तो के शासनसिंहो !!

लेखक : नव्यतिलाल जगलयनदास गांधी।

जुहर कैन कॉन्फरन्स पहेलाना, कॉन्फरन्सना समयना अने ते भवीन एकत्रिता धर्मपक्षना, विवेकीन वचनाही लेको पडेकु छ, तेहो तो सारी रीते समय गया को, ते आ “धर्मपक्ष”भावी साही समज, सम्य, औचित्य, सम्बता, विवेक शिष्टता अने जिम भाष्यकाठना धर्मपे चहुङ्गो ध्यानामे प्रवारी देखे हो, पेताने “शासन प्रेमी” आस्तित्व, कान्तिका अने प्रभ धार्मिका भवनवा अने समावयाने आ पक्षनो अलगामले धमारो हो अने उत्तमे न्याय, नीति, सम्बता अने व्याचे के यथाप्रेमीनी स्वीकृत अवेदी एक नाति अने लिखोने तेवे मुख्या हो, कैन अवेदान डॉन्फरन्स नजर लटवा होनी को आ पक्षनी पहेदी पाहा होनी अने असाच हो जो नहीं थाँ तारे पानसर, श्री भद्रीनाथकु के जगसोगीआमा पेताने धारवा करवानु छावे तेवा प्रदेशामो भवीनो, ये आ वर्षीनी अक्ष लोकी दीपी, न्याये तेवां पाहा न झाँचा तारे लीकाअ, अंधारकु, चंगागी, शुष्काहीमो अने योग अनेक उपको रक्षा आ टेलाइमो विल्कु तुन आदर्कु, अपारकुनी मुख्याही अद्वाराही अनेक लेका उपलब्ध वेला पाहाडोमा न द्यावाही गेरन्धारपुर मुंबई कॉन्फरन्स अने अधाराचु विवेक प्रतिनिधियो अन्ननाना आ झुपे शेया चेया शाँ फ्ला, पाहा ज्वाँ परी आंगना, आद ज्वाँ ज्वाँ अन्ननर मुकामे आवी भंडप अने वेळ-टीयोपर पत्थरनो वरसाह वरसाव वानी आ हंपीमे धांचामी पामरता प्रगट होरी अने कॉन्फरन्समाही अद्वाराही अनुभव लगी पाहा होरी ज्वाँ, तड़ी अने उपलब्धा होटो अहेलालो प्रविधि करवानु आ साचन पेही छुँ छुलपाहुँ रहे छुँ, अने योग आकडा होटबा गङ्गानामो, सुरतमो भवेली ओव छन्दीआ यंगमेन (योगमेन) कैन सोसायटी, मुंबई, अंकात, अमदाबाद अने नवानन्द अवेदीनी आ सोसायटीजोनी सजाओ, पेताना संक्षेपो भावीनी सजाओ, जोकामाय अने अहेलालो समस्त जैन संघीनी सजाना नामे प्रगट थाय, यो आ पक्षानु ज्वाँ अमाय लक्ष्य अपै छे, धर्मो न था, होप, अपैको न कैसा होव, उत्तमे धैर्य “भद्रासमा”नी धार्मवाही होप तेवा लक्ष्या वर्तमानप्रेमीनु धुँ धुँ अ, पामर रीतो पाहु जैनजगतो धरीयह छ, अने योग ज्वुकाना ज्वो, पेववा आ याचन भक्ता कारवानोरी भारत वर्षानो जैन होव चेती योगे छे, परिवहन नालू महा भंडप्पेनो धुँ धुँ, हैनिक वर्तमानप्रेमीना रीपोर्टीना आहेलाल, भद्रासमीनी सहार समितिनु निवेदन, अने छेवटे शेठ, गीमनलाल, लक्षीयह झुनावाणा अने शेपव मेटर, अर्वाचना अंगरेंट शीवप्रसाद

पिलप्रसाद अने जैन पाठनर श्रीकृष्णसिंह जीवाद्विती होया गुहरदेशे आ वर्षीनी नांगाधपरमी पडो होयको हो, अने जैन जगतना विदाला भुवना चेमानमां आ याचन पक्षानी शेपाप्र जैनेतरै पाहु लेह शक्ता हो, छत्ता “भद्रास” गीर अवे तो आ हंगडी लंगीना, आवे आ अस्त्रप्रयाचारक कंपनी-भावी डॉप्र भवानी “भुनिना” भेवीना नाहे भुग्य ज्वेवा श्री अमृतलाल भगवनसाव भेवी नामना डॉप्र गुहराय, धनश ज्वीट ना उत्तरी अस्त्रांवा तारीप २४-२-३० सेम्बारना मुंबई समाचारना ६ ने याने प्रगट थर्ड पेत ग्राहो हो, आ आप्र योताना नाम लालग आ, अ, नी हीती पेतानी इलगेज पेतानी झुकी लाये ज्वेट हो, आ आ, येवा आधे प्रतिथी, सुखाशीथी, सुखारकेथी, विचारकेथी, अने जैनतना अक्षमुखी तेगज तेने चेपती परिप्रह द्वावी चारेज बोजे हो, अने डॉम न बोजे ? युग धर्मनी चेतपथी, आ, अ, येवेकमो गाहे शेठीज हो(?) एतेज समजनार अने जैनतनार तो निर्विघ कुमदद्वार नरे जैर्जेव बोवेला वानरो भाटे तो भाऊरीभारीज अने चेपाज होप हो, अने समाजन्तु सेंसाहु उत्तरी लाय तेवु एकज शर अंधान वालगेते वननी पेतीपार खडा होरे हो, एधी त्या अडा रही भंडीहो द्वावे धर्माचावे हो, अने परिव्युमे चेतेज पेताने भटका लरे हो, आ आ, अ, येवा आधीथी पाय, पाहु यांडगां अहुम्बे भुवी गया हो, आम ज्वाँतु लेव ज्वाँ अपनी जागी चांतवा हो, अने तेथी अती लेखीनीभे व्यवस्था, सम्बता अने ज्वेटु अहुम्बे डोडी हाँ अस्त्र, आ-न्याय, वाणगाणा अने गवीवालानो आत्म लीडो हो, रवार्थमां अभिम धरेवी आ, अ, छत्ता कंगाण डकम व्याजु शु ज्वाँ हो ?

ज्वाँधे ये छटावेली छलमनो शेठो डाट, असेड्या कैन कॉर्टीमे, अपै लेखीनी आ, अ, हो अने बोतां बोतां ज्वाँनर जैन डॉन्फरन्सना अमृतप्राप्ता भाष्यकुनी समाजेवाना लाये हो डैर्ड लायवे हो, अने योग जैना अमृत, परियह येनी शर्वाही अने शर्वाहोडो ज्वाँ भुवावाही, अनें ज्वेट होप्रथी अग्ना अक्षरो लायवे हो, आ भाटे ? येनी ज्वेट होप्रथा हो, डैर्ड ये ज्वाँप्राप्त अमृतप्राप्तपर येतो महार हो, आ अमाय ज्वाँ हो ? ये डैर्ड अमृतशीतु भाष्यकु डैर्ड तत्त्व यानिनो डैर्ड यास शारीरो लाय्यु हो, अने तेथी अस्त्रवाप्रह ईंद्यगार हो, डोप्रो ? राम आधास ईंद्यरीभावी अरेहीनी लहोह लालीजे अमृतभासामा अंगेष्ये लक्ष्य द्वावे अने याहीना जैनरमा पाहु भंडी हो तेज ने, येत्तो येप्र डक्यानो अन-भावार अंकाजेत लहो लेथी अधा भुवावाही, ये महा भुवावाप्र अमृतकालीनी अंगे ध्रूतर अमायजेते भुवारेक लागे हो, पाहु जैन अमायजेते डैर्ड यासवे ? पाहु अने लागे हो डैर्ड अमृतभाप्रु जैनत्य अहु ज्वाँ नदि द्वाव, नवु जैनत्य ज्वाँ न ज्वाँ, ते धर्माचाहुकु लक्ष्य लाय, अविं ते भागी-तुल्याही, सम्बत द्रष्टव्यी अने देश विश्वीजोनी परियह द्वावी, तेमां भुवावादो आप्रैप्र छर्नार अमृतकालीन, धानसर अने ज्वेट्वालीजना येणा डॉम नहिं पाहा होप अला ? पानसरमा आनसरना रवार्थाप्रक्षा अने अमृत प्रदेवाप्र, भेप्रथीजना रवार्थाप्रक्षु आ, नगीनदालालाचार्ध छर्मज्वद अने संकाशी शेठ अस्त्रवाप्र अमरेवदना रवार्थाप्रवतो अमृतशाप्रनी अंगे नजर युक्ता, ये वर्षताना सोण अंगरप्रीजोना सरकानो

સહારો અશ્વત્થાઈ વિશેરીજ ગણ બાળે છે. અને એક બીજી વાત, એ જ્ઞાને ભાગદોઽમાં એકલ વાલ, શૂર વિચાર, ભાવના અને રામાનંદી મોરદીના નાદ એ સ્વાગતાધ્યાયો, અને પ્રમુખોના હીનાપે, કોણો અને નાને જાણો હોતો તેરું શું? અને એની બધીએ કાર્યવાતી, કસાયો, અને એથી જ્યદુંથી અમદાવાડીની પાંચકુલા પાસેની રામ ઇન્ડિયાની વાખી, વધાઈ, અને જ્યાંથી આધ્યાત્મિક હેઠાવા છે તેરું શું? આ દેખાવિરતીઓની કાર્ય-વાહીઓ શી. અશ્વત્થાઈને મહા સ્વાધ્યાય ડેમ નહિં જાણ્યે હોય બબા, એ એક ડેપ્ટો છે, અને એવા અધ્યાર્થીનું અદરા ડેવાતું મહા પ્રસાદું છે. અશ્વત્થાઈના નાંદો જેનનંદની નાંદી નાગર સાંચે અભારે ધરુંન ફક્તા. વૈષ્ણ નમુના ક્ષુદ્ર, ટંકાયાળા પેદા હાંડ મેડ બાઇલાંધ નાનનમરમાં મહા-મુનિ બનયા લબધાયા. તે હોતા નગરમાં, જાં રાજ્યકોટનો કાગળ કાઢ મહામુનિની કદમ્ભી અગ્રણ થયો, એ સલબાદનો કોણ નેદ? તેને આણ્ણી ન જાય જાતાં લાંદા તારી સુઅધના છાપાયોઽમાં પ્રસંગ બબા, એ કંઈ સરચાદ્ધનું રૂપો હતું?

હું આજુ ડેમ થયો છે એ શ્રદ્ધાર્થ વિત્તાવિષયની અમલારી પ્રુસ્તકર્માં યાની રાડ સંભાળા છે, એ પણ કંઈ સરચાદ્ધનો સુર છે? શી. ગોરિશાલકુલાયે પોરોડ હોંકર્માં નકરાણું અને વત્તાનપનોઽમાં રિલ્ઝ બદ વીધાના ડીગ હુંદ્યા, તે પછું નાંદ સલબાદનો નમુનોઽહોં ને? અને એમ વંસા, ખંલાત, સુરેત, અને અમદાવાડીની રૂકે રેતનાંદની કાર્યાં શીસોના રસીયા પણ આ નાંદ સલબાદાના કારણાનાંદીન જનરાય હતા. કાશન પણના દેખાવિરતીઓ (?) અને 'મહા મુનીયો (?) ના સલબાદીની જૈન સમાજ સાંબાન છે, એકલે પ્રમુખ અને પરિષદ્ધ શૈખાયેલો અશ્વત્થાઈની અસલબાદી આપોયને ઇંસાને જૈન સમાજે જુનનરમાં લાણી નાયો છે અને એનો અમલ જાસન પણને મુંબાં મેદાવાયામાં થયો છે. અશ્વત્થાઈના ડેવાતી 'ખુલમાં અંધકાર હોય પણ પરિષહના પાથરે જ્વલંત પ્રકાશ જીણે છે, તેથી સરચાદ્ધ વાસ્યાદીની ત૊ જરણાત છે.

(અધ્યક્ષ)

શુદ્રકોની જગ્યાતિ.

(અનુષ્ઠાનિક જાતાં નાં નાં શાલુ.)

દુરાદ.

અનુષ્ઠાની આ સહા, જુનને અને જોણી જૈન સ્વેતાંગર પરિષદે પણાર કરેલા હોયેને હુલાર્પર્વંક ડેકા આપે છે અને એ દુરાદે સમજ, અમલમાં મુક્તા તાતીના અધીકારીઓને અભામણું કરે છે.

ઉપરોક્ત દુરાદે શેડ દમજી લાલલાયે ડેકા આપતાં કુંક વિચેન કર્યું હતું.

અત કેતાં કરાલ સવાનુમતે પસાર કર્યો હોયો. બાદ સમાનિકુની થઈ હતી.

સુરતમાં શુદ્રક સંબંધી માર્ટીંગ.

—(૦)—

જુનાન ડેન્ડ્રેન્સ સાંભંધી દુરાદો.

તારીખ ૧૧-૨-૩૦ નાં રોજે શી સુરત જલ્દી જૈન શુદ્રક સંબંધી, કાર્યવાહીક કન્ફિર્મ જુનનર ડેન્ડ્રેન્સ પદી ઉલા થયેલા કંચોણે પર વિચાર કરવા મળ્યો હતી.

કન્ફિર્મ ડેન્ડ્રેન્સનું કામ કુલેક તથા શાંતિયી પર પદના માટે ડેન્ડ્રેન્સના અમુખ તથા કાર્યવાહીને ધન્યવાદ આપનાં દુરાદ કર્યો હતો, તેમજ ડેવાતીક આધ્યાત્મિક ધરાતા-ધૂર્ણક ડેન્ડ્રેન્સના અમભાં કાચલ નામબાબુ બતાવેલ વત્તાન માટે દીઘારી લાહેર કરી હતી. લારાદ ડેન્ડ્રેન્સના હોયે વાંચી, તે જ્યો સંભંધ થએ, સુરત જલ્દીબાગં તેનો પ્રયાર કર્યાનું નક્કી કર્યું હતું.

જૈન સંગ્રહેનું સેચાદીના સુરત આનન્દાં સેક્ટરી ના. મનનાથ રખુણોડાયાયે, બાંધી મેયરદાસ નાશુભાઈ પર જૈન જીવનના વિચિત્ર સંભંધી માર્ટીંગ દીરીબાદના કામમાં નવાનુશાસાન થા. માલેકુંયાં અદ્યાત્માધીયે જૈન શુદ્રક સંબંધના મિશ્રણો માટે નીચેના કુણે જીવનાયો હતા, તે માર્ટીંગ કન્ફિર્મ તિરસ્કાર લાહેર કર્યો હતો. “જૈન શુદ્રક સંબંધના મેળનો બબે પણો ચાલ્યો કરતા હોય, પણ જે તેમને જૈન ભાગતા નથી.”

એક પ્રેફીન્જનક અવસાન.

આઈ શીનુભાઈ પેપટાલ ડેકટર, ઉમર વર્ષ ૨૩, જ મહિનાની જિમારી બોણી રવિવાર તારીખ ૧૧ થી હેલુભારીને રોજ પાછણ માત્ર ૧૫ વર્ષની વિદ્યા મુજી શાન્તાકુઙ્માં ચુલ્લી જાય છે, તે સામાયાર અધ્યાત્માં અને અધ્યાત્મ સોંક જાય છે. મરનાર આધ્યાત્મ સંબંધના પ્રયત્નીજી ઉલ્લાદી સંભળ હતા. અને પોતાની પાછળ રહ્યા હુટ્ટા વિગેરે ડેઢાંશુ જાતની અનિષ્ટ પ્રયાને માન ન જાયાય તે માટે અંત વખતે મજલુન અભામણું તેમણે કરી હતી. તેમના મેટામણ, ડેકટર શાલિકાંડ પેપટાલ જેણો પાયદૂરી હિપર જૈન વાખાનામાં જોનરી ડેકટર તરીકે સેવા આપે છે, તેઓ પણ આધ્યાત્મ સંબંધના પ્રયત્નીજી ઉલ્લાદી સંભળ છે અને તેમણે મરનારનીછકજણને માન આપી શાન્તાકુઙ્માં અને તેમના વતન અમલાદામાં બણ્ણું પ્રતિકુંગ ચંચોણોં અદગ રહી, આ છાનિકારક પ્રયાને હૂર કરનાની પહેલા કરી છે. આંદો તે આપણું સમાજ આજ પ્રમાણે હિંમત દાખની જરૂર હોયો હેડોલ્ડ કર્યો હતી. અંગે સહગતના આત્મને શાંત ધર્મણે છીએ.

આહુકોને સુચના.

આહુકોને પ્રેતાંશુલાજામ તાદીદ મેટીલી આપવા વીનાંતી છે. કે આહુકોને પરિકા ન લેછતી હુંયે તેણે અગ્રેને તુનતાજ ના લાણી નાખણે કે કેચી સંસ્થાને નાહુકના અર્થમાં ઉત્તરવું ન પડ. હું પણીના પદર દીવસાંના કેચોણીની ‘ના’ આવી નહીં હુંયે તેણેને આપણે આંક વી. પી. થી રવાના કરવામાં આવ્યાયે.

:: લાલાજમ ::

વાર્ષિક (૬. અ આવે) રૂ. ૨-૦-૦
સંઘના (સ્કાનિ) સંખ્યા માટે રૂ. ૧-૦-૦

આ પાત્રકા કૃ. પી. જોસ્ટિયાનો “સરહેસ” જિન્ટીય ગેસ, નાથ પીલીટિંગ, મરણાંડ ગાંદ રોડ, માર્ટીની, સુંખાંદ, નાંં ૩ મધ્યે જાપી, અને જમનાદાસ અમરસંહ ગાંધીને મનહૂર પિલ્લીન, ગ્રીન્સેસ સ્ટ્રીટ, સુંખાંદ, નાંં ૨ મધ્યે પ્રિયી પ્રશિદ કરી છે.

મુંબઈ જૈન યુવક સંઘ પત્રિકા.

તંત્રી : જમનાદાસ અમરચંદ ગાંધી.

વર્ષ ૧ હાં.

અંશ ૧૧ મે.

સંઘત છલાડ ના ફાગણ સુધી ૧૦.

તારીખ ૧૦-૩-૩૦

જુદી નાટક :

દાદી આના.

દાંસિકાની પ્રવૃત્તિ.

મુંબઈ સમાચારમાં “ ભાગવતી જૈન દીક્ષા સ્વરૂપીના બેખું નિર્મય પ્રવચનોપાસક અભિવિ નહિ કે માનુષાદી નારૂ જાણું છે. તેના હોક લેણના આધારો પ્રેરણ નોતા તું માનસ ક્ષય પ્રકારનું હું, તે જીબન વાંચક ચંદેને ચામજ શેડ તેમ છે। જીબનાં સુંદર દ્રષ્ટિને ને તેના આધારોને હોક વિશ્વ રીતે કરે છે, તે વાર્ષાં વિવેકી જનતાને તે મહાતુલાદી ઉપર હું આવ્યા સિંદાં રહે નહિ. દીક્ષા એ આત્માને જાગેતામ પરમ કલાયુકીની માર્ગ છે. એ પરમ પ્રવિન પસુ જીવનમાં ને વાયર્સ અરિનાર્સ થાપ તો પરંપરા હું એકેટે મેલું પ્રેતા થાપ એ જિદ વાત છે. આવ્યા રદ્દાદિકામણી જેવી વિશુદ્ધ વાતને મહાપુરુષો મહુર વચ્ચેનો પ્રકાંત રીતે પ્રતિભાળ કરે છે. એ લયારે ઉપમાતીલાં પ્રેતા-દ્રષ્ટિ-જીવાંદીનાં અંગીઓ વાંચીએ છીએ કારે હલમાં અતી હુંની આવે મહુરમાં થાપ સિંદાં રહેઠું નથી. પરંતુ આ મહાયા-નિર્મય પ્રવચનોપાસકનું માનસ ડેઢું હું શુદ્ધ કે તેનું નાય કાઢું અચક્ષ્ય છે. ભાગવતી દીક્ષાના નામે અથ અદ્ધારુ જાનકિનોને ત્યાગના આવાયા નીચે ઉદ્દેશી દુલ્હન શાદીમાં એક મધ્યાન વિજિત ઉપર તેવા પેલાનો દ્રેપ હાલવાન સિવાયનો બીજો હેઠળ તેમને હેઠળ દ્રેપ તેમ જાણું નથી.

“ સાચું આવો ઉપરોક્ત આપે નહિ. સાચું આવકની ઉનતિ હુંણે નહિ.” વિશેરે વ્યંગમાં એક અહિતને ઊતારી પાડવા અને જોળી જનતાને પેતાની તરફ આડવાંદી ભાગવતી દીક્ષાને નામે અધ્યાત્મ પ્રયાસો જેવી રહેલા છે, તે તેમના શુદ્ધ માનશુદ્ધ જીવનું જગતું પ્રદર્શિન ભાગવતી દીક્ષાના બેખમાં વિવેકી વાંચી લોઈ શેડ તેમ છે.

ભાગવતીની મધ્યાન ઉદાર દ્રષ્ટિને એકદ્વારા એવી જાણ, જોળી જનતાની અંગે પાઠ આચચારું તેણો મહા પાપ અધ્યાત્મી રહેલા છે, તે ઉપરાત જૈનેતર વિજાન જનોમાં કેનું પદ્મને તેમજ જૈન જાણોને પોતાની રૂપા છે.

દાખલા તરીકે તા. ૧૯-૨-૩૦ ના મુંબઈ સમાચારના અંકડાં સ્વચ્છતાની વાયર્સમાં અન્યને જાણો હોતાની પોતાની ટેવને-મધ્યાન પુષ્ટેના દ્રષ્ટિનો વ્યાપી જાગે આપવાની પોતાની ટેવને-જાણીકાતી દીક્ષાના અભિવાનો પ્રયોગ કરેલો છે, તે શુદ્ધ વાયર્સ વાંચી લોણો તો તેવા માનસ પરાવનાર જીન પ્રયોગ અનુક્રમા આવ્યા સિંદાં રહેશે નહિ. અભુંધી મધ્યાની વાખતમાં તેમની દીયાતીમાં નજૂદો ને જેચાં ચાખાંદીનો હતો અને તેણો મધ્યાની અભુંધીને નીદાંદા હતા; તેપણું અભુંધીએ ચલતું નિર્પણું કરવા કઢી આપો આપેલ એંધે નથી. કઢી સાગવાના ઇશ આવહોમાંના

મહાયાતકની પત્રી માંચાદાર કરી હતી, જોં તેણોએ પોતાની પત્રીને હુદ્દો શાખદ હોય નથી, આવી શકીયુંતા કાર્યિક જીવન વિતત કરનારમાં લાંદેલે આવી લાય છે.

મધ્યાત્મા ગુંધાલુણો તારીખ ૨૩-૨-૩૦ ના નવદ્યાત્મના બીજુંમાં સાત્યાગ્યાંમાં નિયમાત્મકીયાં સલામ્યાંને દેણે. મુંદ્ર ઉપરોક્ત આધ્યાત્મી છે, તે મહાયાપ નીચેથી પ્રેસ્નેનોપાલક વાંચી જાનસ ક્ષય પ્રકારનું હું, તે જીબન વિજાન વાંચક ચંદેને ચામજ શેડ તેમ છે। જીબન વિજાન વાંચી વાંચી અને ઉપરોક્ત દેખાણ સંખ્યાને ને કુલતુલુણ હોય છે, અને લાંદુંધુમીને નામે પોતાની અભિવાન પ્રકૃતિને પોતાની રીકાવણું દ્રેપ લાંદુંધુમીને હોય છે। જીબન વિજાન વાંચી વાંચી રીતે ખોજની હોઈ એંધે એંધુંતર જીવન માચચારું થયામાંનીર હેઠળું હોય છે। જીબન વિજાન વાંચી નથી, એ આ પ્રવચનોપાસક વિજાન.

જાણાંકી રીતે લેણાં એક વાત માં, મુંબઈમાં પાંચ પદ્મ અને એ પુંછણી કુન્નિમ જાગના આકારાનીએ ટેલુગુલ અધિમ જાગાંનો જોળી જનતાને ધર્મના નામે છેઠી, પોતાના આધી પેટનો ખાંડે પ્રેરોક્તિ-લેન-નીચેલાંના નામે લાગના દાંદાંક ઉપરોક્તાના આશરાની નીચે જોળી જનતાને સ્વપ્નશર્માં લાડુ, એક મધ્ય અભિતા પ્રયોગે પેલાનો દ્રેપ હાલવાનો આ અધી શું અધિમ અભાસ નથી? અભાસ જીવનનો જોણો ભાગ ચુકાતાનો અભિતા કરી રીતે ચાદ્રા નહિ અને એક ગાંધાન પ્રચારવાળાનું પુષ્પ અભિતા આ પ્રેસ્નેમાં આવ્યા અધ્યાત્મ અભાસ નથી અને જનતાને ઉન્નતિના પાર લાવી, જનતાની વહીમાતા મેળવીલીધી તે ઉદ્ઘાટન લાંદુંધુમીને રીતે આવી હોય જીવના નામે આવ્યા દાંદાંક અભિતાની હોય એ શદ્ધાદુદ્ધ આપે એવા અભિવાનના.

અન એવ ન બો ખરું સૂક્ષોચર ગુણનાં.

યુગતા સુધ્યાદતા તરસનું દેખેન જીવનમાં.

અધ્યાત્મમ સાર.

દી. શિવલાલ લયણ શાહુ.

સુંબદી જૈન યુવક સંઘ પત્રિકા.

યજ્ઞપાત્રો નમે ચીરે ન હોષ: કષિણાદિપુ ।

બુદ્ધિમદ્દ, યજ્ઞને યસ્ત લખ્ય કાર્ય: પરિજ્ઞાહ: ॥

શ્રીમદ્ હૃદિબાદ્યમુરિ.

સરદાર વહેલભાઈને અભિનંદન.

યુવક સંભાળ મેનેછાંગ કરિયિએ તા. ૮-૩-૩૦ ના
શરીર નીચેનો દ્રાવ પદ્ધતાર કર્યો હતો.

“સ્વાતંખની શરીર થયેલી લખતમાં પહેલા
સરદારી મેમાન થવાતું સરદાર વહેલભાઈને
દે માન મણ્ણું તેને માટે અભિનંદન યુંખ્ય જૈન
યુવક સંઘ તેમને અભિનંદન આપે છુ.”

ઝુન્નેર જૈન કેન્દ્રસન્સ.

દ્રાવની સમાદોયના.

પહેલો દ્રાવ સ્વર્ગરથ આગેનોને માટે શૈક્ષણિક
કરેણ સંખ્યાની હતો, એનો દ્રાવ ખાર્થિક તથા વ્યવહારિક
કેળવણી સંખ્યી હતો, આ દ્રાવ એ આજમાં વહેલાયેલો છે,
પ્રથમ આજને લખતો દ્રાવ ઝેન્ડ્રસનાની આજાળની બેદ્દામા
જુદે જુદે સ્વર્ગપે મંજુરું કરેલો છે, તેથી તેમ સ્વર્ગપમાં તે દ્રાવ
પદ્ધતાર કરી એસી રહેવું, એટેલે કેળવણી માટે શુલ્ક પ્રચા
લાભવાના જિવાય ઝેન્ડ્રસને કાંઈ ન કર્યું એમ મણ્ણી રાકામ,
પણ્ણી વધ્યાંથી કુદા ધરાવતા જારી આથભિક કેળવણોને
સરાવ, જેન જેણી બ્યાબરી લથ આલાદ ડેઝને અંગે રહ્યું
આજમાં ગુકાય વયર રહે તે શરમાવ જેણું ગણ્યાં, એવો-
એવો ચાર્ટિફ્યુલ જેનોની વસ્તી સાચ માર્ચ વાય ગણ્યાં;
જેમનો અધ્યો લાંબ જુદા જુદા શરેખેમાં વસે છે, આપેનો
અધ્યો લાંબ આમદાનોમાં વસે છે ક જેમના ડેઢ ડોર્ચ
નામદારી કદાચ આથભિક શાળાઓ હોથ અજર ન પહું
છે, નામદારી નાં પ્રાથમિક શાળા ન હોથ તાં તો, જેન
જાણક કદાચ આથભિક કેળવણી વધી ન રહ્યો હોય; સિદ્ધાય
જૈન આજાક આથભિક શિક્ષણ વસ્તુના રહેતા હોય, તે અનુભા
નોંધ નથી છતાં આ આજતમાં મેઙ્ગલ તેપાસ વગર
નાંદી વિગ્રહે જાણ્યી રાકાક નાંદી. ઝેન્ડ્રસે જેન વર્ષાવાના
જુદા જુદા વિભાગોમાં સ્થાનિક ગાયસોની અધ્યક્ષતા મેળવ્યા
અંક્રમચાર માહીતિ મેળવની જોખ્યો, અખ્યાતનાનાંદીને શરીરો
જ્ઞાન માત્રાપિતાઓ હેઠળણી દેખ માટે પોતાના જાળોને
પ્રેરણું ન કરેતાં હોય, તેવાને સમાનવલાની જેડાયું સ્થાનિક
પેટા કર્મિયો મારણત કરવી જોખ્યો, એ જામદારી શાળા ન
હોય તેવા નામદારી અનુભિસિખાલીને અગર લોકને એને
પ્રાથમિક શાળાઓ ઉલાફાનો માટે યોગ્ય અરજ કરવી જોખ્યો,
જ્ઞાન જ્ઞાનાંદી વર્તી હોય અને લોકન એડ્વર્સ પ્રાણી કરી
શકે તેમે ન હોય તેવા નામોગાં ડેઝાલ્યો મારણત વેકેનનમાં

પ્રાથમિક શિક્ષણા કલાસો જોગવા જોખ્યો, આ કરીના
કાર્નિક પાદશાળાઓને પહું ચેડી પણ્ણે અંગે લાયુ
પડે છે, તેના અંગે પછી મેઙ્ગલ અંલેખો, તપાસને અંગે
માલુમ પડે, એ ચંનેખો સુધારા તેમજ સંશોધ માગતા હોય તે
કરવા માટે જોપ્તા પ્રકાસો કરવા જોખ્યો, પર્યાસ વર્ષી ઉપરાતથી
ઝેન્ડ્રસનાં સ્થાપના થઈ છે, જ્ઞાન પ્રાથમિક ડેણાણુંના
દ્રાવ આપણે હરી પેટા પડે તેવા સિદ્ધાય શું સિદ્ધાય કોમની
હોય તે સાખતમાં સમાજની ચોક્કાશ શું સિદ્ધાય કોમની નથી,
પણ તે સાખતમાં સમાજની ચોક્કાશ શું સિદ્ધાય છે તે નાણ્યી
દ્રાવની તાપાંદી જરૂર છે, ખાર્થિક ડેણાણુંના સાખતને અંગે
પહું વીજાંનો મેળવવાના જરૂર છે, ક્રીં કરીને ખાર્થિક ડેણાણુંના
ખાણી અંગે શકે તેવા સાખતો પુરા પાડવા માટે દ્રાવની કોઠાં
જરૂરીયાત છે તે બધી નીમંતો જે સમાજ પાસે રહ્યું હરેખાનાં
આવે હોય, સમાજને તે આતોંમાં ડેટલા દ્રાવની જરૂર છે
તેવી જાંબર પદ્ધતા, જોખ્યો પાસે પરમાત્માની ખૂલ્લીને પાંચ
લાંબા તુંકું પહેલાવના નેત્રાંની લાકાત હોય છે તેઓ પાસે
પરમાત્માના અંક્રમ જીવનો, કેના જીવનોનો દેખાવો કરાવી,
પરમાત્માના વચ્ચેને સાતનારાદ જાળીઓ માટે, ખાર્થિક જીવન
મેળવવાના આતોંનો પોદાવા માટે પેંસા ન હોય તે શું જોખ્યું
શીખાયીપણે છે એ પણ તેમાં હોય હોય કેનેસાં જેણે
સમાજને દ્રાવની રહે તેમાં તેઓ જેકાન માર્ગે કાદિતના-પાંચતુંમના-
શીખાના કાર્યો માટે અનાર્થીન હુંસું સમાજ પાસે અન્યાંથી છે,
તેમજ કાગ થઈ જાંદી નહિ, દેરેક કાગ માટે પેંસા મળી જાંદી
નહિ તેમ કાગે રસનાયાં, પણ્ણું મળી જાંદી નહિ પણ
માલુસેની ને ફંનાં ને જરૂરીયાનો લાગે તે કાગ જન્મુંય
પેનાના વાણ્નદારા રહ્યું કર્યાં જોખ્યો તે કાર્યોનોંને દેમજ
ફંની રહેણો હેઠળનો જીલ સુધીનો વહીની પ્રતિકાસ ઝેન્ડ્રસન્સ
પ્રેગટ કરેલો જોખ્યો, માંગે જામદારી, કહેરે સહેરમાં ડેટલા
પેંસા જેગા વધા, ડેટલા જીવાચ માંથા, ડેટલા દુણી માંથા, ડેટલા દોર્ટ
દરજારમાં વધરાય, ડેટલા જેન મતના વિરોધી કાર્યોને મહારૂપ
દ્રાવ વગેરે વગેરે જાણ્યી લાગતો સ્થળોની જેગી હી સમાજ
પાસે ચુકી સમાજની આયોજન ઉંઘાણી જોખ્યો, અનાર્ગાં ડેરાયું
હોય જ્ઞાન કરી દેખાવો, જેણે કાંઈ વિદ્યાના ઉદ્દેશ્યના જોખ્યો
જેણે માંડિયાના ઉદ્દેશ્યના આપતા નથી, જાણ્યે હેઠળના જાણ્યાનાર
જીવા હોય, આ પરિસ્થિતિ સમાજ પાસે અનદિશ્યત રસ્તાપમાં
રહ્યું થાં જોખ્યો એટેલે સમાજ આયોધ્યા, કર્મા પેંસા આપ-
વાયી ચાર્યાક્રતા છે તે સમજ જરૂરી, ડેણાણુંના હરાય વિષે
સુપુરુષે પણ્ણે પણ્ણી.

માટે ઝેન્ડ્રસન્સ, તેના આગેયાનોંયો, તેની સ્ટેટીંગ કર્મિયોને
અને કાર્યાલીય સમિતિને આ જાપોની ડેઝને માર્ગીફાંક
થું જોખ્યો ઝેન્ડ્રસના દ્રાવ કોંકાં લાખતમાં પસાર યાન્યી
દેરેક કાગ થઈ જાંદી નહિ, દેરેક કાગ માટે પેંસા મળી જાંદી
નહિ તેમ કાગે રસનાયાં, પણ્ણું મળી જાંદી નહિ પણ
માલુસેની ને ફંનાં ને જરૂરીયાનો લાગે તે કાગ જન્મુંય
પેનાના વાણ્નદારા રહ્યું કર્યાં જોખ્યો તે કાર્યોનોંને દેમજ
ફંની રહેણો હેઠળનો જીલ સુધીનો વહીની પ્રતિકાસ ઝેન્ડ્રસન્સ
પ્રેગટ કરેલો જોખ્યો, માંગે જામદારી, કહેરે સહેરમાં ડેટલા
પેંસા જેગા વધા, ડેટલા જીવાચ માંથા, ડેટલા દુણી માંથા, ડેટલા દોર્ટ
દરજારમાં વધરાય, ડેટલા જેન મતના વિરોધી કાર્યોને મહારૂપ
દ્રાવ વગેરે વગેરે જાણ્યી લાગતો સ્થળોની જેગી હી સમાજ
પાસે ચુકી સમાજની આયોજન ઉંઘાણી જોખ્યો, અનાર્ગાં ડેરાયું
હોય જ્ઞાન કરી દેખાવો, જેણે કાંઈ વિદ્યાના ઉદ્દેશ્યના જોખ્યો
જેણે માંડિયાના ઉદ્દેશ્યના આપતા નથી, જાણ્યે હેઠળના જાણ્યાનાર
જીવા હોય, આ પરિસ્થિતિ સમાજ પાસે અનદિશ્યત રસ્તાપમાં
રહ્યું થાં જોખ્યો એટેલે સમાજ આયોધ્યા, કર્મા પેંસા આપ-
વાયી ચાર્યાક્રતા છે તે સમજ જરૂરી જરૂરી, ડેણાણુંના હરાય વિષે
સુપુરુષે પણ્ણે પણ્ણી.

શ્રી જૈન શ્વેતાંબર કોન્ફરન્સ.

કાર્યવાહી સમિતિએ કરેલો અગત્યનો કરાવ.

જુરી જુરી પેદા કન્ફિડિયનાની થયેલી નીમળું.

કોન્ફરન્સની કાર્યવાહી સમિતિની એક સભા તા. ૬-૩-૩૦ ના રેલ મળ્ણ હતી. અણનો ટાઇમ નજ્દ વાગ્યાને હતો. કાર્યની શરીરાત ૩-૩૦ વાગે થઈ હતી.

આજારે ૪૦ સભ્યો લાગે હતા. મુખ્યસ્વાતન શ્રી. સુનીલાલ રાણુરીકરને આપવામાં આવ્યું હતું.

શાર જાદ કાર્યવાહી સમિતિના પ્રમુખ તરીકે શ્રી. રવિશાખ શેખબાળને તથા ઉપરમુખ તરીકે શ્રી. મહાનનું કે. મહેતાને સર્વોત્તમાની નીમળામાં આવ્યા હતા.

ત્યાર જાદ કોન્ફરન્સનું કામકાજ વિવરિત રીતે ચાહી શકે હેઠાન માટે નીચેની પેદા સમિતિએ નીમળામાં આવ્યી હતી.

(૧) કાર્યવાહી સમિતિ માટે કાપદકાતુનો આપનારી કગિદ.

(૨) સુધૂ અંડાર કાંડ સમિતિ.

(૩) જેન સુધૂ અને પ્રકારન સમિતિ.

શાર જાદ પાછુ કન્યુસાલાઈ સુભિતિનો ખાલાપુરી તીર્થને અગે આવેલો પણ રણ્ણ કરતામાં આવ્યો હતો. અને તેની ઉપર ચર્ચા થયા જાદ તે જાણત માટે વધારે વિગત મેળવાનો કરાવ કરતામાં આવ્યો હતો.

શાર જાદ સરદાર વલલબાધની અહિનાંન આપ્યો નીચેનો હેરાન શ્રી. ચીનુરામાં લાલબાધને રણ્ણ કર્યે હોય નેણે શ્રી. ચીમનલાલ સીરિયંડ તથા વીરિયંડ પાનાયંડ સાહેં અતું ગોફન આપ્યું હતું. મત હેતાં સર્વોત્તમતે હાર પસાર કરતામાં આવ્યો હતો.

કરાવ.

“શ્રી જૈન શ્વેતાંબર કોન્ફરન્સની કાર્યવાહી સમિતિની આગે મળેલી સભા સરદાર વલલબાધન પેટસને, પહેલાં કેલમાં જવા અદલ અભિનાન આપ્યે છે અને સરકારે કે દમનાંતિ આપદી છે તેને વચ્ચેઢી કાર્ય છે.”

શાર જાદ મારીંગ જરાસાર થઈ હતી.

તારીખ ૩૦ પેદા કન્ફિડિયનો માટે સુંપ્રેષણ સંઘેના [નામે] આવતા અંકારા.

સમયજ્ઞ સુનિશ્ચીતં સ્વાગત.

ફલદૂન સુધૂ તૃતીયાની મંગળ પ્રશ્નાથે, લાંબા સમયથી જેમના આપનાની માર્ગદર્શિકા થઈ રહી હતી એવી સુનિશ્ચીતાંયાવિજયક મહારાને શ્રી. સ્વયંબન લીધાની પ્રાચીન પુરીમાં પાગતે માજારે પ્રવેશ કરો. ચાર્ચિયાની કુચ જવારું દરરાજેદી થાય થઈ. મહુરે સરરે વાગ્યી રહેલા વાળાં પાછાં, પંચાત હેઠાન સુવક સંબંધી રાયકર્સેન્ડ કુકીયી શુદ્ધ આદીના સુનિશ્ચીતમાં ચાલતી હતી. તેમની પાછાની સુનિશ્ચીત તેમજ અન્ય સાહુંબાં અને શાર પછી અંબાતાની પંચે ચાતિના અદ્દશે. તેમજ સુવક કર્યાની મેટો અમૃતસ તથા રીહિંડ ધીનો અનિને, જિતારી બણના માર્ગે આગળ વધી રહેલા હતો. અન્ય દર્દીની માલુમી પણ પરસેપો નેચું આનંદ પામતા અને રસતામાં વાર્દાવાર

હેઠાન શાસનાની કષ્ય જ્યે, “મુનિશ્રી ન્યાયવિજયકુની કષ્ય જ્યે” એવા પેદારો થઈ રહા હતા. ભારતાદી આગળના ‘મેયા દ્વેરાસર’ માં દ્રોણ કરી સરથસ આગળ વખતાં, સુવક સંભળી ચેદિય સમિય આવી પહોંચતા, રસ્તે બીજાર બધ ગણે હતો. લાંબી શેડ અંગારાથ પાણાચાંહની પર્માણાં સુખીનો આંદોલન રેખાની તેમજ સુધૂલેખાવાના એકાંદીય રાઘવારોલે હતો. ખંચાત લેવી પુરાણું જિસ જેનાપૂરીનાં આગળના સ્વામયથી કાઈ રૂટાન જ્યે પછી હતી. વીચની સર્હી ચેદા પ્રેતિતાના જમાનામાં પણ જ્યાં આજે ધર્મને નામે હૃતેસથા વાસનવનર ‘શાસનાંદિક સોસાપણી’ લેવી સરથાયો હુદેચના હુદેચનમાં વી પુરા રૂપ કામ કરી રહી હી છે અને એક કાંદે જ્યાં એવા ડેડારોનું સાખાન્ય પરાપરું હતું, ત્યાં સ્વીચ્યાંત્રી પંચે રાતિના સભુદાનો ચઢ્ઢાર એ કાઈ નાની સુની વાત નથી; સભુદાની બલિદારી વે આનુંજ નામ. સુવક સંભળે એવું જ્યાં દિશિત તૈયાર કરવાના જ્યાં હુદેચન નથી, આજ કેનેં જ્યાંત જાણનું નાનુંનોં પર્મયે જ્યાંતામણી પાણીનાયતું હેઠાનાં ને પર્માણાં આવી પુરા. ગંગાનારઙ્ઘ પણ સુનિશ્ચીત તરફથી ચેદ્ધું પ્રવાન કર્યું. પ્રશાનન કથા આવ સ્વી નિષારાય.

જુદ્ધર જૈન કોન્ફરન્સ સામે બાલીશ અભાગી.

અમૃતલાલ મોટીનો પામર પ્રલાપ.

લેખક : જયતિલાલ જગણનનાસ ગાંધી.

[ગતાંદીયી ચાહુ.]

પીલે પ્રલાપ.

લોકો લગ્ની વંચાપ તેનું પ્રભાવશાસ્ત્રીય ભાવયું, અવાજ શર્વન ન પહોંચી શકાના કરણે પ્રમુખશીયે જાતે ન જાયતું, એમાં અમૃતલાલના આપાણે પણ પુરાણી મળી જાતે છે; પણ આગેને જ્યાંન આપો તો કે શ્રી બોલ્કીઝની ‘હેઠાવિરીત ધર્માંશક્ત સભા’ના પ્રમુખશી કષ્ટસુરાધ અમરયંતું ભાવયું હેઠેં ચાચ્યું હતું જાન? તેની શોષ કરેલો તો કે ડેસ જેણી લેવા લેવો લાગતો.

પ્રમુખશીયું કષ્ટસુરું અને તેનું કાર્યો અમૃતલાલને જેરસુભાનું ડિપલોમ છે. તેમાંથી કાર્તો જુન્નાર જ્યાંન નથી અને આપાય હેઠું તો પ્રાચી હિસ્ટે પણ કરી જાય છે એટલે પારામ હેઠે સંભેદું, બીજાના જ્યાંને વાંચેનું અને રામ અધ્યાત્મી નીર્યાપ કરેલું, પછી જેરસમજનું ન હોય કેમ?

‘શાસનસરીક પ્રતિકિંત હુદુરેશેને’ લાંદી પછવાની, જેણી રસ્તિલા, પ્રતિકિંત અને ગુહયાપાઠોએ પ્રમુખશીયે જ્યાંન ન હોય એ અમૃતલાલની આપાણે ખટકે છે, પણ કષ્ય ક્રમ ગુફાને હોય એ તરફથી એ અને કાઢાયે લાંદીઓ પડી છે તે ચાંદ લગ્ની કાઢાયે નથી કર્યું, તે કાઢાયાની અમૃતલાલની પણ હીમત નથી, કાઢાય લાંદી પડીન નથી. તે હોતાં તો, તો, કાઢાયાને રોનભાર થયો. હોતા, હાડતરી મેજર જ્યાં હોય અને અટોરીઓટા બાદાર આપ્યા. હોય, પણ તેનું કાઈ નથી. હું પણ અમૃતલાલને આપાણન છે કે, આપું કાઈ હોય, તો સુધીની પણ કાઢાયે નથી. ગારાનાર, માર પછનાર અને પંચભાગસ, એ બધું કાઢે. માત્ર જુદ્ધાણીની જનતાને જેલસાના દિવસો હોય, આગળી જ્યાં છે, તે આમૃતલાલ ન જાયતું હોય તે જ્યાંની લે.

પ્રમુખશીયે આ અધ્યાત્મા ગુફારોની શાદગીરીને જ્યાંન ન હોય, એમાં પ્રમુખશીયે સાહી સમજની આપ્યી જેણી આપ્યે ખટકે છે. પ્રમુખશીયે આ હાદગારીપર ઇટ્ટા ન માંચેને તે માટે આભારહૃતિ તો આ ‘ધર્મ રસીડિમાં’ હોયજ ક્રમાંથી છે.

મુખ્યશ્રીના ભાગ્યખૂબી મુનિસિપાલિટેડેની અધિકારીએ આ અમદાવાદની ભાડાને તરફથી હો, એમાં મુનિસીપાલી ગર્ભિત નીચાનો એને આંક થાય છે, પણ એ આંકની મુખ્યશ્રીનું પ્રવનન બીજાંથી લખ્યું છે જેમ જેણે ભાન્સું છે, તેણું ડેટલાઈ કહેનાના સાહુશેનો વાભમાર્ચ પર પ્રકાશ પાડ્યો છે તે અંશેના પાત્ર હેઠળ નર્સી ભાજતું? મુખ્યશ્રીના પ્રવનનાં મુનિસીપાલીને અને અમદાવાદ પર આંકેથ નથી, નર્સીની નિંદા નથી, ખલ્લે તેમની પૂણ અને અંકાર છે. આરત વર્ષે મુનિસીપાલીને અનુંતકાણથી વંદા છે, ૬૭ એના અન્દથી સુધ્યાંશી, પણ એ વંદામાં, અંકારમાં, આંકારની સેવામાં રૂપાંશી સાથાનાં આંકારને સ્થાન નથી. એના રૂપાંશીઓ, કોલાડો અને વલસાની લીલાઓએ સગાનાના વિકારની અભિનાન સમાન ચેતવણી છે, એ જાણી વાત કરી કેવા ગાડે મુખ્યશ્રીની હિંમત વાદગાર રહેશે, તે અભિતકાંદે નોંધતું બદ્દ.

અંકોએ દીક્ષા પરથે મુખ્યશ્રીના વિવારેનાં અભૂત-ભાડે પર અક્ષણના લીલામના જોગાં પડ્યા છે, પણ જેનો હેઠાંથી ચમણત છી ચંદ્રી મનજૂલ હુંથી ચંદ્રી નાંખ્યો છે, હુંથી જેનો આંકાર છી ચંદ્રી સુધ્યાંશી સુધ્યાંશી અનુંતકાણ લોખીને હુંકા થશે, એ આવતી કાંબતું સંક્રાંત છે, તેની નોંધ પણ અભૂતભાઈ લઘ કે જોમાંજ મૈંગની અને એમના પદ્ધની સંખાગતી છે.

દૂરદૂર કરેણે સામાજિક ભીંબકાંતનો વિનાર કરનાર છી સંસના પરલાદના લીલામન થયાની વાત અભૂતભાઈની કુને ચંદ્રી છે, પણ ડેન્કરન્સને તેણા ભાડે, અંકારની અભૂતભાઈ સુધ્યાંશીનું દ્રબ્ય વાખરી નાંખાની ચલાક અધ્યાનારીની, અને તેને અનુસરનારાજોની પ્રતિષ્ઠતું લીલામન આજ પહેલાં થકજ ગણું છે, એ સંસ પણ અભૂતભાઈ અનુંત છે.

આંકાર મીલકાંતનો નિઃખાર્ય આવે વિવાર કરનાર વિવારોને, અને સુધારણો ભાડે, શુદ્ધશૈલીએ બોલનાનાં પોલસાનો જરૂર અસ્થાને છે, પણ દરામતું આંકારની રૂપો ટેલાપેલી કુલ્લાપાઠીએ સેસાયટીઓને એ, "અંધૂમોલ" સાથાદ અભૂતભાઈને આપવી રહેશે.

બદી, પાંદિલ અને પવિત્રતા કરતાં પેસને ઉંઘય રણન કર્યું અધાર છે? હેઠાં નીકાલ જીજાનર અધારાં લાંબાની કરીને પણ અધીનાના સાહીઅધીન આગ્ની, લાંદૂતી અસ્તી કરીને આગ્ની દીપિયાના આગ્નીએ આંકાર અનુંતકાણની એવી અધાર, અનુંતકાણની એવી અધાર અનુંત કરીને હેઠાંથાર છે? કે "દીક્ષા દીપિયાર અસ્થાનાઓ છે?" તેન અલજાનાર હુંથી અધારભાઈ કેવા અંગ્રોને હેડે અધ્યાન છે, અને રહેશે.

કાંગળ બીજાંનીએ, "આંકાર મિલટનો અંકેત હેઠાંથાર હેઠાંથાર છે?" કે "દીક્ષા દીપિયાર અસ્થાનાઓ છે?" તેન અલજાનાર હુંથી અધારભાઈ કેવા અંગ્રોને હેડે અધ્યાન છે, અને રહેશે.

પરિષદ અને એના અધારે અંગ્રોને અધ્યાન તેણી ગાંધી આપ્યા પણી, દુરભાગત વૈષણવ નિષેધ સંખેદા પ્રમુખશ્રીને કે પ્રમાણીકાંપું લાંધું તે તેમણે લાંધું, એંગાર અસ્થાન-અધીપર આરિન પેમના પદારથા પડ્યું છે. એટાને પ્રમુખશ્રીની કે એકજ વાત દીક્ષા, એ પ્રમુખશ્રીનું પોતાનું અને આગ્ની અંધું લાંદૂતી. આ અભૂતભાઈના બીજો કોલા દીક્ષા દીપિયા કેનું હુંકું છે. મહાલક્ષ્મીનો સામનો કરનાર મધાલ પણું રણન કર્યા છે? એટો અબાજ જાંખણનાર ડાંધું છે? એના પ્રતિનિધિયો ડેટલાઈ સરફાર અને પ્રલાયર એના અધ્યાનાની અસર રી? અને ડેટલાઈ છે તેનો અંદાજ અભૂતભાઈની બી. એ. લાંધું વાણન

કરી જાંખી ધેણી આંધો કાંદી નહિં લારવી છે, પણ આજાદીનો અધ્યાય મળવનાર આજાદ ભારતે એનો અધ્યાયો આંધો છે અને તેથીજ આજાના નવજવાન ભારતના નેના નીચે કરેણોની માનવતા જેણે છે. જેણ વૈતાંયર ડેન્કરન્સ, એ ભારતના કામકાંત લેણેની મહાસાના છે, એની પ્રતિબા એ ભારતીય જેણેનો પ્રાણ છે, તેનો સામનો કરનાર ડેંડ ડેંડ 'મધ્યર' અને પ્રવરના હુંકા પુંઝા વળણી કેનાર માલાણી 'અનિ' હેણ, ડેંડ ડેંડ કહેવાનો 'શાશ્વત પ્રેરી' હેણ કે ડેંડ પાંખથીએ બર્મ પણી હેણ, એ હેણ તે કોણ, પણ જેણે અધારસાની પ્રતિષ્ઠપર એ મુકનાર એનો હુંકાન છે, શાશ્વતનો અને સમાજનો તે દોઢી છે, પણ તે ડેંદીએ કહેવાની વાગ્યાની વાગ્યા, મુદી, પણી તે પ્રતિબા ધરાવતો હેણ. એવા ડેંડ પણ તથી, એંડ, કે ધળાયેને જેણ નહિંન નવાણી કે અને નાનુતિની આ અનેની ઉષાગ્ના અધીશર જેણેનો જેણ હુંકાન, એ તેણુંનોને કોણ શાંત રી રીતે ધર્યે એ હુંકું મુસ્કેલ છે. આને કાંડા વાગ્યાના જ્યાંયાં મુલાકા જેણો મહાયોદી શરાનાં આને પણ ભાડું ભારતીય સુધ્યાંત હુંકાર કરે છે, તારે એના પણ માંથી બધી, નીતિ, સમાનતા, સહીખ્યાંતાં અને જેવા જાણેનો પાણે અધારના હુંકા જ્યોતની અધિક બળતી વિશુદ્ધ અને જારિની દીપમાળાની આંદોલાય અની અસ્થાનાનું ધર્યે, વિશુદ્ધ, લાગ, સંચાપ, અંડીંદી અને શુદ્ધ જારિનોને જીવ જાવ, જીવ પરિષદ હેણનો.

આવતો અંદું બી. પી.

અંગ્યાંધીની લાહોર કોણ મુજબનું કે આહોણની ના આવી નહીં હેણ તેમને બારમે અંદું બી. પી. થી રવાના કરેયામાં આવતો. વાર્પિંક લયાનમાં તથા પોષ અર્થાત્ મળ્ણી ૩. ૨. ૩૦ તું બી. પી. કરેયામાં આવતો. બી. પી. અને દરેક આંધો કેણીરી વેણ, તેણી અગ્રો આવતો જીએ.

સંલોચને સુચના.

અધ્યાંધીની દરખાસ્તી દીરીપાદ કરેયામાં આવે છે કે તેમને ત્રણ આર અંડાદીનીએ કોણી જગતીની નથી. ખુલાસામાં જાંખુંબાનું કે હેણથી ને સંક્રાંત પાસેથી મેન્ફર રી ઉપરંત પરિદાના લયાનનોને ૩. ૧૦-૦ પદ્ધાસ આવતી અધ્યાન એવી અધ્યાન અનુસરને પણ જેવી અધ્યાનને પેસાને જેવા મેન્ફર કરે છે. જે સંખોને પરિદાન જોગાનનો હોય તે સંખોની અંગ્રોનામાં, અધ્યાન જામનાનાસ અમરચંદ આંધી, ૧૮૦, ૧૯૮૧ાં મંજુલાને એણાનું લયાનમાં આવતો જીએ. અધ્યાનને એણાનું લયાનમાં આવતો જીએ.

દીક્ષાના

બાર્પિંક (દ. અ. આંધો) હૃ. ૨-૦-૦
સંઘના (સ્થાનિક) સંખ્યે માટે હૃ. ૧-૦-૦

આ પાંદિલ જી. પી. જોલદીએ "દીક્ષાના" જી-ટીન વેચ, ગાંધી પીલીની, મસજીદ અંગરી, માર્ગની, મુખ્યાંદ, નાંના ૩ મધે આપી, અને જામનાનાસ અમરચંદ ગાંધીને મનહરે જીલીન, પ્રી-સેસ સ્ટ્રીટ, મુખ્યાંદ નાંના ૨ મધેથી પ્રસિદ્ધ કરી છે.

મુંબઈ જૈન ચુવક સંઘ પત્રિકા.

તંત્રી : જમનાદાસ અમરચંદ ગાંધી.

વર્ષ ૧ હું.	સંવત શક્તિકા ના ક્રાગણુ વર્ષી ડ.	ફુલક નફલ:
અંદર રૂએ મેં.	તારીખ ૧૭-૩-૩૦	૦૧ આનો.

શ્રી જૈન શૈતાંખર ડેન્ડરન્સના આશ્રમના નીચે
જાહેર સભા.

જુનનેર ડેન્ડરન્સના સંદેશ.

આશ્રમની જાહેર કર્યા ગુજરાત શ્રી મહાદીર જૈન વિદ્યાલયના નોંધમાં તા. ૬-૩-૩૦ ને સ્વાતન્ત્રયના દિન રાતના ૭-૩૦ (મુ. રા.) વાગે જૈનોની એક જાહેર સભા આપી હતી. દાનારી સારા પ્રમાણમાં હતી. હોબ લગભગ ચીંડાર ચઢી ગમેલો હતો.

શાશ્વતાત્માં શ્રી. દ્વારાચાર ચાંકડે સભા એવાવાનો જરૂરાનું વાગ્યી સંભગાન્યો હતો. શ્રી. વીરચંદ પાનાચંદ કાલીની દરખાસ્તથી અને શેષ મધ્યનાલાં મુગાંદના ટેકાથી પ્રમુખસ્થાન નાથુલાં કૃષ્ણાં આચેવાન હેઠળ નાનાં જંબાદાનને આપવામાં આપ્યું.

બાર બાદ આજની રાત્રાના મુખ્ય વક્તા રા. ગેનેરન્સાલ દેસાઈને તિર્યાને નમસ્કાર કરી જુનેર ડેન્ડરન્સ ઉપર નોંધમાં જલ્દીબુન્દું કે આ અધિવેશન નેણદી વખતે સંભોગ વિધીની અને વિપભય હતા. એમ ડેટાફો માતના હતા, અને પ્રાત સંગ્રહ પદ્ધતા દીક્ષા નેવા વિષયે ઘણ્યાનો મુંબુવતા હોબ તેમાં નયાઓ નહીં. આપા પાતાનું હતાં મેં અધ્યાત્મ કર્યું હતું કે ડેન્ડરન્સમાં નહિં આવે તે કાબર ગલ્લાથી જરૂરું ન જોઈએ.

આગામી નોંધમાં તેજોશીયે સ્વામતાદ્વિક્ષ શ્રી. રાલ્ફરીન્સ વિગેરે મહાદીરાંધી વીરેના, તેમનું ઉદ્ઘાની નહેંમત તથા આશ્રમનો બાદચં ચાંદગુણ્યું હતો.

વધુંમાં જલ્દીબુન્દું કે અનેક મુશ્કેલીઓ કાર્યક્રમોને નહીં હતી પણ કાર્ય પણીજ સાંદર્થી કોઈ દીબ ન હતુંન્યાં તે રીતે લેવામાં આયું. કિનન મતબાદીઓ શનિવારે રાતના પણ આચા હતા અને તે વખતે પણ તેમને બટાની સગડો આપવામાં આપી હતી. શનિવારે તેમને એમ જલ્દીબુન્દું કે આપણે પણ નહાનો એ અને આપણું હાથું અને તેમ નથી તથા તેમોને જુનનેર ડોડી આચા જરૂર હાજ જણ્યાનું તે માર્ગે સ્વીકાર્યો અને માર્ગ રાતન કોણે તે બદલ તેમનો આચાર માનું હું.

દ્વારા ઉપર નોંધમાં જલ્દીબુન્દું હતું કે દ્વારા અધ્યાત્મ ધર્મની માન આપી હોમની પ્રાતિ લક્ષ્યમાં રાખી કર્યાની આવા છે. દીક્ષાના દ્વારા ઉપર નોંધમાં જલ્દીબુન્દું હતું કે જૈન ડેમના આજો અને આણિકાનો-એ આપક સંતોસને દીક્ષા આપવા મુનિસને તેવાર થાથ લારે તેમજે તેમના માત્રકિતા અને રથનિક સંખ્યા પરસ્પાનગી નોંધમાં લેધાયે એમ પૂછ મુનિસને આ મહાસભાને જણ્યાની દીક્ષા હે તે પણ ઉત્તીવજ હતું હે, પ્રગતિ કર્યી

હોય તો સમપદમાં અતુલાયું લેધાયે, બાદ સુરત અંગર ઇંદ્ર અને ડેણાલાના કાંચે ઉપાધી દેવા કુવડાને અપીલ કરી હતી.

ત્વારણાદ મેલનાલાં પી. ડાયરીમે સમપદમાં ઉપર કુંડ વિદેશન કર્યું હતું. પાંત લાલને પણ સેવાધર્મ વિદેશ કુંડ વિદેશન કર્યું હતું. દીક્ષાના દ્વારા ઉપર નોંધમાં જલ્દીબુન્દું કે આપણે ભાગવતી દીક્ષાના વિરોધી નથી પરંતુ અપોન દીક્ષાના વિરોધી છીએ. દીક્ષા એ સધ્યન છે અને અનુ મહાદીર એટાંથે વિકાસ તે આખ છે, મારે દીક્ષાના રોટું પસંદ કરે, પીંચોલ નહીં. અપોનને દીક્ષા આપવી તે પીંચોલ દેવા હતું ગલ્લા.

લાગ્નાદ પદ્ધિત આધુનિક્યો નેરદાર લાગ્નાદ જેને ડેમનો પ્રાંત પ્રતિદ્વાસ અને દ્વારા અધેલી પરિસ્થિતિનું સુંદર લિંગદ્વારે કરાયું હતું. ડેનરે શ્રી. રાલ્ફરીન્સ તથા શ્રી. મધ્યાલાં મુદ્રાદાના વિકાસ પદ્ધતિ અને પ્રમુખશ્રદ્ધાની ઉપકાંદ્ર કરતી પ્રમુખશ્રદ્ધાની પ્રમુખસ્થાન આપવા અદાન આપ્યો હતો. દ્વારાયેલી અભાવાલાના કરતી જલ્દીબુન્દું કે દીક્ષાને દ્વારા ને રીતે ક્રાંતિ નેટદ્વારે કર્યો છે જ્ઞાન લેધાયે તેટાં કર્યું નથી. એટા પ્રમુખશ્રદ્ધાની આચાર માની સભા પોણી અગ્રીઅચાર આવે અવનાની વચ્ચે વિસર્જન થઈ હતી.

જુનનેર જૈન ડેન્ડરન્સ.

સ્વાગતાદ્વિક્ષનો સંબંધ તરફથી માનપત્ર.

શ્રી જૈન શૈતાંખર ડેન્ડરન્સ તેરના અધિવેશનની સ્વાગત અભિતિના પ્રમુખ સેઠ સુનીલાલ સંઘરંધ પારિષ રાલ્ફરીન્સને જુનનેર કાંડલ સંબંધ તરફથી માનપત્ર આપવાનો એક પ્રશ્નાંદ્રાને જતું હતું. ૧૫ મિ. ફેફ્દુલાની ૧૯૩૦ ના રોજ આ જૈન ધર્મશાળાના વિસાળ લેવામાં કરવાનો આયું હતો, ને પ્રક્રિયા માનવા સંખે જૈન આદ્યાત્મ તથા અધ્ય પ્રતિષ્ઠિત સહયોગદ્વારે દાખલી આપી હતી. સેઠ સુનીલાલ રથચંદ કર્ણાંડ કર્ણાંડરી દરખાસ્તને સેઠ આપુલાલ આપુલાલાનો ટેડી. મણિતાં સેઠ કર્ણાંદ્ર માનવદાને પ્રમુખસ્થાન આપવામાં આયું હતું.

સ્વાગતાદ્વિક્ષને કેન્દ્રાંદ્ર લેવાનું દ્વારાન્સના કાંદ્રાની પ્રાતિષ્ઠાનિકી અને આપી હતી. જુલાનું વક્તાની નોંધમાં સેનાની આચારાંદ્ર નોંધું હતી. બાદ સેઠ સુનીલાલ રથચંદ કર્ણાંડ કર્ણાંડરી દરખાસ્તને સેઠ આપુલાલ આપુલાલાનો ટેડી. મણિતાં સેઠ કર્ણાંદ્ર માનવદાને પ્રમુખસ્થાન આપવામાં આયું હતું.

૨૮. સુનીલાલ રાલ્ફરીન્સ માનપત્રના અભાવમાં જુનનેર સંઘરાની આચાર માન્યો હતો. અને પ્રાંતાંદ્ર વિદેશન કર્યું હતું.

બાદ કારતોરા આપા બાદ સભા વિસર્જન થઈ હતી.

ਮੁਖਟ ਜੈਨ ਯੂਵਕ ਸੰਘ ਪਤਿਆ.

पञ्चपात्रो न मे वीरे न हैषः कमिलादिषु ।

अंतिम अवधि अस्ति तथा शास्त्रः प्रतिष्ठितः ।

શ્રીમતુ એ કર્માંકદારી.

જીનેર કોન્ફરન્સ.

કરાવોની - સમાદોચના.

પ્રાથમિક ડેળવરી કંઈખીની સમાચારીયાના અભેદી જ્યાં
અંકડાં કરી હતી. હવે ફરાવમાં ઉત્ત્ત્વ ડેળવરી આપવા
અર્થે પાછ પુરસ્કાર-સહિત અંગે વગેરે લૈપાર કરવા કલા-
મણું કરે છે, અને તે ઉપરાંત શિખ વિજિતી લાંબા વિદ્યાર્થી-
ભૂતનો સ્વાપનાની અલામણું કરે છે. અથી અલામણું ઘણું
વધેણી કરવામાં આવે છે; જે કે સામા એક લર્ણના શાલ
દલ્લાણો જાણ કેટલીક સંસ્કારો વિદ્યાર્થીનો માટે સ્વાપનામો
આપી છે અને તે મજબૂતનું કરવાના પ્રયત્નો તે તે સંસ્કારોના
કાર્યવિધાને તરફથી કરવામાં આવે છે, તેને મારે તેમે
ધનવાનો પાત્ર હો-કોલ્યાધીશ, આપવાનું કર્મ પણ જુદા
જુદા મંદ્રો-ધનસ્થાનો તરફથી કરવામાં આવે છે. જે દિક્ષામાં
શીકુનું સાચાનું મોદીની હેઠળ ઇંગ્રી પોણાને ખારો ઝોળો
આપો છે, કે જેણે વૈજ્ઞાનિકાને નિવારાયાનિઃ
લાભ લે છે પરંતુ લંઘું મેળા બધા રૂપોનું કે જ્યાં લંઘું આધીન
અશવદ પૂર્વાની નથી. નિવારાયે-ગુરુકુલને તેમનું જીવાયામે
ઉપર આપી અરજિઓની સંપૂર્ણ અને તેમની ડેલી અરજા
પાસ થઈ શકી, તે સંપૂર્ણ ગે પ્રયત્ન કરવામાં આવે તે માલુમ
પડે કે ટેલાં વિદ્યાર્થીનેને જરૂરાના અસરો નિવારાયાનાં આપું
પડે છે. સમાજના મેદા આગામી સ્થિતી મુંબાના અથેરી પોણાનું
પુરો મારે ઉપાયી કોઈ તેવી નથી. ડેળવરી અંગે જે કે આગામીની
બાળની સંબંધ ઘણુંપસ કારેસેમાં હોય પરંતુ તે કાણનમાં
અભ્યાસ કરી પાછ યેદેવાની સંપૂર્ણ ઘણી હોવાયાં, તે કાણનમાં
અભ્યાસ કરવાનાં છાંગણાની કલ્યાણાત પુરવા પચાર આપ-
નારી નેકરીઓ મણી રહ્યી હોવી વિદ્યાર્થીનેને
આ લાઇન શિવાયની હાંચી ડેળવરીથી જેનર્યુલન રહેતું પડે
છે, તેથી આપું આતોણીની રૂપોને રથ્યે રથ્યું બચાવી પડી
જારૂ છે, તે ક્લાસિફ ઉપર ડેન્કસ્ટેન પોયા રીતે સમાજનું
ધ્યાન ચેંચું છે. એન્ફ્રોનેન પોયે આ વિષયમાં અંકડાઓ
તથા કિગેને સારી પ્રક્રિયાપણ સમાજનું ખાન જેણો તે
અભ્યાસ કરી બચાવું રહ્યો હૈ.

ହେଉ କେବଳପଥୀନା ଏବେ ଅନ୍ତିମ ବିଅଳେ ଉପର ପଥ ସମ୍ମର୍ତ୍ତୁ ଲକ୍ଷ ଅନ୍ତରୁ ଜର୍ଦରୁ ଧାରୀଙ୍କ ଛିଲେ ଯୁଗୋପ ତଥା ଅଗେ-
ରିକ୍ତ ପି. ଆଶାର ସଥିବା ହେଠାମ୍ବେ ଫେଣାପଥୀ ଆପନାରୀ ସଂଶୟକେ
ର୍ଥାନିକ୍ ସରକାର ତରକାରୀ ତେ ରଥାପଥଙ୍କ ଛେ, ପରିରୁ ଚାନ୍ଦାନ୍ ପାଇବାନ
ପାଇବାନ ତରକାରୀ ପଥୁ ଦେଖାଯାଇବା ଆବଶ୍ୟକ ନାହିଁ ଯେବେ ହେ
ଅନେ ଲାଜ୍ଞାନୀ ରକ୍ଷଣେ ଲୁହା ଲୁହା ଯୁଦ୍ଧ ଯୁଦ୍ଧରେ ଭାଣୀନେ ଲୋଲାପଥୀ
ଆପି ସଂଶୟକେବାମ୍ବ ଅର୍ଥେ ଛେ, ଏବେଳେ ତେ ପରେଶାନୀ ପଥିବାନେ
ମେହା ଲାଗୁ ଫେଣାପଥୀ ମେହା କରି ଦେଖାଯିଛି ତେବେଳା ଯୁଦ୍ଧ ଯୁଦ୍ଧ
ବିଦ୍ୟାନୋମା ନିଷ୍ପତ୍ତା ବାନ କେ କବଳ ତର୍ଥୀ ଦେଖାଯିବା ତେ ବିଦ୍ୟାନୋମା
ଲାକୁ ଲାକୁ ଲୁହା ଲୁହା ବେଳାମ୍ବ ଦେଖାଯିବା ମେହାକେ ଛେ ଆପଥୀ
ଲାମ୍ବ ପ୍ରତି ତରକାରୀ ତାହା ସଂଶୟକେ ରଥାପଥାମ୍ବ ଆଵତି ନାହିଁ
ର୍ଥାନିକ୍ ଆପବାଇଥେ ସଥପାତା ହୁଏ ଦେ ତେବେ କିମ୍ବା ପ୍ରତିନା ନିରାକାର
ହେବୁ. ଯତାନେ ଲାଗୁ ହୁଏ ପରିରୁ ନିରାକାର ମାତ୍ରେ ସଥପାତା ନବିରାପା
ହୋଇ, ଆପି ର୍ଥାନିକ୍ ପିଲ୍ଲା ହେଠାନୀ ଲାଗେ କେନ ତେବେ ତରକାରୀ
ପଥୁ ଦେଖାଯାଇବା ଆବଶ୍ୟକ ନ ହେବ ତେ ସଥାକାନିକି ଛେ, ପରିରୁ
ଦେଖି ପ୍ରାଣନୀ ଲାଗେ ଭାଣୀନେ କେନ ହେଠାନୀ ଫେଣାପଥୀନୀ ସଥ
ତରକାରୀ ସଂଶୟକେ ଜୋତିବାନୀ ଆପି ଆପବନ୍ଧକତା ଉଭୀ ଥାଏ
ଛେ.

જુન્નેર કોન્ફરન્સ.

દીકુસ્ત વર્ગ અને રા. 'મૈટ્રિક.'

આવા હેઠાથે "ધર્મિ"એ હેઠાનો હેઠા કરતાર આપાપર મેડિયો અને જલતાને હસ્તાતું કરયું આપે એમાં જરા પણ કાસનપિતા હોય છે. મરેખર આખી જાળત દી વિચારીજ જલતાને કષમ આવી પહોંચ્યો છે. આ સમયમાં ડેઇની ઉશ્રેષ્ટાને તથે જરૂર હોય નથી. જેન જાચન કરી નવસુધને ન આપીજાનાર આખાની શકે નહિ અને આખાની જરાના ડિપદેશને તથે બાબામાં અસુધાની કિંમત બાધ છે જે વિશ્વાસ્યા નેત્રું નથી. નવસુધાની તેનું ગંગાની છે અને જાતના જિંહાનો. ડેઇની બાંધા હે, તેવા વખતમાં આપણો આટાવાના ડેસ્કને ચુંચી નાખવી એ બને નહિ. એને નહિ. શેને નહિ. જરૂર હોય છે, તે ઉપર વળા તેથતું હીપું શામાટે પૂકાય છે!! કાષ્ટેલર લહત ડેમ આપું તેના પાછો શીખાની વાત તે જાણું ઉપર રહી, પણ હજુ એકાય પણ સુંતા આવકાતા નથી, તેવા વર્ષને આ કંઈતાં સ્થાન ન હોય. આખારે તો આપાપમાંના ચેરચાના મંદિરા છે અને પ્રથમ ઝાંસિ બારાંને ઉભી છે. જાનાગૃહિતા જાંમાં જોતાના નહિ બાબે, પણાનો નહિ નબે, જાંમાંનો નહિ કાસ આપે, જાંમાં તો ખરચીર સમજું વિશ્વિષયોત્તું કાર્ય છે. આ જમકલાનાં સંચાલક, પ્રેરક અને અને ડિસેપ્ટ હજુ પણ વિમાર કરી પોતાતું સ્થાન સમજું પેસી રહે, જાંમાં જમકલાની કિંમત કરાવતી હેઠા તે મેદાને જંગ સર્વ માટે જુલ્લાંન છે. વિરાસત આધિવેશન ઉપર આ જમકલાની જરાપણું અખર નથી બંધ અને એ જમકલાને પરિશ્વામે એની, એના ફર્પાવાદોના અને એના ઉપર પ્રેમ પાયનેનાંની કિંમત વધી છે એમ વાગે હે. અધીકારીના અનુયાયીએ અને ઉપરોક્તા હિંસાતું જરૂર સ્વરૂપ સમજાને એકને આવા આટકાગા સ્વભાવ શાંત બધ પણ પાંચ જરી. અને તો વિરાસતોને વિજાપુર છે. ઉપરના જમકલાની અખર એ બંધ કે જુલ્લાંનું અનેક જુલ્લો આપે રહેણી વાતના પ્રથમ જરૂર હોય છે. એ રીતે એવા તેણના ઉત્પાદકા અને પ્રેરકાંએ આધિવેશનપર આસારની કોઈ ગંગાય.

ધર્મિએનો અને ડેઇનીઓનો મુલાકાતો આવે જાંચે રાખી વાચ્યામાં આપે છે ત્યારે કહેવતા "ધર્મિ"એ મારે પણ જ્ઞાની બાધ છે. જેમના હિતારું આપે જાણી જાતો હેઠાવના વેપલસથા તો અરેખર જુના જમાનાના જેશાને પણ રાખમાંને તેવા છે અને પ્રભુભાના જ્ઞાનાંની હૈરાત કરું વાના આખી "નાનીશ્વા" હેઠાય છે. સિક્કટરીની ઉદારતા, શાંતિ હેઠાવતીની ચીંદાઈ અને જુંબાદું કાઢતાની પદ્ધતિ મારે ગાન ઉત્પન્ન બધ તેમ છે.

ડેન-રન્સના ડેટાબેસ હેઠાનો પર વિસ્તારથી વિમારાણાની જરૂર છે; તેપર હોય પછી યાચાવકાશ બાબી કરવાની જાવના રાખી જાને રિસ્મીએ. એક વાત આ પદ્ધતિનાં બંધ કરતા કરી દેવાની છે. ખાર્ચ કરતાની આધિવેશન બંધું બધાયે અરજન નીવધ્યું તેના કારણે પ્રભુભાઈની શાંતિ, મહારાજિયાં બંધું-એની બધાયા, કાર્યવાહીની હાજરી અને નવસુધાની પ્રગાંભિક લહત જરૂર પાલાવટાની શીરણ વિશેરે છે—એ ઉપરંતુ બીજાનાંનાં એકને કારણે, પ્રથમનો અધિવેશન બંધું બંધું છે અને જ્ઞાનું પૂરાયે મળ્યો છે. રિવાય મહારાજાનાં જરૂર-મખાંનિ જેનાજાનાના પ્રગતિના ભર્તિકાલમાં એક સુંદર પ્રકરણ પૂરી પાડતી હોઈ વિરદ્ધમધ્યું રહેશે.

[શ્રી "જીન ધર્મ-પ્રકાશ"ના દ્વારા માસના અંકગાયિ]

એ પીતણનો રૂપીયો?

મુખ્યમંત્રી જેન પ્રલ સારી રીતે એજાયે છે, તેણાથી તાર્થ-૧૭-૩-૩૦ ના મુખ્યમંત્રી સમાચારના અંકમાં, જેન ચ્યાર્માં એક જેન ક્રેસ્ટયુનિટના વિચારનાની નોંધ હેતા બંધુ છે—“આ આપને જુનોર ડેન-રન્સના દીક્ષાના કરાવતા અંગે જરૂર જાગી-જાગતાથી તેમના હલ્લ ઉપર સમજ આપતા થયો હતો અને તેણી તેમનું મરણ નીપણું” તેમ તેણો બંધુ છે કંઈ અમેન તેણાથીના મરણ માર્ગ આપ્યો છે. પરંતુ મંત્રું એ અનિવાર્યો છે અને જુનોર કર્મનો પોતા પૂર્વું થતી જીવ કર્તાનુસાર ગતી કરે છે. એર્બના આ આત્મ સિદ્ધાંતથી હોઈ સુંદર નથી, આ વાત લેપાડ મહાશાય જુલ્લી જાય છે.

મરનારની પછ્યાં તેમના ચુંદોપણું વિવેચન કર્યું એ અયોગ્ય ફેલાવાં; પણ જેન વચ્ચેના લેણા મહાશાય આ મરણની નોંધ એજાયેના પ્રકારે રણું કરી છે, જેણી નાચેની નોંધ વેણીની રેલ પદી છે, આજીની જરૂર વર્ષ પહેલા બીજું જરૂર વીર્ય પર રિપટિના વાળ વેણીની હતો અને કી સંઘને પાણી લાગે કરાવતો હરાણે પદી હતો હતો, આવા અતિ હુંઘદ પ્રસંગે આ વાંધેની આધિયોગીનાં ડેઇનાં લુફતો આપતા હેઈ અને છે. અને આ જુનોરના દીક્ષાના કાર્યવાર્ય જાગીની કાંઈ શું અયોગ્ય હરાણ કર્યો છે કે કોઈ જીવનપ્રેમીનેના હલ્લનો જ્ઞાસ થાપ. માતાપિતાની જાગી અને સ્થાનિક સંઘની રૂલ એ દીક્ષા બેનારાની આપકારાતું સુખમાલાપણ છે. તેણી તો દીક્ષા આપનાર જરૂર, દીક્ષા બેનાર રિખના એપાયેશીલા વિશેની જિંતાથી સુધી થાપ છે. સો ટયું સુંબધું છે એ આજી થાપ પદી શીર્દી કીર્તિ વહેનારમાં પણ પ્રથમોનાં પાશ્ચાત્યાં જાગુસની જરૂરીઓને જાય જાગુસની જાયામધ્યાતાના માધ્યમાને પુછું સ્થાન મળે છે, એટેને જુનોરમાં બીજી ડેન-રન્સને દીક્ષા સંભાયે કરેશે હરાણ આ દ્વાર્ધી પણ દીક્ષા આપનાર સંઘને તો સાંકુળ થઈ પડે તેવો છે.

ધર્મિ જેન ચયાના લેપાડ મહાશાય તેજ અંકગાં બીજી નોંધ હેતા બંધુ છે કે. “વહલાનિયાના પાશ્ચાત્યાંના એક હલ્લ કાંઈ લહત કરવાના છે.”

વહલાનિયાના એક લહતી? આગ વર્ગમાં બધવાનો તેમનો ગું હેતુ છે, તે વાંચારાની જારી રીતે સમજું કો તેમ છે. હું એ લેપાડ મહાશાયને પુછું જું કે આપણે નામ કીર્તી, જીવાની બાંધનો હેઠા છુંબા, કયા અથ સહયોગ્યુથી અનેલા કીર્તી? શું આપણે મહાશાયના જરૂરીઓને જાય જાગુસાયાં માધ્યમાને પુછું સ્થાન મળે છે, એટેને જુનોરમાં બીજી ડેન-રન્સને દીક્ષા સંભાયે કરેશે હરાણ આ દ્વાર્ધી પણ દીક્ષા આપનાર સંઘને તો સાંકુળ થઈ પડે તેવો છે.

૬૦. રિવલાલ લહત શાંદ.

આવતો અંક વી. પી.

ચેલ્સો સન્નેનો અંગે આ અંક વી. પી. થઈ જાને. હવે ને આહોની ના આખી નહીં હેઠા તેણેને આવતો અંક વી. પી. થી રનાની કરવાની આવતો, કાર્દિક, લાગજ, તથા પોષ અખીના નાં. ૨-૩-૦ નું વી. પી. કરવામાં આવતો, વી. પી. આપે દેરેક આડો ડિકાની લેણી, તેવી અમે આખા રાખીએ છીએ.

આરોગ્ય પ્રદર્શન, જુનનેર.

જૈન સેનેટરી એસેસીમેશન તરફથી નીમાપેલ આરોગ્યાત્મક શાળ દેવાવાની કનિષ્ઠિઓ જુનનેર મુજબે આરોગ્યાત્મક પ્રદર્શન કરી હોય. માણ્યકલણદાસ મહેતાને પ્રમુખરચાન આપી, આરોગ્યાતાના વિષયમાં જૈન કેવ માર્ગ રૂપ કાર્તિની ડેટલી જરૂરીઅન્ન છે તે સાચીત કરતા ડેવિકો કરી હતી. આરોગ્યાતાના વિષય વિષે એક મનનીય આપણ મીં મહેતાને કહું હતું કેન્દ્રાંથી ડેટલાક રૂફશેનો વ્યાપી નીચે મુજબ ટાઇકે છાયે.

“પોતાને મહેતા શક્તિ અને રવતાંતરાથી સ્વચ્છાંહી અનનો મતુષ્ય કુદરતની રચના અને નિષ્માનું કિલાંઘન કરતા લખાય છે અને પોતાની મુહુ પર વિશ્વાસ રાપી અનુકુદ્રતી જીવનજીવહાર કરતાં અચક્ષતાની નથી. પરંતુ કુદરતના નિષ્માને તો વિશ્વાસ સૌંદર અને જીતન્ય માર્ગ એક સરખાજ છે તો મતુષ્યને તેના હેઠળ અનુકુદ્રતી પગલા માર્ગ સહેતું પડે છે અને તેથી તેની જીવનશક્તિ તેટલી મોઢી ચાંપ છે.

* * *

માનવાંદી મંત્ર એકલે અસ્થી અને જ્ઞાનુંથી, જરૂરની અને પાડી, રક્ત અને તથા, મોકા અનેક અનેરા તરફાનું મતુષ્ય કુદીતથી કરાપેલ સચીજાન. તે કંગાં જોણાપણા હણ કે દેહસા, પગલ કે મુખુંથી, હોલ્લરી કે આંતરાય, હાથ કે પગ કલાદી નાના મોકા અનેક મહેતાની આવેશાસ કે ઝાંખીયાં ચેરણું કિથા, પાયન કે વિસજેન કિથા, જરૂર કે અતિ કિથા, મોટીલાં અદ્ભુત અને અસ્થોડિક હિસ્યાંથી જીત ચાંપી રહી છે કે કેનો વિશ્વાસ કરતાં કુદરતની રચના-શક્તિના પ્રકાશમાં મતુષ્ય મુહુ મુજબ થઈ જાય તો તેમાં નવધનથી. વિશ્વભરના જ્યા સુખોના તરફે અને તેની શક્તિએને આપાંથી શીટ ડિલ્યા, દેંડ શીટ ફેફળા અને જોંડાં શીટલાં જ્યા જ્યા મજૂરુના માનવહેઠમાં જોકીને કુદરતે પેટના હાથ ધોઈ નાંખ્યા છે.

* * *

આમ રોજકુમારની જે સત્તા અને શક્તિઓ પણ અદ્ભુત વિનાનો એટલે આત્માન એવો કુદરતને રોજકુષર રૂપાંહી બન્યો. આત્માનમાં દ્શાંદી મારણા જીવનનો સરગાવિક ક્રમ મુખ્ય અને તેની સાંતિ અને રવસ્થાના નાઃ ચાંપ અથી માનવાં મતુષ્ય સ્વભાવિક સુખ નાઃ ચાંપ તો કુદીમ વિશ્વાસ મેળવાના મતુષ્ય પ્રકાન કરે, ક્ષીંબક સુખ મળે, પરંતુ પરિચ્છુદુન તો મરતા વીધાન ચાંપું મારી આવેશાસ કરું યાદ.

* * *

જૈન ડેમના આ લાખ માયુલોમાંથી સોંકો કુદુંઅને આમુલીક રાહત ક્રોદીદાસ મહા આપી શકાય તો તેટા કરુંઅનું કેદુંઅનું અથી અને તો ઉપરંત ડેટલી જીવનશક્તિ નાના પ્રામારી અટકે તેના આંદકોણ કાઢવા ગેસીએ તો મળી મુંઝાં જાય છે.

* * *

બેલેલું, આપ્યાં વર્તનમાં ઉત્તારવાનો સુમધુ આપી લાગ્યો છે, આવા અનેક આપણો કરવાથી વસ્તુરથીલિ સુધરવાની નથી. દર્દીના ખીજાના પાસે હું જાય થયું હું જીપાય કરવેં હેઠળી એવી નથી—માન કરવાથી દર્દીને આરામ થતો નથી પરંતુ દર્દીની ચિકિત્સા કરી તેનું ઝોપથી આપણાં આખું+કરવાથીલ આરામ થઈ શકે છે.

* * *

આવ સુંદર આપણ માર્ગ ડા. મહેતાને ધન્યવાદ આપીએ છીએ, જૈન નીતિને મળતું આરોગ્યાતાના તરફે દ્વારાનાં અને એક જીાલ સાથે એલાગેત કરતા આ ભાષ્યના જેટલા વણાંદુ કરીએ તેટલા જીાલ છે જનતાને આવ આપણુંના લાભ આપ્યા અને સેનેટરીએ લગતા શાનનો દેખોયો કર્યાનો અમ કેનાર કનિષ્ઠિને પણ ધન્યવાદ ઈંબી જનતાને તેમાં રસ લેવા વિનાંતી કરીએ છાયે.

શ્રી જૈન શ્વેતાંધર કોન્ફરન્સ

ગતાંકમાં અમે પેટા કનિષ્ઠિની ચુંટણી સંખ્યાંની કારીત આપી છે. તે પેટા કનિષ્ઠિઓ માર્ગ ચુંટણેણ કાંચોના નામે એ નાચે આપ્યા છે.

સુંદર જાંદર ઇંડ કમિટીના નામે.

શેડ લલુભાઈ કરમચંદ દલાલ, શેડ ગુલાભચંદ લાલાલ,
,, મથીચાલ મેતીચાલ સુલલ, „ સુનીચાલ વીરચંદ,
,, શતનાય દ પીમચંદ, „ અમ્ભાયં પેમચંદ,
,, નાનજ લાલાલાલ, „ નાનીનાસ કરમચંદ,
,, લાલજ લારમચંદ, „ અગામાઈ પ્રતાપચંદ,
,, મિથજ સોનચાલ, „ સાકરચંદ ગાંધુકચંદ,
,, દેવજ પેકરચંદ સુલલ, „ કાલીનાસ ચાકરચંદ,
,, ગોચિંદાં ખુલાલાલાલ, „ કાનજ હિંદોંગ,
,, વીરચંદ પાનાચંદ શાલ, „ પુનશી લીલજ જેનીચા,
,, જગનાદાસ અમરમચંદ, „ પડીન લાલાલ,
,, મધુલાલ ઝોકમચંદ, „ શેડ ગુલાભચંદ લિંગ,
,, ચીમનચાલ સીરચંદ, „ કાનજ કરમચારી માલાર,
,, અસુતચાલ કાલીનાસ, „ મગનચાલ સુદુરચંદ શાલ,
,, મેલનચાલ હેમચંદ જેનીચા, „ વલજલાસ કુલચંદ,
,, મુસુંદ સંખમચંદ, „ વીરચંદ કુલચંદ
તથા રેસીન્ટ જનરચ સેનેટરીઓ.

કાર્યવાહુક સભિતિના પેટા કાનુંદો વધનારી કનિષ્ઠિ.

રા. મહેતા એ. મહેતા.
,, ચિનુભાઈ લાલાલાલ,
,, પરમાયં કુલચંદ,
,, નાનજ લાલાલાલ,
,, કિનેદેવ હી. અસેવીયા (સેનેટરી.)
જૈન સુગ અને પ્રાણીન કાર્ય સંભિત.
રા. પોદેલાસ લાલાચંદ દેશ કુ.
,, સેતીચંદ મિ. કાલીનાસ,
,, એધેચંદ પનજ શાલ,
,, જગનાદાસ અમરમચંદ,
,, પરમાયં કુલચંદ
તથા રેસીન્ટ જનરચ સેનેટરીઓ.

લાલજમ

લાલજ (દ. એ સાથે) રૂ. ૨-૦-૦

સંઘના (સ્થાનિક) સંખ્યે માર્ગ રૂ. ૧-૦-૦

આ પ્રાણા જી. પી. જોયલાયાએ “સ્વરદેશ” ઉત્તીજ પ્રેષ, નાયા બીલીયા, મશ્કાંદ અંડ રોડ, માંદાં, મુંબાં, ના. ૩ મધે આપી, અને જગનાદાસ અમરમચંદ જાંધીએ મનહર પિંડીન, પ્રીન્સેસ સ્ટ્રીટ, મુંબાં ના. ૨ અધીયી પ્રસ્તિ કરી છે.

મુખ્ય જૈન ચુવક સંઘ પત્રિકા.

તંત્રી : જમનાદાસ અમરચંદ ગાંધી.

વર્ષ ૧ લું :
અક્ટૂબર ૧૩ મે.

સંપત ૧૬૮૯ ના ફાગુણ વર્ષ ૧૦.
તાં ૨૪-૩-૩૦

ખુટક નંબર :
૦૧ આનો.

નાંધ અને ચચ્ચી.

ચાલુ માસની આરમ્ભી તારીખે મહાત્મા ગાંધીજીએ સત્તાગમ કુદાનો આરાંભ કર્યો છે અને માનુષને ઝાડો જલાલપુર આતે તેઠાના આશાયથી ઉર્ફ કલાકાર સ્વદેશીઓને સાથે લઈને અમદાવાદથી કુદા કરી છે અને ધારેલું ધેર ચિહ્ન કર્યા તિથાય સત્તાગમ આશ્રમમાં પાણ નહિ કરેણાની પ્રતિબાની લીધી છે. આજા દેશમાં આજે નવા ઉત્ત્સાહની અરજિ શરીર માર્ગ છે અને સ્વદેશી સ્વદેશીઓના નામ નેધાયા માંદાનો હોય. મહાત્મા ગાંધીજીની કુદાની લઘુ જેન જાહેરો હોય. ૧ થી ચાલુ જોવિંદું દેખાઈ, ૨ થી રમણીકાલ મોદી, ૩ થી પણાલાલ જરેરી. આ વધુ બાંધુઓને અમારા અનુભૂતિના અભિનન્દન છે અને નવા વિભાગમાં તેઓ અનુભૂતિને, કુદાને તેમને ખૂલ્યું કરે જેવાની અમારી શુલેચણ છે. આ પ્રશ્નાની જેન અસુધારને અને તેઠાની હાજરી આપ્યો છે, આજા અનુભૂતિની રીતે કરી રહેલી પરાક્રમ માર્ગ બહેન લીલાવતીને ખૂલ્યું ધન્યવાદ પઠે છે. આ લીલાવતીની પાંચ પેસેન્ટ્સને બેસ કરતા, બહેન લીલાવતીની ઉભ્યર ચેદ વર્ણની છે અને તેથી કસ્તરની સારી તારીખ લઈને પોતાના શરીરને સારી રીતે ડેણાનું છે. ઉપર જણાવેલ અસ્થાયાંથી પરાક્રમ માર્ગ બહેન લીલાવતીને ખૂલ્યું ધન્યવાદ પઠે છે. આ લીલાવતીની પાંચ નેંબિ એટલા માર્ગ કેવાળાં આવે છે કે આપણો આજો અભિજાત કરીરે ખૂલ્યું નાણો નોચમાં આવે છે. કન્યાઓ અને કસ્તર એ તો અથે કે પરદ્યા વિરોધી ઢોય તેમ કન્યાઓને તો હમેશા શરીરિક કસ્તરથી દૂર રહ્યાનો આવે છે. ખાલ્યું ખરું આપણી કન્યાઓ તેર ચીએ વર્ષે નિયાળે ખરું છોડે છે, અને સાસરે જેમ અને તેમ કલિદિયી સીધાવવાના સ્વરૂપો સેવે છે. એટલે કે કન્યાઓના શરીરિક વિકસની તો ડાઇ ચિન્તા ધરતું નથી. આવી પરિસ્થિતિમાં ઉપરનો જેનાન અભિજાતની ગણ્યાવેલ લેખણે, માનુષોના ચિત્તમાં કન્યાઓની શરીર ભીલાન ધૂંપણી જેણે અને ઉંગલી ઉભ્યરની બહેનોને બહેન લીલાવતીના દ્રષ્ટાન્તરી ચેતનોતાના કંઈ રીતે વિકસનવા માર્ગ ખૂલ્યું નોચમાં.

શ્રી મુખ્ય જૈન ચુવક સંઘના આશ્રમ નીચે

જૈનોની જાહેર સભા.

સ્થળ :—દુર્ઘે પણી નક્કી થયે જણાવવામાં આપણો.

સમય :—શુક્રવાર તા. ૨૭-૩-૩૦ રાત્રીના (શા. દા.) ૮ વાગે.

વિષય :—અધારણી સમયબમ્બ.

વક્તવ્ય :—અધારણી દૃપલાની.

સભાનું પ્રમુખસ્થળ શૈદ જમનાલાલ પણજે મહેરબાનીની રાહે રાવીભાગું છે.

જરૂરી આધું બહેનોને પદારદ્ધા વિનંતી છે.

બહેનો માર્ગ અલાયદી જોખાનું કરવામાં આવી છે.

લા. મંત્રીઓ.

પણી કન્યાઓ તેર ચીએ વર્ષે નિયાળે ખરું છોડે છે, અને સાસરે જેમ અને તેમ કલિદિયી સીધાવવાના સ્વરૂપો સેવે છે. એટલે કે કન્યાઓના શરીરિક વિકસની તો ડાઇ ચિન્તા ધરતું નથી. આવી પરિસ્થિતિમાં ઉપરનો જેનાન અભિજાતની ગણ્યાવેલ લેખણે, માનુષોના ચિત્તમાં કન્યાઓની શરીર ભીલાન ધૂંપણી જેણે અને ઉંગલી ઉભ્યરની બહેનોને બહેન લીલાવતીના દ્રષ્ટાન્તરી ચેતનોતાના કંઈ રીતે વિકસનવા માર્ગ ખૂલ્યું નોચમાં.

ઉત્સાહી જૈન ચુવકનું અવસાન.

આવનગર જેન કુદા મંડળાના રથાપક, જેન નાઈટ કલાકારાના કાર્યાલાય, સરળ, સ્વભાવી ને સાડું અધિન ચાળનાર ભાઈઓની નરોતમદાસ સાક્રમણ રેસાના અધ્યાત્મ ખૂલ્યું માર્ગ અને અધ્યાત્મ રોક થાપ છે. પરમાત્મા તેમના આત્મને કાનિત અર્પે તેવી પ્રાર્થના છે.

તેમને માર્ગ આવનગર જેન કુદા મંડળી તા. ૧૫-૩-૩૦ ને રોજ દીકળીની માર્શિયિત કરનારો કારાવ પસાર કર્યો છે.

મુખ્ય જૈન શુદ્ધ સંબંધ પત્રિકા.

પણપણો ન મેળે ન હેઠાં કપિલાવિષુ ।

શુદ્ધિમદ, વર્ચર્વ વસ્ત્વ તસ્ત્વ કાર્યો વર્ણિષ્ઠા ॥

અભિભૂત હરિભદ્રસુરિ,

જુન્નેર ડોન્ફરન્સ.

દ્વારાની સમાલોચના.

આ સમાલોચના આયાની સંબંધાત્મક પહેલા ડેટલાઈન હાઈક્રોનો ખુલાસો કરવાની જરૂરી છે. જેનાં સમાને આ કાર્યાલાયને અથી રૂંશું કરવાતું છે. ખુલ્લોએ આ દ્વારાની અભિને અગ્રે રૂંશું આય કરવાનોને છે, તે વિશે કાંઈક ગાર્ઝિલ્યાંડ સુચનાઓ કરવા માટે આ સમાલોચના વિસ્તારથી કરવાનું આવે છે. સમાન્યાં-દેશની સેવા અનેક રીતે થઈ રહે છે. અનુકૂળ પ્રકારનું જરૂરી કરનારાનું અસુધ પ્રકારની સેવા કરી શકે ને બીજા સેવા કરી નાં કરે રહેવી માન્યતાએની અભિનેત્રી છે. કાઈક્રોને દ્વારાને તે બાણતમો બલ્લું આગ્રી શક્ય રેખ છે. વધારે સારી, વધારે ઉમદા વાતાં અની કોઈ તો કર્યાં કેન્દ્રિય ના પ્રદૂર્યું નથી, પણ હેઠાં બોડું સાહેં કરવા જરૂરિયાના હેઠાં તે કર્યેં તો તેની સામે આંખમાંચાંચાં. કરવા તે કે નથી. હેઠાં પરદુ પેટપોતાને રખાને જરૂરી છે. ચાહું સંસ્કારોને બાળોનાંખાંની કે સુધીંદ્રાં તુલ્ય જનાવચાચી કેન્દ્રનું બલ્લું થઈ હોય રેખ અમે માની શકતા નથી. પ્રદમં-સર્વશાને જાણવા પ્રત્યક્ષ પ્રયાસો કરવા ઉપરાંત જાડી બીજી શક્તિએ અભિનેત્રાના દેખના હિન્દે માર્ગ રાખ યોગી લલાતમાં વાપરવાની લોલ્યે અને તે સુધીંદ્રાં કેનું કુબળને તૈયાર કરવા માટે પ્રયાસો કરવા નોંધયે. આપણો ઉપરોક્ત ડેલિવાની સંસ્કારોની આ કામ સાહેં કરી શક્યો. હું કરાયો ઉપર આપણે. ડેલિવલ્યું પછી હાજી પ્રીણને રેખાને કરવાના જરૂરીયાની રોણાં તે રીતીભાગે હિંદુઓ ગાંધીજીની હેઠાં નોંધયે, પરદેશી કંપનીઓની માનેકાનાં ન હેઠાં નોંધયે, લેખી કરીને હિંદી વાદ્યાવટાનો ઉલ્લેખ સારી રીતે આપી શકે ને તે રીતે પરદેશ જરૂરું મન રેખાનો રહેવાચી દેશની રીતિની દુર અધારાં બોડી પણ્યો મદદરૂપ નીચે. જોસે વરસ પહેલાં આ કાઈક્રોને અગ્રે બહુજાં આરી પરિદ્ધિતિ હતી; તેને બહેવી અસારે વધ્યો કંગાળ રિષ્ટિત છે. અની હેરોની લાંબી સરકારોન આ ઉદ્ઘેરની પીંફાંથી માટે પ્રયાસો કરે છે. આપણે ત્યાં પ્રલક્ષીય ચાલાસ્ટોને આવી રહે. આર્થાતો બીજે વાવણી પડે હોય. નથી વર્ષાંથી બીજે પસરાયા હોવાની હેરોની જુદી સ્વાર્થી તરફથી અગ્રવઢે સુક્રાંદી

આવે છે. પ્રદમં તરફથી સારા પ્રમાણુમાં ડેટ આગવાનો આવ્યો છે, તે પ્રમાણું કેનું ડેટ તરફથી પણ ડેટ આપવો નોંધયે. તેનું રાન્ડરસ્ટાન્ડ એક ગળી નહોતી ને આગળની રૂણાંગ કરિયા આવા વિષયમાં વિચાર કરવા કે ડેટાવ ફરવા ને તેના કાર્યો શીખાની જંડારનું બજુલી હતી. કેનું ડેટ વાપારી ડેટમ છે, આ સારા વાપારને બગતો છે. હિંદુસ્તાનના કુદુર કુદુર વિલાંગેના અરેકાપરસ મેડિસાત્વ માસમો એકડક્સ કાળ નેન ડેટ માર્કેટ જાતો હશે, એટથે કેનું ડેટે આ બાધાનું દેશખાંગુના કો રચાયિત. કરવામાં અશાસું કલ્યાણી દેખને તથા ડેટ પન્નેને લાલ વધારે સાથે સંબંધ આવે છે. હાંડિના સમય પછી માટે પ્રદમને લાલ વધારે સાથે ચાપણી કાંઈક કર્યાં હોય છે. કેનું ડેટ પાસે પ્રદમને લાલ વધારે હિંદીશાધમાં કરી રાખવા માટે નોંધતી સ્ટીલરોને નાહોયાને લીધી માંદું જોખું કામદાન મેળાની રૂપે છે. આ સાવાનજ એવો છે કે લેખાં સાધને સુંતાં ન હોય તે રાણીંગ કંપનીને પણ પણ રીતે હેઠાં કાંઈક કરે છે. કેનું હેઠાં વારે બાંધિકારનું રાખે પણ બાંધાંગુને છે, અસપણી પ્રયાસો-વેપારીનો એવો સુધી હેઠાં તો ન હોય નોંધતો હેઠાં પેટોં આપણે પણ પણ કર્યાં હોય કર્યાં. પટોંની કંપનીનો, આપણું બાપારીનો પેતાના તાણાની કાયમ રહે, તેવી અનેક શુક્રિયાનો વાપરે હોય. તુરમાણી રીખેટ આપણામાં આવે છે તે રીખેટને માર્ગ રેખાની કે આપણા વાર્ષ દરમાન કે સાથ નર્ગાંની હોલ લેના દુલે અગ્રે કે વાગતરના પેસા એકડા આ હોલ તે વિશ્વા બીજી સાલમાં તે હંપનીની રીતીમાં માલ અંગ્લાંકારનું બાંધું રાખે રેનજ મળે છે. આ રૂંગે કાંઈક નાની હોટી નથી એટથે વાપારી તે છોટી રાખવા નથી. કીદું રીખેટ, શીરસ્ટમ અથ કરવામાં આવે તેવો કાયરો વધારે જરૂર હોય. આ બીજી હુંકારોને અગ્રે જાતા વધારોની વાંદું હોય કેનું ડેટાવ કરવાની આંગારીની જુદી હોલી, અનેને આચા છે. કે ડેટાવ કરવાની આ સંખ્યાની રૂણાં પૂરી યોગી માનવાની જુદું હેઠાં કાંઈક હોય નહિ તે રોણીંગ કરિયા, આ આજાતને અગ્રે વેંગ અંગ્લાંગ રિષ્ટિત માર્ગની કરતી હોય.

રાષ્ટ્રની હાકલ.

મહાત્મા ગાંધીજીએ સેવિના લાગે માર્ગ પ્રથાઓ કરી શકતાની રીતની વિચારોને જાર્યુ પડ્યે આપણા કરેલા માટે હાડેલ ખાડી હોય છે. હિંદુના હાતિલાંબા જેનું કાંઈ નવિન હિંદુ સુયોગ ઉત્તે અને અને અભિના કૃષ્ણજીની—આવેશભર્મા સુવાન હલ્લોને ફાળે વાત્યાની પ્રમાણીયાની રહેતી હતી અંભલ છે. આપણો જૈન કૃષ્ણજી રૂપ કરી શક્યો હોય એ જો હાણું વિચારી કરતું અને અને કરતું હોય જેવાનું છે.

जन्मपूर दृश्यमानमा आ। महान सत्त्वा जीवन्मान संभावना
लील अवतारोना रनेह कृष्णी लध, दृश्यमानी चंचल्यमां रथवं
सेवको मेणवया भाँड्या के अने अभ्यां किंहु शुभे भुखलभान
शुभ-अवतार तो। पारसी-जैन अने विश्वी ए अधी ढेने साधा
आगी कर्पूर वदावी लीपुँ छे, त्यारे सांखण्या भुखल अवध
भागमां मुनि वैष्णविष्णु एं “कीरत्याक्षने खम्” विवक्ती नहेक्को
हरे को अने गार्थीकृ लेवा सत् प्रपृथ सामे हुया फाल उराए
छ, येवाज रीते अभातमां समरक्ष भाडी पहेरवामां पाप
दशामे छ, युक्तिने नासित्तो हुए के अने न्यायविष्णविष्णु
लेवा समयम् साझ्ने गार्थीकृ अने मुक्तिनाला फाल उराए हुए।

वाता वातामो “आगम विश्व क्षमतायी कृष्ण पत्नी
हृषीकेशी वाता करनारा आ आगमवाहीजो, क्षमा आगमना
आधारे हैसी आ, यगदलापर, प्रोत्तनो अविक्षेप दृश्यां
रक्षा, उत्ते नक्षी सुभग्न गांडातु ?

जो तेवा क्षम्भो वापरी हृष्टार्थ हैपाठी के अन्न वेवा अंकटोने धर्मना नामे गये तेवा जगत्तावनु येमालि पौत्रिकी अविष्टा मानी रखा है। आत्मवल्लासु अने गोक्खानी अदी अदी चतो, करनारा अथ शुभामाजोने नांडीकली कार्य पालीने अस्त्राल करवा विनती है, अब येमालि गोक्खा पक्ष छे के येमना लेखु की भालावनानी वार सरणी उम्बारी ढोत तो थी क्षम्भो वापरी हृष्टमा अपर्द विक्रम अप्रभु यात, है के येमालि विनती है के अपर्द शाहेषो डाइ शुभ अप्रिज भी अपेक्षा लेन जलन त फेतो मुक्ति तमाज

નાન હુંકારે રાણી પણ રૂષા બદ્ધચાર કરી હસ્તીપાત્ર નજી
અને પ્રત્યે સમાજમાં નેતૃ ડેમ માર્ગ જીવી ખાપ ન પડો.
નેતૃ પુષ્કર || પ્રસંગવાટ, કહેવાઓ ગંભીર, જ્ઞાનભેદ
લોર સુધ્રાવતું નથી, લારી સમઝ લાંઘીશ્શા જીવારી પોર
છે, જાહી પ્રયત્ન નિદા ત્યાગી કામ કરવા મંડી જાતું છે
યાંદુખમં જાળતાં સમાજ અને સ્વધર્મની સેવા આપોયા
છીની રહેવાની છે, આધી કોમણી આપવાલ પદવાના રવિહિત
ફેસ્થા બેમા અનુભેન હુંકાર, ખુરસીપર બેસી બચ્છા ઉદ્ઘાને
કે ક્રમાંગર હોયા, કરી અન્યાર કે જીવાંદરથી કરેવાનો અસ્ફ
વહી ગમે છે.

जापील केवा जेवा ताप अने आपको हाण्यु आदी प्रतिवान् असु न करी शक्ये जे आही शरमनी तात नवी। प्रेषेह सुरक्षा-सुधार आही अपरेयना नवा देवाव लेल्यांने वाचा मैट्रो शहेरामां ताईहि सुरक्षा आवा उक्का करी देशभरामां याची रुडेल आणि दीवार्यांने वाचाची लक्ष आस तरीने जेवा ज्ञान तपां अने प्रिस्तृत हैवावा उरवा लेल्यो. एं आवे शाई नापेकाना आपको गेठावी तंडा गोववती आपणी सजावती पूर्ण विराटाना पुरांच्याकुवा घटे. संभाषणीय सुविधा आवश्यक आहूति आपला जाहेर आवे, असु वातावरणे पैदा उरवावाना होइ क्षमाले ताप धावा लेल्यो.

“आ, काष्टीता, आरेक्स आवे देवाकरणम्, आली, रहेता परिचयितयो जनताने लालकार रायपामा नामते रहेतापुँ छे, विशाळी कापडाना पहेरेतापुँ जेव गीवह सरभुँ कुपक अंधना, सरस्वती गारीर पर न केलुँ, घेठे ने कुपक देवीना हाडखेने मान आपी ओटुँ पक्ष नथी आवयी कुको ते कुपक तरीक थी सेवा जनती कडवानो छैँ। परदेशी वज्र परिचान इरनार लक्ष्ये युभावा पठे तो ये युभावीने पछां राष्ट्री आजाने भान आपापुँ लेइयो, आजे आपापुँ झुक्खान-गोही कंपनीना जना ने ज्ञानर समर्पणाना घोटा देयो आमे कलम पुकडवाना न होय, जेमनो तो ये व्यव-साध के अने बिंदु होय तो समुद्र कंपवै ये तो या सन्द-ग्रेह न धृत्येनो धृत्येनो रेखा, जेटीने सामाना पुरवाद रक्षाना यानो, जे भवशायोनी साथे करवा जावा ये, धृत्याना व्याप्ति-करवा जेपुँ छे, जेमने नवगजना नमक्कर करी राजधानीने समक्ष, काहित अतुसार डॉन्करेण्टाना यीज फुरावेनो अमर्ज तेव थाय ये साहे काप्पकम धरी येत्ता लाली नपुँ येत्ता कुरडेनो धर्म।

संतनुं प्रथाणु के भाधपाठ ?

આધુનિકતાના સંતોષ મહારાજા જાંધીશ્વરીએ સ્વરેણ્યમુક્તિના અદ્વિતીય બનામા કૃપાલે સ્વરૂપના ગેણવા કે જે અર્થે હોયાએ જવા. પાછળા કુદુરુ શરીરી; એવે વાતથી આગમેન ક્રીદ સુવન્દ અનુભૂતિ હોય કે કૃપાંખે જોતા તેમનો સ્થાનો જાંકું આપણું જોતા ગોપીના નાનુકુદામાં ઉંઘેલા. અને વાત વાતમાં ફેણતાના જીતાની અભિજાત પ્રેરણાને અતિ. અસરાદ્વારક જોખપાદ પુરો પદે છે. જે કૃપાંખે ભાગ ગુરુરાતોને નહિં પણ આરો અસરની જાનક લગાડી છે. પરે જાણીને આપા કરવાનું કૃપાંખે જીતારી પાળના જન્મનું આમીન. સરકારનું ઉંઘસું ડેઝુ જૂણાયક છે તેનું કે પરથી જાન ચાય છે. જે કે જાણે જોવા લોખામા ધસ્તી જાતની તરમ્માનો વર્જી. પદી છે અને પુણી પાતાનું ડેઝાપે. પદ વળી જીવા છે. અત્યારે મહાત્માજાની. જાંકાંથી પરથી જાતનું અનુભૂત અનુભૂત. તેમ છે. કાર્ય મુક્તિ માટેની આંદ્રૂધ, આર હિંદુસેની અંદર બેસી પ્રતીકનાં સ્વરૂપમુક્તિ અને આત્માની જોવા ઉંઘણતાને પદો આપે તેવી છે. જાનન્યુંક રોણીઓની વિદ્યાએ લાભ સીધાવતા સેનિફોન-નાર્કોસ્યુ-પર રેમ્પુ આલ્બેરો, નાર્સી-કૃપાંખે આવતાને જાંબ દશામા રમતા દીક્ષિતો કરતો હેઠળું પ્રણા છે. તે તરેજું પરાખ્યાએ જાય છે. આત્માની જીંબાલી જીંબાલી કરીની તે એક જુદી વર્ષતુ છે જેને જીંબાલાની નનજી. રેવાપે મોણગ્યી સમય આવે. તારે જનતાની નનજી એની કાઢિતું જાન કરાયા જાતાનું. એ. એક જુદી વર્ષતુ છે. આપણું વડેસ્યો. સંતાન પ્રયાણીએ ચેતા ચાલ સમને હે. ન સમને, જીવા પ્રતીક સુરક્ષાની હોય. તેંબે દ્વારા અધ્યાત્મું છે કે જાંદીથાના પણ જેકું વહેલું જીવાનું. વર્ગ ને આત્મા જાહીદારની. નાની કરી જાંદુની. જેના દીનાં જીંબાલી ક્રીટિકાનું સહેલો જોતા મુલે છે તે જીવાનું કલાયાણી સાધનામાં દીની રીતે અધ્ય જીવી જીંબાલી હાતે વીર જમ ધીર જનતાની તાલીફિયી તે હોયો. થઈ જાન. સુધીન અધ્યુત્ત્વ આપે. મહારીએ આવ ધૂઢુંનો હું. તો કસેદીનાં આ પ્રયત્ન પગ્યુંને સંદર્ભથી જુદુબા. મન પાછું પદ્ધું હોય તે ઉત્તાનન. ન. કરે. સાંદ્ર વાળ કે જીંબાલી આદી જીવાનું કંઈ પહેલું. નહિં અને અસ્તને આધ્ય આપ્યા. હાં રેન માત્ર સુધીનું નહિં.

અધ્યાત્મા પર મંદેખા. આ સમરંગણામાં જેન સુધુને વધુ વિશ્વાસાનું હોયાં નહિં. પ્રાપ્ત થેતે આ પર્યક્ષામાં જાંદીયુદ્ધ હોયુંની અનાર સાચ મલ્લા હર નાનીએ. એ જીંબાલી?

॥ लघुग्रन्थ ॥

वार्षिक (६. अ. आदि) ३१. २-०-०

આજાદીને માર્ગ ચુવકુ વગ્.

आपने दुनियाभरमा खुदक वज्रे आत्मजीव र पर निर्भाव
रही, जीवोंमात्री मुकुट यथा अधूषापूर्वक जीतानी प्रशंसनी
वह करी हो, आरतपर्वने उनके वज्रे पक्ष हिन्दी भेदीओ
हेली है। अधिकौ जन्मे हो, हिन्दी स्वतंत्रत्वी लड़ाक
अद्वितीय साधा पर निर्भाव करी, जीताना सर्वविवेदों गोगम
ज्ञापने लगाइ छत्तानो अद्वितीय दासप्तो ऐसाहु दुर्लभ
मंगाए चुकी हो, जायोजाय इरक समाज तेजन केनना
खुदक वज्रे, अनेक यातानामे सदन करी, पक्षमें नामे
न्यायाला पाखड़ोने शुल्का पक्षामा भैरवना भविया हो अने
संकलना मार्जे जननामे होस्याका त्वरीत यतिहो प्रयामा राह दृढ़ हो

એક સમયે નેતૃ સમાજમાં વિદ્વાન്¹ આરો મોટો પણ-
વણો હોય. તેમો નહાવતો શુદ્ધ રીતે પણવામાં અચ્છાઈન
નિવડતા, એવેટે ડેવલ વેસ આત્મ સમાજમાં તેમનું પ્રભા-
સ્થળન નાખ શક્ય. તેમની સાથે અજવો લગ્યો, અને સુવેગી
સાધુવું² શાન અને ચારિશીલા અધ્યાત્મે પૂછ્ય તરીકે
મળ્યો. આજે તેમના ડાટામેહોને આદરે પાપ સ્થળનક
વિરમણ સંસેન અને પંચમાદાનેને પણ અધ્યાત્મોને
ચારી દીખ છે. તેમની વિદ્યા લાલસા-ચરિતાર લાલસા
એટલા હું મંડ છે કે તે માટે હોઈ પણ જાતના કાવાનો,
અનીતિ, ગુણાદ્યાને પણ ખુલ્લે તરીકે મનાવવા અધ્યક્ષાના
નથી. આવી બાપતમાં હોઈ વિદ્યાર્થીનું મુક્ત વિનાયપુર્ણ
પોત્ય સંખાર આપે છે તે સુરીયર સંજાડો પણ મધ્યારદાનનું
ખુલ્લાદા કરતા નજરે પડે છે. તેમો પોતાની લાલસા ડાટા-
વણ જોણા હોકોને હું પાઠ બાંધું અને પ્રયત્ની એવી
છે અને હેવાં આવા વ્યાખ્યા પ્રેરણ કરતારને હેઠાન કર-
વામાં આગી રાખતા નથી, તે માટે મારાનારી કરાયામ, ચોરી
સુધીયી મનુષ હરચું ચ્યાપ, અને જુદ્ધાંશુ યશશીલ, અને તે
ચ્યાપની હુડી કાઢ, અને મુનિ તેને ઉપયોગ કરુંની માણસી-
દ્વારા કરી શકે. આટાથી જાણે કે પૂર્વું ન હોય તેમ ઓ.
આનંદસારણ તેનું નવાજિનું સાંદ્રને સાંભળીનો કૃપા ખેડેરાની,
તેમની સાથે રાખવામાં પણ ખુલ્લે મનાવવા પડકરાનીએ મેદાન
પડતા, વધુની નામે પાપદું વેણુની નામે કશ્યપ લાલસા-ચરિતાર
લાલસા. અને મધ્યારોને હોકોને કંબે યશશીલના પદદા આજે

अटकावना, दिल्लीपो योग्या साधवाना मार्गे पूर्ण नैकुण्ठानो, समरत अंतिमर भूलिपूर्ण केवलोनी अतिनिष्ठि त्रै-एकसमां साथे २३, आयग धेये हे. तुड़कानाकार क सामाजिक रीवालो उपर्युक्त नापवा कागजार्य प्रवत्तने ढंगी रक्खा हे. साथेचासाथ रक्खनात्मक त्रै भांगु शुद्ध धर्मिक अने व्यवहारीकृत दैवतपथी आपवा साधवने उत्पन्ना करवा, तेंन सभागती लालोकालाली पांढी जेववा, आंतरकलेशी घ्ये अवश्यकासाने अद्वैत संग्रहन उत्पन्न उत्पत्त युवक तलांतो भेटेन तडे हे. डेशीधरना कांगांचा फूलव भावावाणीची सरवारी निये डुकीमीना नेता थवा नेन सुखानो आयगाल्या थवा हे. आवाही दीते हेच, धर्म अने धर्माली आकाशीन मार्गे युवकवर्ग आवाहने गरे तर युवती २३, निरुद थारु आयग धेये हे. ते अनुरागना धेयेने अटकावना योतातु अण निरुद्ध वेडी नांगवाने अद्वैत, तेंन सदाप्रथम थवामा तेंन धर्म अने सभावातु उत्पत्त येत्तु हे. काळां डेव जगतामे आवाही कापू माटे उत्पत्ती युवकांनी संभावा नानी होवाने विधी आवाहने आवाहन थवा तो आयगा सभावाना युवक वर्गे तेनी पूर्वे संग्रहन उडी उभा रहेवा तेपार युवु नालोके. आआही मार्गेना धर्मयुक्तवर्गमुळे युवके आकेव फैरी नाहीर फूलवा हे. आवाहने नाय सलवानो युक्तानेनो निष्ठव छे. वी. एम्बे युवक.

રામવિજયજીને 'પડકાર'

ଲ୍ୟାର୍ଡି ମୁଖ୍ୟମନ୍ତ୍ରୀ ଆପଣଙ୍କ ପେତୋଟି ପଳକାଂ ଥିଲୁ ଛେ,
ଲ୍ୟାର୍ଡି ଲାଇଅନ୍ତର୍ନାମ୍ ଲ୍ୟାର୍ଡିକ୍ ଉପର୍ଯ୍ୟ ଶାଖାନା ଏହାଙ୍କ ନିଜେ
ଆମ୍ବାମୋଟମ୍ ଅଜ୍ଞାତି କାତେ ହରୀ ଗେଲ ସମ୍ଭାଗମାଂ ଦେଇ, ଏର
କରାଯଥ, ଏହିଥିରେ ନ ପରାତି ଡେଇନ୍କୁର୍ରକୁ ହେବା ଉପର ହାଥ ନାହିଁ
ଅଥ, ତାଙ୍କ ତେ ଆରୋପି ଅବ୍ୟାକ୍ଷି ଥିଲା ବେଳ ଉତ୍ସାହ, ପୁରୀ ଅନ୍ୟ,
ଯନ୍ତେ ଛେତରେ ସମାଜଦେଖି ଥିଲା.

આટલું આટલું ચાચા છતો આપણે એંગારે વેરવાની ને ખૂબી આધાર પડી છે તે આદતના પરિણામે; અંગારીયાથી લાંબાખાળી વાયસ્પાઠ હિંદુશી દેસની સ્થળતાની લકૃતને આપે વધો કે હો. “આ લાંબાની ગાંધીને પેસાની કે માનવસુધી મદદ કર્યી તે પાય છે કારણ ગાંધી માનવીની જીવી કરવા નાય છે; તેવી આચા આપણેનો યોરીનાં કંદળી ફોર્જ માનવનો આપ કોણ નની.”

આપના આ દેશદોષી ઉપરોક્તાની જેવન સુવર્ણને બગાડે
પરંતુ નથી, તાં આપને પછીયે મળ્યે હો :-

જીએકમાં દેખિલાર માટે બાળપત્રધારી આવકાયે
અનેક હિંસક કુણી કષ્ટો છે, તે દેખા ઉદાર આવકાને આપ
કષ્ટ ફેરિમાં ખોલે છે? તેને હિંસા જણો છો કે નહિ કે આ
તો અદિશાં અને સંચાર પરમયુધ્ધ મંદાસુધુ છે, તેમાં
આપને ચોરી કરું લાગે? તેમ લાગે સાથે તમનું અદ
કાડતોને આદી ન પહેરવાની બાધાઓ પણ આપી રહા છે,
લાગે આ બાધાઓ આપી લા છો? તું તરણીની હંકુથી
પરદાયેલી મુશ્કેલી મન મનમણે અને નેનકારો. ઓઝાની મુખઘણ
ખાલ છે કે કષ્ટ કઠારો, લાગે આ બાધાઓ આપી રહા છે?
મો? નેલાં અમાનના નચાલીલા કુણાને, આ કઠારાત્ર માની
સહૃદ્યુ જેતલો, આને એણે દેખાલો (૩) ને ઉપરે કર
કર્યો છે, તેણી જીજમાં રખે રહણાં જીએકાળમાં જગતસીદ
અન્યોના કુણીથી આપણે લાગાસુધુ પદે છે, તે અસ્થાને ધોઢ
નાપણાને આ જીજને પ્રસંગ આપો છે, એટલે પુલન
મહાત્માજીને જગતનૈયાના ઉદ્ઘાર માટે અદિશાં સુધ
આદ્યું કે, રસૂલેનીએવા કાળી રહે, તે પ્રસ્તુત આપા નંદ-
શાહાનારેલા ઉદ્ઘારને ન સંખાળતી લાગમાં ને જાહેર હોય તે
શિક્ષણસર દેખાયેલ કરતો મણાને પણ કે એ જીએકાળમાં

આ પત્રિકા ડૉ. પી. જોસેલીયાને "સરવરેણ" મિન્ટ્સ પ્રેસ,
માયા પારીલીંગ, મસટાન્ડ અંડ રોડ, માંગલી, મુખાંધ, નાંના ર મધ્ય
જાપી, અને જમનાદાસ અમરસંહ ગાંધીએ મનાલે જિલ્લાંગ,
બી-સેસ કાર્યક્રમ નાંના ર મધ્યથી પ્રકાશ કરી છે.

મુંબઈ જૈન યુવક સંघ પત્રિકા.

तंत्री : जमनादास अभरचंद गांधी.

१५० रुप्यः
१५८ रुप्यम्।

संवत् १९८९ ना चैन सुही १.
दिन ३१-३-३०

{ ସୁଦ୍ଧା ନିକଳି
ଏହି ଅମାରୀ

નોંધ અન ચર્ચા

શાસનપ્રેમી કે કદાચિત્તી ?

શા. સુધ્વબાલ ખુલ્લથી હેઠળ મુનિકો નવાગ્યવિકલપજીના
ઉપરોક્તાની અંગાતમાં યદી કચ્છાઈ અસરથી ગલાચાર લાલ
દેણાયીથી ફ્રાન્ટ ક્રૂઝ છે, તેમાં લેણ છે, ડે-ડેટલાં કાંચ
નામધારીએ પેતાને શાખ જાણ થી મેલાં ન હોયા છતો
શાખાથીની વાતો કરે છે આતલા વાક્યથીજ એ મહાશયના
કુટિલ છલદની અતીત થથી થાપ તેમ છે. વળી નવપદ આરાધક
સમાજને, અંગાતને જાંબે સુરત જન્મું પદ્ધતિ, તે પણ એ
શાખ ને ખર્મના રસ્યાં બની બેટોડા કલાંદરના હોરી, જીવાર-
થીજ એમનો ધર્મપ્રેરણ, અંગાતીએ તો જારી રીતે નહોંગ
છે ન માને પણ છે કે કદાચ ખાનપુરંદી રીધી થાપ છતો
આ ઓક્સરાનું ટેંપલનું સુધેરે નથી. એમની અથે લીલામાં
હિતરનું એ ગર્ભસે જાથી જનાવયાના પ્રયાસ નેતૃનું છે. નિમ્ન
રચિકરણ જગતાની જાજુ માટે છે.

(१) भागदीक्षितेवीर्य तीर्थनि प्रतुषि के, भाग-
दीक्षितो सिवाय तीर्थं वाली शकेन् नहीं, आपु-
मेकांत लभाय वधवुं जे गुं असत्य नथीं ती बरोनिज्ञ
माहाराज द्यावाद मानेना लालूकार आपुं एकांते कहे पछु
अरा ? आरी तो एकांत अर्थं निकों के भागदीक्षितो
सिवायना तीर्थप्रतुषि यशानी कोइ नहि. तो इच्छा ईवी लकड़ी
के पूलम ती सूखमर्स्तामी रखुयीजद्यु, चिक्केन दिवाकरण,
दुर्लभद्युरि जेवायेत्ती तीर्थप्रतावना नथी थहु ? तीर्थ-
प्रतुषि नथी वाली ? ए वापां शुं भागदीक्षितो हता ? अजाग-
दीक्षितेनी संभवा आगल भागदीक्षितेनी संभवा आटामां
वृष भरावर छे, वर्षु सरानी पछी खेडामो सुधी आचार्य
एक खरेप्तामां भागदीक्षित न ढेवा फता तीर्थप्रतुषि केम
केम वाली ही छां वां ? दणो के भागदीक्षितेवी प्रतावना थहु
छे, तेमेने आलनी भाँडक बोरी पुष्पीयी भासाका नथी पदवा;
निशाचरी उत्तरवा नथी चुंबा के लग्न नथी वाजवा पदवा,
ए भाटे हेन्याद्युरि वी. ना दाखला भेजुद्यु हो, एवायेनी
परीक्षा कराना समर्थ नहुइ. ने फिरि हता, आने जेमानीं
ए बाट : शक्ति न होया लां बोरी फेहारी क्षेत्र छे !
ती प्रताविज्ञवण जेवानी बोरी जेने अपेक्षामुक्त वालोंने
पूरी वाजवा वयर देवान घोताने कहडो अरो हठना आगण
धरना ए व्याख्यानी नथीज, एव भक्तापुरपो “साम आर”
वाचे एक्के भाँती रहुहो थहु गहे.

२) 'सुखांगना बीज अध्ययन परवती काशको एम टेलिवा मार्गे छ ड माजापो आशुविकानु' आपन सराजु' चल्न दोप, ने चोबनदंती रुपी भीजने आहारे एमेरा आंखय होय झार्त ले दीक्षाने थोरा ड दीक्षाने लेनार धेर नय तो तो धम्नो असाच्च...समजवा' चोते पुरु समलाला नथी एमटो लभ्यामा जोडायो। करी दीपो छ, एमे आजो। प्रसंग आवेशमा दिल्ला लीधा पडी, परिक्षाम चलाविण्य थता ढोप दोन संह छे; तेथी आष्टु लेठोने एम करारु' जेवा अर्थ' नम निष्ठो, ले एवो अर्थ' क्लासीजे तो खडी दीक्षा 'मारेना निष्ठो—आवडनी घटिमाजो, वलेवार धर्मानु' आपन को अर्ह निर्शेंड निवडे। आद्यकुमार ने नाहियेहु लेवाने छध घटिमासुक्षा को ग्रन थाप धडे।

(3) 'આગવિકણ વગર ખૂબજાણી અનુભવે' નાન ખાળે તો પછું શાખ કર્યા છે' એમને જાણ્યો હો-લાં 'ધરમ ખૂબજાણી' નો અર્થ શાનપૂર્વક નહિં પણ 'વહેચાર' થી જોવે છે, પણ તો પરિસ્થિતીની પારા પર છે, એટેને શાનપૂર્વક ફરતા કાણેની કિંમત વહુ છે. જરૂર 'આજથી કરારી કિંદિયા' ખાલ અછું નથી જરૂરી. આ જાહે પ્રશ્નન્યાં, લક્ષ્યમણું સાખીના દરાન્યાંનો મેલુંદ છે. જાણી જેનાથી પણતું નથી જાતો ઉપરથી આજ રાખ્યી ખૂબા પાણ સેવે છે, જુદ્ધાંપાતા સુખ્યાં કરે છે તે શું પ્રશ્નસનીય છે? અનુભવેનું પાલન સંચોચન વરતું છે પછું તે સમજપૂર્વકનું હોય તો હશે. બાધી રાખેલ અથ જેનું અનુભવે તો સાંખે પદ્ધ નિર્ણયે છે, વહેચારખરમાં ખાયલા પણ તે પછું હિંમ છે; જાણી જેણો આજ રોજે પરિચનનો ને ખૂબા અનાચારો સેવે તે કરૂં ઉધારી રીતે કર્મપણાત, પરિત ઘનાર જોગ હોવિં છે. ખેમનું પાલન બેર ખુલમણી નજી કાઈ શકે, એમાં તે આત્માપદ્યે લોક્ષ્ય.

(४) विचारकों आधिकारिक सभा द्वारा धर्मजननहुने देशसामेंमा
ले अपनी छ, ते भुट लिखिएस्युरि अने हेमेंट्रस्ट्रिक्चर चोते
आधिकारिक लक्ष्यमा कर्पोरेशन लेखेको छ, भारतीयासारीना बीच
यस्तु 'वर्ग'मा जीनो समाजमा यहाँ सही छ; जो हिपरेशन
विचारिकास अने आधिकारिकमा शुद्धस्थैतिक अनोद भाग्यो
प्राप्तिको लक्ष्यी छ, जीवी रपष्ट बातेसे समझनारा तो
अचक्षना पड्दै ज्ञानारा छे यस्तु चैतन्यकी आधिकारिक भाषाको भौतिकता
नैपाठी सुन्नीना शानदाराछ, जात अँडलमार्क सारी छहाँगारे
आणा नाभानायो धर्म'ना नाये असुखाखाला मुख्य सिद्धांतासे
देवकालाह फेक्का आइ पर्यंत जुही नाभानारानी गोनो-
दाक्षार अधिकारिकम छ.

ਮੁਖਦਿਵ ਜੈਨ ਯੁਵਕ ਸੰਘ ਪਤਰਿਕਾ।

पञ्चपात्रो च मे वीरे च द्वेषः कपिलादिश्च ।

बुद्धिमद् वचनं यस्य तस्य कार्यः परिग्रहः ॥

અમદાવાદસ્તરી.

યુગસ્તુષા ગાંધીજ.

ગોધુંના પત્રથે પત્રથે આજે નનિતનાના સુર સંખાળાય છે. તેમના હુક્કે કાપણો આજે રસૂલર વંચાય છે અને જનતાના મેરાં ભાગ માટે એ કશનો વિવિધ વધુ પંથો છે. આમણનો તેમની વાણ્ણે ચેલંબરી વાણ્ણે કોગ આપવામાં પાણી ધાની ફરતાં નથી. ને ડેઝરષ્યુ પાણી પંથું હેઠળ તો તે માત્ર બેનોના ચિવારદોષ. આપ્તમાની અગ્રંત ચિહ્નિતાના અધ્યક્ષાર જાતાં વર્તનમાં કાપોણ કર્યું. અતાવનાર કેનો વીળચાલને છીતર હોમની માર્કેડ કલારીથી અપનાવી શકાના નથી. એમાં કુલીનતા કરતો હિતાની સંઘ વધારે છે. એ સંતના કાંઈકનો આભ્યાસ કર્યું પણ કૃતનું કાણું રહ્યા, બંધું સલ રસ્યા આગર તો આત્મનું આખુટ સલ્ય સમ્માનાનું નથી. એમની સર્જનતા ઇપી ડેઝરના પાયામાં જીનદર્શનના ડેટસાથે સિદ્ધાન્તોના હિડા મુખ્યાં રૈપાયાના હે. એમની વાણ્ણું સકણના મંદાય અભોધીથી હઠીએ તો કેને પંથોના રસ્યાપદો અને ચિવારદોષે ચોંદેશ માર્ગ પરદીજાનું પણ્યા છે. જ્યાં આ વસ્તુઓનિ છે ત્યાં સામા જેનથી એ તરફ કોણાંનિ ડેટલી વઢી રહ્યી રહ્યે ?

આજે જો સંતના આધાર અને પહેલેથી મળી નજર કરી, આપણું લાગે ભાવમાંને વર્તમાનકીયમાં દાખલ થયેલી રિષિતતાએને દૂર કરેલા ડિગ્રી થતું પડ્યો. મણના બગરને સંમાન જોસેશન લેનાર સાથી પણ જોના ડિફરન્ચિયાના ડિફરન્ચિયા યા હુંસીની તરફથીના મેલ અને ડિપાલન સમયના મિશ્ર આધારના રૂપ લઈએ પડ્યો. ખાડી લેલા જાણ અને ખડી-ખચા વલાણી જલાણી લેનારા સારી કદાની ગેખેલા જ્ઞાનો ઝુંબને પણ એં પહોંચાડે તેનું કાર્ય આધારી જાતીયતાના સંપુર્ણ પ્રદાને મેંદું પરિચાદ-સંબંધના નિયમો સુખારના પડ્યો, અરે શરતની ભવભલના સ્નેહ અને જીવું વચ્છેની ભાવા વિશાળી પડ્યો, વિશ્વ પ્રભે અને મુખ્યભક્તિની તત્વોને હંકલી લાદી, સરણ અને સીધી ભાષામાં રણ કરી, જનસમૂહથી જોખ્ય જનની કાંઈપણ વાણીમાં પીરસનાની એની શક્તિ પિણાણના વગર, અરે એનું અનુભૂતેરજુ હર્થી વગર મણી વાતાપારી મણાપુર્યે ના સંદેશાંનો અલુનીયા રહેવાના. ગુણન્નરિધા કે વિલાનિધિનો લાભ પૂર્ણ પણ આમ વર્ણને મળી શકનોં નહિંજ, તો પછી પરમામાં મણીએ હેઠના આધુનિકાનો, તેમના શુદ્ધતમ ઉપરોક્ત ધોરણ તો કાણથી પહોંચવાના હી ‘શાસન સરીશી કરું’ એ તો અભૂતોરજ રહેવાનું છે. તેથીજ નજર આપે જાણી રહેલા કૃપાત્મકાનો તબસ્પર્યી અભ્યાસ કરી સંકાન કરેવા આર્થિના છે.

ન્યાં કુશક સમૃદ્ધાળી આજો એ સાખરમટીના સંત,
ચાઠના સાથા નાયક તરફે નોટ માટી રહી છે ત્યા ઓ,
એનું પુરક, લાચ ગુરુજો સમય આપણે કે ન આપણે,

देशकाण पिछाने डे न पिछाने अने आवेदन तरिके ज्ञान-
आता श्रीमती समझे डे न समझे छां पञ्चलारी इरेल
जैना कंदहाने अक्षरेशः अपावानी लेवानी छे, जैनपर्मार्मा
वीरताना दक्षा-नो हे स्वेहा भ्रतिना वृत्तानो लेखवा ज्ञान
पडे तेज नथी, नर्मा भागाया लेवाये अने वस्तुपाल तेज-
पाल दिसके कुधीयामां भाग लीधानी वाटो विरतारथी लभा-
येती छे, त्वां वाधीक नेवाना अद्वितीय रीते लक्षणारा धर्म-
सुखगां साथ आपावानी वात सामे अवशेष लेपान न राए,
मुक्ति ज्ञावशेषी अे ज्ञाने लक्षणारा डे वात वातमां पाप
हावानारा असे देह पञ्च निरतारथी कहेतु जोधमे डे अे
सामी शिक्षा हेनारा नथी, अस, श्रीरतारथी भक्तायपत्ता पामर
प्रृष्ठो छे, पीठ इवाई कमजोरज्यामायी भाणा इरचाने उपेहा
आपावाना मदापुरुषो छे, जैनत्वे जैनज्यनामां कुवान उद्घाने
जैनी लेश भाव धर्मा न होली लेहुअे, निर्माल्य द्वामां
लहु ज्ञानारा अे जैनपते आमे ते हुतकारी कहारी, वारेने
ज्ञाने एवा रीते कभर कसे, येनी सामे करवाना कामो जटाका
भाषा छे के, नेथी अे संघर्षी वर्यामार्तु प्रवाहानालेप करवातु
अने पापवे तेम नथी।

એને સુરક્ષાભ તો એજ હેલ્પ કે એ કાર્યી રૂપી દિતને હાનિ પડ્યોથતી હોય અગ્રે પૂર્વ નેતાની કીલમાંને ખડકો વાગતો હોય એમાં એ નજ કરો. રાફિક મહાસભાને વદ્ધાર રહેણાનો પ્રતીક સુરક્ષાને ખર્ચ હૈ, એ પાસના કેતો જાતીય લાભોનું બોાગ આપવે પડે તો આજ્ઞાઓ છે.

અધ્યાત્માને નમુને।

સંમયિક્તના અચાલ એવે તારુ રૂપ માર્યાના "સમાચાર" માં જોઈ લાલોપોલબા એટલેખ પ્રમાણ થયો છે. સહીએ કશનારાયેના લાગભાઈ ચંગુલાલ કહેવીની પહેલી શરી છે અને એજો તેમની સોસાધીના પ્રમુખ છે. આ સોસાધીના પ્રમુખ મહાશ્ય લાગભાઈ એટલું માર્યાની લાલારામ હતા; તે તારુ રૂપ માર્યે મુખ્યમાં આવ્યા છે. તેમ કશનારાયં દીરાયં હલેવી પણ લાલારામના હતા, તેમો પણ મણ્ણુરે તારીખ લગભગ મુખ્ય આવ્યા છે. ત્યારે આ કહેવાલા સાસાનપ્રેમી જોડુંનો શા આપારે કંઈ છે કે ગઠારામ મોદાના નથી? કું લાલારામને એટે વાખ્યાન ચાંખાયું? એલાના કહેવાથી લખી નાખ્યું? કે અધિકારીના લીધે પેતના કુરુઝને અચાલાના લાલારામનું પડ્યું?

ଲକ୍ଷ୍ମୀକରେ ତେ ରାମଚିନ୍ଦୁକୁ ଲେଖିଥାଏ ରୂପଟ ପୁଣେବୁ,
ତେ ତେବେଳେ ଜ୍ୟୋତି ଗଭରମଙ୍ଗ ଥିଲ, ଏହିଲେ ମୁଣ୍ଡମାରୀ
ନହିଁ ହେବା ଜାତ ପୋତାର କହେବାତା ଯେତେବେ ପୋତୀ ରିତେ ଆଶ୍ରମ
କରସା ଅଛିଲେ ବାହାର ପଢ଼ି ପଢ଼ିବୁ; ଯା ଫଳୁ କିମ୍ବାଖାଗେ ନମୁନେ,
ମୁଣି ରାମଚିନ୍ଦୁକଣ୍ଠ । ନିରେନା ପ୍ରେମେନା ଜ୍ୟୋତି ଆଶ୍ରମ
ଦେଖି ଦେଖି ।

१ परदेशी कापुड़ लेना भट्ट बीजने वलायि रहेता
कृति शुभ्र कपड़ा हेम नथी भहेता।

२ अपना कातेला पुष्टाथी कहाय मानी कठबे
के तमे नथी जोला तो तमारा कातेलाथी कैर्प पूजा आये
के वा शिव्य लडतामो भद्रारे तन, मन, अने धनथी सेव
कर्नी हो तो अप दूँ जाल आपसी ।

भुनि रामविजयने खुल्लो पत्र.

भुनि रामविजयलनी सेवामां—

जप्तुने-द आश वस्त्रवाटु^१ के, जैन समाजमां छावमां बाली रहेव विषय नाटक देखी, लाग्युवाला जैन अने जैनेपर, जैने भुलुव घोट थाय हो. जैन चुधी जैन सखुमों तरड़ जाया लागी अने यानिता उचासक तरीके अन्य धर्मियोंने पथु घुलु गाल छुटु. गुरुरातना एक प्रधर विहार, सुखारड़ अने जप्तालादर आज्ञायु व्यक्तियों नालु यार इन्हां जाखुमनी प्रयोग समां उपचायु^२ छुटु के “आजे जाखुमने सुखुचु यारी सुखां छे, अने तेवायि आज्ञायोंने तो मालु सुखु छे. छुटु पथु क्षये साया लागी आखुमोना दर्दन यारी होय तो जैन सखुमोन छे.” या शब्दों आजे क्षये ते आहाने यार वर्षे देखवा घडे तो नवाच नज रहेवाप। आपवा समाजमां बाली रहेवी जालालाय, अने अंदर अंदरना कम्हे, आजे जैनेली धर्मवयसा लुकावी नांधी, अन्य समाजमां इवां पाठवाटु^३ ऐरी जाम करवा भाँडु^४ के! आजे जैनधर्म अन्य धर्मियोंनी दीकाली जाग्युमों यालाच रहेवो छे. रेल येण अने तो जैने उपर लभी शहे छे. वैष्णव जैसांठमोनी धरमां छाला रहे तेवी रियति जैन धर्मियोंनी यालाच रहेवो छे. आजे यापनो-मीढ अने अस्तिष्ठाना, सलासत जेवा देवा नाथी.

आजे वार्तु^५ विश्व लाणा रहेवु^६ हे-अहिंसावाही जैनेमां भानुसिंह दिखाने प्रयोग हावानां सागां उडेले कि-शारिरिक दिखाना उद्योग लेवानारां प्रश्नजों पथु जाना रहेवा छे ते सो आपे अद्यु^७ होइ. केवालाल सुनशीली जैन भत उपरनी कडी दीड, जमोरी जैरभव वात, अने अन्य गप्तना लकीजाओने अवता शारी देवानी इयु इक्षु इक्षु अर्ही होय तेव अत्यरि आपले कडी रहेवा अहो!

आ रियती वस्त्राटु^८ करेवु^९ हेता जप्तालादर डोलु^{१०} हा प्रेम विचारा लेवो छे. अने तो लागे छे कि, “जमानानी जडीरीआत अने नाड तपास्या वीना पुराणो, लोख वजर विचारे, करवायीज आ परिष्वाम आन्यु^{११} हे! जैनार शाळना अक्षरोने समजेक छे, शाळना तुक्कने नहि. जैनार परपृष्ठारोने नहि. आयोजों शाळ दांवामा, समयनी इत्तीजाता वाची नाथी-तेथीज आ परिष्वाम आन्यु^{१२} हे. समये शाळ अने शाळांरोने सरक्का छे-माटे समय देखी. मेझो छे-वे शुद्धो आखुता थाल लाय तो जैदर जैन धर्म विक्षेप अन-धर्मना अवधारो न थाय हो. ते चोक्स छे, धर्मियोंनो शास्त्र अपने समय अनेने साथे आखुवा जैदरना छे!

* * *

आपनो जोप आखुमां जोप हो. वैराग्यदा ए आपना जेवाटु^{१३} लक्ष्य हो-अने आ लक्ष्य आपी आटे-न्यायपूर्वक शीर्षोने जैवे पर्यावरण ताली अपने आप एक शाळनाम नाहने आपारे जिलंगवादर डोले छे-अवधार आपने आ नहि समलय-हुनीजा, विचारेवां आपम आपे समझे छे. आपनी आपानी भूरुरी-भूरुरी, अमुक अमुक व्यक्तियोंमे परीक्षरा आपेक्षमां आपी नहि जैन लागो; तेजोना समाजाना दीव दुक्षाया अने ते लक्ष्य विजेती

धर्मविवाही करवा और आन्यु^{१४} आमांधी योके जैनेपेटन जैनलना भज्यातु मुण छे. समाजानी परिविवाही अने यारी वजेवाप्ती लालाचा अना, दण्डु छह जंगी नाथी.

आपे आपनी जेक आखुचु अरिष्वाम लेयु छे जैन भीजु भौतिकी परंपरा आखु राखी, अछलना आपणा धर्म-वेदा भावुकोले धनयी, लागवयी, गर्वने डारवे आपने भद्र की भौति करवाटु^{१५} ग्रीष्माहन आपा कुर्सी, ते जैवेरेटु^{१६} देखी भेडु^{१७} डारु छे। अंसात, आमाचावाह विजेताना जनावा आपे, देखो दहि समझ राखवा ह अमनजरमां योद्धा सागर सुरीनी दालदाली, देखो याह अर्ने अविष्टु^{१८} परम्पुर अर्वातु^{१९} आपने भाटे डिटक्टर छे.

आपने दीक्षा आपी चेक्का वधारवागे भेड लाग्यो छे. आप योते चेक्का आरामां वसता हो. तेम भानाने जैततो पथु तेव-आरामा भानुपीयो छुप्पीने योह डरो छो ते अव छे। आ कार्यमा वैराग्यदा नाथी, वैराग्यदा नाथी, ने ज्ञा उम उत्तरो ते सुमनयी, अखुमोने साखुमो भत्तावीने आप भुक्ति भेण्यवा भागता तुर्या ते ते वातामां पकु इर्ह यारे नाथी, करूङ्कु के आपना, चेक्का तेनां समाजेनां देहीयी तरफेण अहने आपेहो ते सैना आप आपने आह अशी?

त्यां लां धरना जेहा नाचे नेम तेम डेही भेसावी^{२०} लुका विचारना जैला अने नक्काहोने तच्च आस्यासता संजेतोनो विचार, करवानी तहीवी न देता “आणा वाढाम् भगवान्” भानवालाना आवोने भामयो छो, तेम लवे तुवो विचारकान सुख नहि आपात ते जन्मा लेम छे अने देखां डेमना डेलहो रहेवी,

जैनार आपी जेवाटु^{२१} भानम जैलवु^{२२} डे-जैवन पत्तक्यां छे. अद्यत्यन इवाच अरो छे, त्यां देखी उद्दो भेप डेम यावे? जैततु^{२३} (जैतते जैनानां इमेलु^{२४} लाग्यु^{२५} हो) देख्यु^{२६} क्षु^{२७} छे अने इक तच्च लुक्कां यारभी योहो. अगाह धर्मां योह देवा इंसो योह अद्यायी जवानी भेवाना. आजे इंस तेम नाथी, रेह योताना जैनानी कडीरीआतो विचार कडी भार्ग नक्की दहे छे, त्यां ते डेइनी पकु इप्पायारी शही राक्तो नाथी, जेत्ती दह सुधी देवातंगो अपाल जैनानामा आपी योहो. भत्तुप्पलु^{२८} भांधी विशेष धर्मनी तालायेली लुप्ती गाई छे-सामान्य भत्तुप्पलु^{२९} सौ इक्के छे. तेवा जैनानामा आहयो अने अमयने प्रतिकूल योह आप या भाटे डरो छो? आप जैनानी तासीर नाथी नेह राक्तो? जेता हो तो डेम वर्ती राक्तो नाथी? आप शम्भ, संजेत अने शहिनो विचार कडी मुक्ते अतुरो तेम सौ आटे हुँचे छे! आमां आपतु जेतप छे।

धर्मदृष्टियो जेता पकु आपतु अत्यारु^{३०} धर्म तदन वाताविक तो नाथीज.

दीक्षानो अधिकार जनावा भारेज दीक्षाना प्रकारे शाळामां वर्षाव्या छे ते भाटे वय, काल अने परिक्षानो पथु विचार करवाना आप्यो छे, आ नाथी अधिकारीनी वातो आपे कडी चैरी युपीदीयी युपावी राखेव, दीक्षाना गजाह उभेवारने समलया छे-पास्काना संतानोने आपा आपावी-स्वर्गी सर इवानी पामर वृत्तिवाणा

શાસન પ્રેરણી ! કંનના યુલાયાને સમજાવી છે ! અગાર તો ચુકું આસન-પિતા મહાવીરની પવિત્ર આરીએ જેસીને આપે કરી વિચારી છે ?—બીજાને ભાવાં ભાવોને પહેલાં તેના લાયકાત તપાસો, રહિત તપાસો, થથ તપાસો, આસપાસના તેના લંગોનો તપાસો, વિચાર કરવાની સુદૂર આપો, અને તેની લાગ રહિતની કોણી કરી જોઈએ આમારી જૈની આપને વિનંતી છે ! કાખળાં ડોઢ અપાદ હોય તો તે સર્વ રથોને સૌને ગાડે ન લાય પડે—એવી વાતો શાસના આવાજેન શક્ય ન બનાવી શક્યા, અનુભૂતનાને સંભેગના પ્રમાણે પણ કોઈઓ—શાશ્વત અનુભૂતિની અનુભૂતન પૈણી છે—પણ સમાજ ઉપર તેના કાળજીમાં જલાવેલી અચલાયતનાની ગેઝ નથી ! શાશ્વતને યુગદાય છે, ભાગી અતાવી હેઠાચા અનુભૂતિએ, સમાજ ઉપર બેચાઉલા જલીમ મોસન નથી,

ધર્મો આર સંપ. સાહુ, અખાન, આવર, આવિકાને ધર્મના રથોની કોણ જાયા છે. આરેને નિર્ભયે નોંધ મનાયા છે, એટલે આવકષદ એઠી કીમતતુ રાનીઓએ નહોંતું આંકડું ! પ્રયેડ રાનીએ પાસે—ધર્મદુરધર સાહુએ પાસે, આવ-ડેના માન અને પ્રતિશ હતા, તો આજે આપ સુંદર આવડો અનવાનો એથ કરો, આજે આપ સંસ્કરી સાહુએ જનમાંની કંસારભાઈ સાહુની શાખા કર્યાની સમજને સાચા ગુહસ્થ—ગુહસ્થી આપી સમાજની મહાત્મા વધારો ! તેમાં તમારી, ધર્મના અને હેઠાળન અનુભૂત સૈની શેખા છે, જ્યારે તેઓને ત્યાગની તાલીવેલી લાગશે, ત્યારે કંઈ રતમારી રોધનાં નીકળશે, ભાગી આજે તમે રિંગેની શાખ કરવાનું, અરીવાનું—કોરસાનું એટી હો !

શાહુએના પરસ્પી જીવિત, તેણાં જન-માનાં આપ કુઠ નહીં કરી શકો ! અત્યારે સાહુએના ભાવાં અને ભીજારીઓના સંપત્તા આરતને આરે પડે છે, તાં વીજા વધારે પરાવિત કાંકાણોને વધારો કરી આપ કરો ગઈ જીતના માગો છો ! કરું રહ્યાનું દાર દાય કરવાની સુરાદ છે ? પણતાને અચાની હો, આખને કે દે દાય હો, ધર્મને વિદેશ કરી હો તેવા સાહુએ રથોનું અનતરશે, તમારા એપદ્ધતી કાંઈ નહીં વણે ! તે ગુરૂદાન માબકાગલાયાને લેખાયીન જણ્યાને, જેનને આપા ભીજારી શુદ્ધાંના નથી જોઈતા—અચા સાહુએ જેસું હો, તે આપને યાદ આપવાની જરૂર નથી હોય !

આપે અત્યાર શુદ્ધીનાં સુદૂરલાયાની પરીક્ષા કરીન હો, ધ્રાક્ષણીં ઉપવિત, સંસાર કરવાની વધતે એક અક્ષર પણ ન અભ્યાસ, અંશી જાણાની વાત ઉચ્ચારી આપે છે અને જનોધ પહેલાં વખતેજ પરબુનાર અભ્યાસી જીવન પણે છે, તે ખુલ્લું આજે નાટકના દુરધ લેવું હાસ્પાસદ લાગે છે, તેવું આપના દીક્ષાના ઉમેદવારાનું સંમજું !

આપને આનીપૂર્વીં કરું હું કે—

કોઈ આપની ભાવાની જાહુદ અચારી ક્ષણિક વેરાજ પાગને આવા હોય !—કોઈ સંસારી તરીકે રહેવાની જોતાની અક્ષકીને કારણે આવા હોય—એપણે સંસારનો કલદ જાણો હોય—દેખો દ્વારાના હોય, પેટ અરથાત પાપળા થયા હોય—ત્યારે કોઈ આવા હોય, તે કોઈ અતી ન્યાય નિર-

કુશ આનપાનાદિ વિશેરેણું સુધુ જોગવાના અને પૂણીયા માટે આવન્યા હુસે, ધર્મની આનર ધર્મ માની હંદુના દેખ્યો ભાગે ડોઢ દેખવા હુસે ! તે હંદુનો દેખે દેખાય તે તો આપનો પણ ચુકું જાની જેસે !

બેનું મન પ્રમાણું સાહુએ જ્યારે ધર્મથી લારે સંસારી શક્તિના હોય અને સમાજ તેનો સ્વીકાર કરવા તેણાર હોય તો અલારીની સાહુના પ્રાણજીવને છે. આપણા સમાજમાં સાહુ અને સંસારી વચ્ચે અધ્યક્ષર દીવાસો રચી નાંખવાનાં આવી છે, તેથી જ્યારે સાહુને સાહુના નિભાવવી આંકડી પડે છે ત્યારે તેને-ત્યારો ને ત્યાં રહી હુસ્યા મુખ્ય પાપો કરી જીવન નાથ કરસુંજ પડે છે. આજાગના જગતનાંની પણ આમજન હુસે, પરન્યું તે વધતે અનન્યાનું જેવો અનુભૂતની વાતાવરણ તેવું હતું. આજે આંખું વાતાવરણ જાહુદ સયું છુ-સાહુએ સમાજ અને સાહુની સંસ્ક્રાન્તિની દીવાસો હું કરસી શકના હોય તો જરૂર સાહુના પાણી શક્તિનો-દીવાસુદૂલ ! આ બનશે ?

આપે જમાવેલા રિયેના ધારીઓને નેંદ્ર જીવની આવની છીની પુયાની હુસે ! આપણી જેણું અને મૃહિતા ઉપર આપ પોતે બારી બારી જતા હુસે ! આપે શાસનાંના ફરદુની રાખ્યો તેમ આપને લગ્ની જીવું હુસ્યુ-પણ જો ! ગુહરાજ મારા ! જોકું માનને કે તે જીં જીમારી પ્રગતિની પણ કાંઈ નોંધનારું નહીંદું. આદિમક ફલાયાની જાપના જુસાઈ જશે—આપે સાહુની સાહુના હુસ્યા હુસે ન હતી થશે, ધર્મની ક્ષમિત થશે, લારે પોક મુકીને રહતાં પણ પાર નહિંજ આવે !

ખુલ્લું જાગતનાની વાતો કરવા જતાં સત્તા જોગવનાની જગતી લગ્ની હાગ્ની છે. જી રીતે હુલ્લું આપ આવા રિષ્યા પણ અની રાહો તેવી ત્યાગવુંનિ, નાનાતા, દીક્ષાદૂધિ, અંશીરતા, વિશ્વાસી અને ચોભયતા પ્રાપ્ત કરી શક્યા નથી, ત્યાં તો શુદ્ધપ્રેર ચઠી એસાનાની જહુતાકાંદ્ધા કયાંથી જન્મની ! જી ગુરૂપદની ઉત્તાપણ આપને નીચે ગયાની હુસે, આપણું નૈતિક પતન થશે; જેનત્વનો ઉંઠો છુંડો ઉત્પન્ન રેખે દેખી નીચે ઉત્તરી જશે તે આપે સમજું હેલું.

(અંધુ)

શી. ‘ત્યાગીનો રાગી.’

ઃ લાગ્યમ ૩:

વાર્ષિક (ર. અ થારે) રૂ. ૨-૦-૦

સંઘના (શાનિક) સંક્ષેપી માટે રૂ. ૧-૦-૦

આ પરિવાર લ. પી. જોયસિયાને “રંગદાસ” પ્રિન્ટિંગ પ્રેસ, જામા પીલીલીં, મરણાદ પંદર રેલ, માધવી, મુંનાદ, નાંદ ર મધે જાપી, અને જગતનાંદાસ અમરાચંહ જાથીને મનહૂર જિલ્લીં, પ્રોન્સેસ સ્ટ્રીટ, મુંબઈ નાંદ ર મધેમાં પ્રસિદ્ધ કરી છે.